दुनिया के मजदूरो, एक हो!

सर्वहारा अधिनायकत्व, जिन्दाबाद!

राजसत्ता और क्रान्ति

(महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के कुछ दस्तावेज)

अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशन

राजसत्ता और क्रान्ति

(महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के कुछ दस्तावेज)

प्रकाशक : अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशन
द्वारा मोहम्मद हनीफ
313, लद्धावाला
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

मूल्य : 25/-

विजयपाल सिंह द्वारा डिजाइनो ग्राफिक, बी 116, न्यू अशोक नगर, दिल्ली 96 से लेज़र कम्पोजिंग करवाकर कैपिटल ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से मुद्रित और अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशन की ओर से प्रकाशित।

इस पुस्तिका में पांच रचनाएं सम्मिलित हैं:

प्रथम: ***"चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रस्तुत रिपोर्ट"*** (1 अप्रैल 1969 को प्रस्तुत और 14 अप्रैल को स्वीकृत), जो विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेकिङ द्वारा 1969 में हिन्दी में प्रकाशित हुई है।

द्वितीय: ***"सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय अमर रहे—पेरिस कम्यून की शतवार्षिक जयन्ती की स्मृति में"***—"रनमिन रपाओ", "हुङछी" और "च्येफाङच्युन पाओ" के सम्पादकीय विभागों द्वारा 18 मार्च 1971 को लिखी गयी और विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह पेकिङ द्वारा 1971 में हिन्दी में प्रकाशित।

तृतीय: ***"महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला,"*** 8 अगस्त 1966 को स्वीकृत और विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेकिङ द्वारा 1967 में हिन्दी में प्रकाशित।

चतुर्थ: ***"महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति अमर रहे,"*** "हुङछी" (लाल झण्डा) का अंक-8, 1966 का सम्पादकीय जो विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेकिङ द्वारा 1967 में हिन्दी में प्रकाशित हुआ।

पंचम: "एक युगान्तरकारी दस्तावेज–"सरकुलर" के प्रकाशन की दूसरी जयन्ती के उपलक्ष में"–"रनमिन रपाओ", "हुडच्छी" और च्येफाङच्युन पाओ" के सम्पादकीय विभागों द्वारा 17 मई 1968 को लिखा गया लेख जो विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह पेकिङ द्वारा 1969 में प्रकाशित हुआ है।

इन रचनाओं को फ्रेडरिक एंगेल्स की पुस्तक **"परिवार, निजी सम्पत्ति और राज्य की उत्पत्ति"** तथा लेनिन की पुस्तिका **"राजसत्ता और क्रान्ति"** के साथ मिलाकर पढ़ने पर राज्य और क्रान्ति के बारे में सर्वहारा विचार और क्रान्ति की एक सही एवं सम्पूर्ण समझदारी हासिल होती है।

पाठकों की प्रतिक्रिया जानने के लिए हम सदैव उत्सुक हैं।

-प्रकाशक

विषय सूची

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रस्तुत रिपोर्ट 1

1. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की तैयारियों के बारे में 3
2. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की प्रक्रिया के बारे में 16
3. संघर्ष–आलोचना व खण्डन–रूपान्तर का काम संजीदगी के साथ बखूबी सम्पन्न करने के बारे में 24
4. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की नीतियों के बारे में 29
5. हमारे देश में क्रान्ति की आखिरी विजय के बारे में 35
6. पार्टी को सुदृढ़ बनाने और उसका निर्माण करने के बारे में 36
7. विदेशों के साथ हमारे देश के सम्बन्धों के बारे में 42
8. और अधिक महान विजय प्राप्त करने के लिए समूची पार्टी, सारे देश की जनता, एक हो 54

सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय अमर रहे – पेरिस कम्यून की शतवार्षिक जयन्ती की स्मृति में 57

1. पेरिस कम्यून के सिद्धान्त शाश्वत हैं 61
2. क्रान्तिकारी जनता द्वारा बन्दूक को अपने अधिकार में रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है 65
3. क्रान्ति लाखों-करोड़ों जन-समुदाय का कार्य है 69
4. एक सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी का होना जरूरी है 74
5. आधुनिक संशोधनवादी पेरिस कम्यून के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों के गद्दार हैं 79
6. सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने पर डटे रहो, तथा और बड़ी विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करो 84

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला 93
1. समाजवादी क्रान्ति की एक नयी मंजिल 95
2. मुख्य धारा और टेढ़ेमेढ़े रास्ते 96
3. साहस को सर्वोपरि रक्खो और निर्भीकता के साथ आम जनता को जागृत करो 97
4. आन्दोलन के दौरान आम जनता को खुद शिक्षित होने दो 99
5. पार्टी की कार्यदिशा को दृढ़तापूर्वक कार्यान्वित करो 100
6. जनता के बीच के अन्तर्विरोधों को सही ढंग से हल किया जाय 101
7. उन लोगों से सावधान रहो जो क्रान्तिकारी आम जनता को "क्रान्ति विरोधी" कहकर कलंकित करते हैं 102
8. कार्यकर्ताओं का सवाल 103
9. सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुप, सांस्कृतिक क्रान्तिकारी कमेटियां और सांस्कृतिक क्रान्तिकारी प्रतिनिधि-सभाएं 104
10. शिक्षा व्यवस्था में सुधार 105
11. समाचारपत्रों में नाम लेकर आलोचना करने का सवाल 106
12. वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और स्टाफ के साधारण कर्मचारियों के प्रति नीति 107
13. शहरों और देहातों में इस क्रान्ति को समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन के साथ मिलाने की व्यवस्था करने का सवाल 107
14. क्रान्ति को दृढ़ता से चलाओ और उत्पादन कार्य को बढ़ावा दो 108
15. सशस्त्र सेनाएं 109
16. माओ त्सेतुङ के विचार, महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में हमारे पथ प्रदर्शक हैं 109

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति अमर रहे 111

एक युगान्तरकारी दस्तावेज- "सरकुलर" के प्रकाशन की दूसरी जयन्ती के उपलक्ष में 135

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रस्तुत रिपोर्ट

(1 अप्रैल 1969 को प्रस्तुत और 14 अप्रैल को स्वीकृत)

कामरेडो!

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस एक ऐसी कांग्रेस है जो हमारी पार्टी के इतिहास पर गहन व दूरगामी प्रभाव डालेगी।

हमारी यह कांग्रेस एक ऐसे मौके पर आयोजित हुई है, जबकि महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, जिसका सूत्रपात खुद अध्यक्ष माओ ने किया है और जिसका नेतृत्व भी वे खुद ही कर रहे हैं, में महान विजय प्राप्त हो चुकी है। इस महान क्रान्तिकारी तूफान ने बुर्जुआ हेडक्वार्टर को, जिसका सरगना गद्दार, दुश्मन-एजेन्ट और स्कैब ल्यू शाओ-ची था, नेस्तनाबूद करके रख दिया है, पार्टी में उन मुट्ठीभर गद्दारों, जासूसों और अपने आप को न सुधारने पर अड़े पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों की कलई खोलकर रख दी है, जिन सबका सर्वप्रमुख प्रतिनिधि ल्यू शाओ-ची है, और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने के उनके षड़यन्त्र को धूल में मिलाकर रख दिया है; इस तूफान ने हमारे देश के सर्वहारा अधिनायकत्व को बेहद मजबूत बना दिया है, हमारी पार्टी को बहुत ज्यादा सुदृढ़ कर दिया है, तथा इस प्रकार राजनीतिक, विचारधारात्मक, और संगठनात्मक तौर पर इस कांग्रेस के लिए पर्याप्त स्थितियां तैयार कर दी हैं।

1. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की तैयारियों के बारे में

हमारे देश की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति बड़े पैमाने की एक असली सर्वहारा क्रान्ति है।

अध्यक्ष माओ ने सरल और साफ-साफ भाषा में इस महान क्रान्ति की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है: **''मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने, पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम करने और समाजवाद का निर्माण करने के लिए निहायत जरूरी है और अत्यन्त समयानुकूल है।''** अध्यक्ष माओ के इस वैज्ञानिक निष्कर्ष को पूरी तरह समझने के लिए यह जरूरी है कि, हम सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने के बारे में

अध्यक्ष माओ के सिद्धान्त को गहराई से जान लें।

पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के समाप्त होने के कुछ समय बाद ही, 1957 में, अध्यक्ष माओ ने "जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में" शीर्षक अपनी महान रचना पेश की। "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में रिपोर्ट" के बाद उन्होंने एक कदम और आगे बढ़कर अपनी इस महान रचना में चौतरफा रूप से सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थिति में अन्तरविरोधों, वर्गों और वर्ग-संघर्ष के अस्तित्व पर प्रकाश डाला है। समाजवादी समाज में हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध तथा जनता के बीच के अन्तरविरोध, इन दोनों भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्तरविरोधों के अस्तित्व की स्थापना पेश की है, तथा सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने के बारे में महान सिद्धान्त पेश किया है। इस महान रचना ने एक बेहद रोशन प्रकाश स्तम्भ की तरह हमारे देश की समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण के रास्ते पर रोशनी फैला दी है, और मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के लिए सैद्धान्तिक आधार भी कायम कर दिया है।

अध्यक्ष माओ के महान ऐतिहासिक योगदान को और ज्यादा गहराई के साथ समझने के लिए यह जरूरी है कि अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के ऐतिहासिक अनुभव का सरसरी तौर पर सिंहावलोकन किया जाए।

1852 में मार्क्स ने यह कहा था: "**मुझसे बहुत पहले ही बुर्जुआ इतिहासकारों ने वर्गों के बीच के इस संघर्ष के ऐतिहासिक विकास का वर्णन किया था, और बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों ने वर्गों के आर्थिक रचना विधान का विश्लेषण किया था। मैंने जो नया काम किया, वह यह साबित करना था: (1) कि वर्गों का अस्तित्व केवल उत्पादन के विकास की विशेष ऐतिहासिक अवस्थाओं से ही सम्बन्धित है; (2) कि वर्ग-संघर्ष अनिवार्य रूप से सर्वहारा अधिनायकत्व को जन्म देता है; (3) कि यह अधिनायकत्व खुद भी केवल तमाम वर्गों के उन्मूलन की स्थिति में और एक वर्गविहीन समाज में संक्रमण का दौर है।**" ("मार्क्स और एंगेल्स के चुनिंदा पत्र", चीनी संस्करण, पृष्ठ 63)

सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में मार्क्स के सिद्धान्त ने वैज्ञानिक समाजवाद के तथा कल्पनावादी समाजवाद व तरह तरह के नकली समाजवाद के बीच एक स्पष्ट लाइन खींच दी है। सर्वहारा अधिनायकत्व के सिद्धान्त के लिए और इस सिद्धान्त को अमली जामा पहनाने के लिए मार्क्स और एंगेल्स जिन्दगी भर संघर्ष करते रहे थे।

मार्क्स और एंगेल्स का देहान्त होने के बाद, दूसरी इन्टरनेशनल की, लेनिन के नेतृत्व में चलने वाली बोलशेविक पार्टी को छोड़कर, तमाम पार्टियां मार्क्सवाद से विश्वासघात कर बैठीं। लेनिन ने दूसरी इंटरनेशनल के संशोधनवादियों के खिलाफ संघर्ष करने में मार्क्सवाद को विरासत के रूप में ग्रहण किया, उसकी रक्षा की और उसका विकास किया। संघर्ष का केन्द्र-बिन्दु सर्वहारा अधिनायकत्व का सवाल ही था। लेनिन ने पुराने संशोधनवादियों की कड़ी निन्दा करते समय बार-बार यह कहा था: "**जो लोग केवल वर्ग संघर्ष को मानते हैं, वे अभी तक मार्क्सवादी नहीं बने हैं।... मार्क्सवादी केवल वही है जो वर्ग-संघर्ष को मानने के साथ-साथ सर्वहारा अधिनायकत्व को भी मानता हो।**" ("लेनिन ग्रन्थावली", चीनी संस्करण, ग्रन्थ 25, पृष्ठ 399)

लेनिन ने महान समाजवादी अक्तूबर क्रान्ति की विजय प्राप्त करने और प्रथम समाजवादी देश कायम करने में रूसी सर्वहारा वर्ग का नेतृत्व किया था। सर्वहारा अधिनायकत्व का नेतृत्व करने में अपने महान क्रान्तिकारी व्यवहार के आधार पर लेनिन ने पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के खतरे और वर्ग-संघर्ष की दीर्घकालीनता को देख लिया था: "**पूंजीवाद से कम्युनिज्म तक संक्रमण का एक पूरा ऐतिहासिक काल विद्यमान रहता है। जब तक यह काल समाप्त नहीं हो जाता, तब तक शोषक अनिवार्य रूप से पुनर्स्थापना की आशा लगाए बैठे रहते हैं और इस आशा को साकार करने के लिए पुनर्स्थापना की कोशिश भी करते हैं।**" ("लेनिन ग्रन्थावली", चीनी संस्करण, ग्रन्थ 28, पृष्ठ 235)

लेनिन ने कहा था: "**पूंजीपति वर्ग का प्रतिरोध उसका तख्ता उलट दिए जाने के परिणामस्वरूप (चाहे केवल एक ही देश में क्यों न हो), दस गुना ज्यादा बढ़ जाता है।' और उसकी मजबूती न केवल**

अन्तरराष्ट्रीय पूंजी की शक्ति में और उसके अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्कों की शक्ति व स्थायित्व में निहित होती है, बल्कि आदतों की शक्ति और छोटे पैमाने के उत्पादन की शक्ति में भी निहित होती है। दुर्भाग्यवश, छोटे पैमाने का उत्पादन दुनिया में अब भी काफी फैला हुआ है, और छोटे पैमाने का उत्पादन लगातार, प्रति दिन, प्रति घण्टा, स्वत:स्फूर्त रूप से और व्यापक पैमाने पर पूंजीवाद को तथा पूंजीपति वर्ग को जन्म देता रहता है''। लेनिन ने यह निष्कर्ष निकाला था: **''इन सब कारणों से सर्वहारा अधिनायकत्व को लागू करना जरूरी हो जाता है।''** (''लेनिन ग्रन्थावली'', चीनी संस्करण, ग्रन्थ 31, पृष्ठ 6)

लेनिन ने यह भी बताया था कि **''नए बुर्जुआ'' ''हमारे सोवियत सरकारी कर्मचारियों में से पैदा''** हो रहे हैं। (''लेनिन ग्रन्थावली'', चीनी संस्करण, ग्रन्थ 29, पृष्ठ 162)

लेनिन ने यह बताया था कि पूंजीवाद की पुनर्स्थापना का खतरा पूंजीवादी घेरेबन्दी से भी पैदा होता है: साम्राज्यवादी देश **''जैसा कि वे खुद ही कहते हैं, सशस्त्र हस्तक्षेप करने, यानी सोवियत राजसत्ता का गला घोंटने का कोई एक मौका भी हाथ से नहीं जाने देंगे।''** (''लेनिन ग्रन्थावली'', चीनी संस्करण, ग्रन्थ 31, पृष्ठ 423)

सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट ने लेनिन की इन शानदार शिक्षाओं से पूरी तरह विश्वासघात किया है। ख्रुश्चेव से लेकर ब्रेजनेव जैसे लोगों तक सबके सब पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ता-धर्ता लोग हैं, जिन्होंने पहले से ही सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर अपने आप को छिपा रखा था। सत्तारूढ़ होते ही उन्होंने पूंजीपति वर्ग की **''पुनर्स्थापना की आशा''** को **''पुनर्स्थापना की कोशिश''** में बदल दिया, लेनिन और स्तालिन की पार्टी के नेतृत्व को हथिया लिया, और दुनिया के प्रथम सर्वहारा अधिनायकत्व वाले देश को ''शान्तिपूर्ण विकास'' के जरिए फासिस्ट बुर्जुआ अधिनायकत्व वाले एक अन्धकारमय देश में बदल दिया।

अध्यक्ष माओ ने आधुनिक संशोधनवाद, जिसका केन्द्र सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट है, के खिलाफ जैसे को तैसा संघर्ष किया है, तथा सर्वहारा क्रान्ति और सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी

सिद्धान्त को विरासत के रूप में ग्रहण किया है, उसकी रक्षा की है और उसका विकास किया है। अध्यक्ष माओ ने सर्वांगीण रूप में सर्वहारा अधिनायकत्व के सकारात्मक और नकारात्मक ऐतिहासिक अनुभवों का निचोड़ निकाला, और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम के लिए सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने का सिद्धान्त पेश किया।

चीनी क्रान्ति के नव-जनवादी क्रान्ति से समाजवादी क्रान्ति में परिवर्तित होने की पूर्ववेला में, यानी मार्च 1949 में, अध्यक्ष माओ ने पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में प्रस्तुत रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से यह बताया था कि सर्वहारा वर्ग द्वारा सारे देश की राजसत्ता छीनने के बाद, देश में मुख्य अन्तरविरोध **''मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध''** होगा। संघर्ष का केन्द्र फिर भी राजनीतिक सत्ता का सवाल ही रहेगा। अध्यक्ष माओ ने हमें खास तौर पर यह ताकीद की: **''बन्दूकधारी दुश्मनों को नेस्तनाबूद कर दिए जाने के बाद, बन्दूकरहित दुश्मन फिर भी मौजूद रहेंगे, वे निश्चय ही जान की बाजी लगाकर हमारे खिलाफ संघर्ष करेंगे, हमें इन दुश्मनों को नजरअन्दाज हरगिज नहीं करना चाहिए। अगर इस समय हम इस सवाल को इस तरह नहीं उठाते और इसे नहीं समझते, तो हम बहुत गम्भीर गलतियां कर बैठेंगे।''** अध्यक्ष माओ ने इस बात का दूरदर्शन किया कि सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना होने के बाद सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष दीर्घकालीन और पेचीदा होगा, और उन्होंने सारी पार्टी के सामने राजनीतिक, विचारधारात्मक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनयिक क्षेत्रों में साम्राज्यवाद, क्वोमिनताङ और पूंजीपति वर्ग के खिलाफ संघर्ष करने का जुझारू कार्य पेश किया।

हमारी पार्टी ने अपनी सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन के फैसले के अनुसार तथा अध्यक्ष माओ द्वारा निर्धारित की गई संक्रमण काल में पार्टी की आम कार्यदिशा के अनुसार लगातार तीव्र संघर्ष किया। 1956 तक कृषि, दस्तकारी और पूंजीवादी उद्योग व व्यापार के क्षेत्रों में उत्पादक साधनों की मिल्कियत की व्यवस्था का समाजवादी रूपान्तर

मुख्य रूप से पूरा कर दिया गया। यह निर्णयात्मक घड़ी थी कि समाजवादी क्रान्ति लगातार आगे चल सकेगी या नहीं। अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में संशोधनवाद की उद्दण्डता और हमारे देश के वर्ग-संघर्ष की नई प्रवृत्ति को देखते हुए अध्यक्ष माओ ने "जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में" शीर्षक अपनी महान रचना में सारी पार्टी को ताकीद करते हुए कहा था: **"चीन में, हालांकि मिलकियत की व्यवस्था का समाजवादी रूपान्तर मुख्य रूप से पूरा हो चुका है", "फिर भी सत्ताच्युत जमींदार वर्ग और दलाल-पूंजीपति वर्ग के अवशेष अब भी मौजूद हैं, पूंजीपति वर्ग अब भी मौजूद है। और निम्न-पूंजीपति वर्ग का पुनःसंस्कार करना अभी सिर्फ शुरू ही किया गया है।"** 1956 में ल्यू शाओ-ची ने यह बेहूदा दलील पेश की कि "चीन में समाजवाद विजयी होगा या पूंजीवाद, यह सवाल अब हल हो चुका है।" इस बेहूदा दलील के एकदम विरुद्ध अध्यक्ष माओ ने खासतौर पर यह बताया: **"यह सवाल कि अन्त में समाजवाद विजयी होगा या पूंजीवाद, वास्तव में अब भी तय नहीं हुआ है।" "सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष, विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के बीच का वर्ग-संघर्ष तथा विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष अब भी एक दीर्घकालीन और टेढ़ा-मेढ़ा वर्ग-संघर्ष बना रहेगा, यहां तक कि कभी-कभी वह बहुत तीक्ष्ण भी हो जाएगा।"** इस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के सिद्धान्त और व्यवहार में स्पष्ट रूप से पहली बार यह बताया गया है कि उत्पादक साधनों की मिलकियत की व्यवस्था का समाजवादी रूपान्तर मुख्य रूप से पूरा होने के बाद भी वर्ग और वर्ग-संघर्ष मौजूद रहेंगे और यह कि सर्वहारा वर्ग को चाहिए कि वह क्रान्ति जारी रखे।

सर्वहारा हेडक्वार्टर, जिसके नेता अध्यक्ष माओ हैं, व्यापक जन समुदाय की रहनुमाई करते हुए अध्यक्ष माओ द्वारा निर्दिष्ट इस दिशा के अनुसार लगातार महान संघर्ष करता रहा है। 1957 में बुर्जुआ दक्षिणपंथियों के खिलाफ चलाए गए संघर्ष से लेकर 1959 में लूशान सम्मेलन में फङ

त ह्वाए के पार्टी विरोधी गुट का भण्डाफोड़ करने के संघर्ष तक, समाजवादी निर्माण के सिलसिले में पार्टी की आम कार्यदिशा के बारे में बड़े-बड़े वाद विवाद से लेकर समाजवादी शिक्षा-आन्दोलन में दो कार्यदिशाओं के बीच हुए संघर्ष तक यह सवाल संघर्ष का केन्द्र बना रहा कि समाजवादी रास्ता अपनाया जाए या पूंजीवादी रास्ता, सर्वहारा अधिनायकत्व पर कायम रहा जाए या बुर्जुआ अधिनायकत्व की पुनर्स्थापना की जाए।

अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा की हर एक विजय, पूंजीपति वर्ग के खिलाफ पार्टी द्वारा छेड़ी गई हर महत्वपूर्ण मुहिम की विजय दक्षिणपंथी या देखने में "वामपंथी" मगर वास्तव में दक्षिणपंथी संशोधनवादी कार्यदिशा को, जिसका प्रतिनिधित्व ल्यू शाओ-ची करता था, चकनाचूर करके ही प्राप्त की गई है।

जांच-पड़ताल से अब यह बात एकदम साबित हो चुकी है कि प्रथम क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के काल में ही ल्यू शाओ-ची कम्युनिस्ट पार्टी से गद्दारी करके दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर चुका था और वह दुश्मन-एजेन्ट व स्कैब बन चुका था। वह, जिसने नाना प्रकार के अपराध कर डाले हैं, साम्राज्यवाद, आधुनिक संशोधनवाद और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का पालतू कुत्ता है, और वह पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों का सर्वप्रमुख प्रतिनिधि है। उसकी एक राजनीतिक कार्यदिशा थी जिसके जरिए उसने चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने और चीन को साम्राज्यवाद व संशोधनवाद के उपनिवेश के रूप में बदल देने की नाकाम कोशिश की। अपनी प्रतिक्रान्तिकारी राजनीतिक कार्यदिशा को कार्यान्वित करने के लिए उसने एक संगठनात्मक कार्यदिशा भी चलाई थी। पिछले अनेक सालों से ल्यू शाओ-ची ने आत्म-समर्पणवादियों व विश्वासघातकों को अपने इर्द-गिर्द एकत्र करने की नीति के अनुसार गद्दारों, जासूसों और पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों को जमा कर एक गिरोह तैयार कर लिया। इस गिरोह के लोगों ने अपने-अपने प्रतिक्रान्तिकारी राजनीतिक रिकार्ड पर पर्दा डाले रखा और वे एक दूसरे को पनाह देते रहते थे तथा एक दूसरे के साथ सांठगांठ करके दुष्कर्म करते

थे, उन्होंने पार्टी व राज्य के अनेक महत्त्वपूर्ण ओहदे हथिया लिए, बहुत सी केन्द्रीय और स्थानीय संस्थाओं के नेतृत्व को अपने कब्जे में कर लिया और इस तरह अध्यक्ष माओ की रहनुमाई में चलने वाले सर्वहारा हेडक्वार्टर के खिलाफ एक अन्डरग्राउन्ड बुर्जुआ हेडक्वार्टर कायम किया। उन्होंने साम्राज्यवादियों, आधुनिक संशोधनवादियों और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के साथ सांठगांठ करके तोड़फोड़ करने के सिलसिले में एक ऐसी भूमिका अदा की जो अमरीकी साम्राज्यवादी, सोवियत संशोधनवादी और विभिन्न देशों के प्रतिक्रियावादी भी अदा नहीं कर सकते थे।

1939 में, जब अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में जापानी आक्रमण-विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध की आग प्रचण्ड रूप से भड़क रही थी, तो उस समय ल्यू शाओ-ची ने "आत्म उत्थान" के बारे में लिखी गई अपनी जहरीली पुस्तक निकाली। इस पुस्तक का बुनियादी तत्व सर्वहारा अधिनायकत्व के प्रति गद्दारी ही है। इस पुस्तक में जापानी साम्राज्यवाद को नष्ट करने का कहीं भी जिक्र नहीं किया गया, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ किस तरह संघर्ष चलाया जाए, इस सिलसिले में भी कुछ नहीं कहा गया, और सशस्त्र बल से राजनीतिक सत्ता छीनने के मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धान्त की भी कोई चर्चा नहीं की गई, बल्कि इसमें कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को यह पट्टी पढ़ाई गई कि वे महान क्रान्तिकारी व्यवहार से दूर होकर आदर्शवादी "आत्म-उत्थान" में लग जाएं, वास्तव में उसका बेहूदा मकसद यह था कि वे "आत्म-उत्थान" करके साम्राज्यवाद और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के प्रतिक्रान्तिकारी अधिनायकत्व के सामने घुटने टेक देने वाले गुलाम बन जाएं।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में विजय होने के बाद, जबकि अमरीकी साम्राज्यवाद मुक्त क्षेत्रों पर बड़े पैमाने पर आक्रमण करने की तैयारियों में च्याङ काई शेक की प्रतिक्रान्तिकारी सेना को हथियारबन्द कर रहा था, उसी मौके पर अमरीकी च्याङ प्रतिक्रियावादियों की आवश्यकता के अनुसार यह आत्मसमर्पणवादी कार्यदिशा कि "चीन शान्ति और जनवाद की नई मंजिल पर पहुंच चुका है", सामने रखते हुए ल्यू शाओ ची ने अध्यक्ष माओ द्वारा पेश की गई "**साहस के साथ जन-समुदाय को गोलबन्द किया जाए और जन-शक्ति का विस्तार किया जाए, ताकि वह हमारी पार्टी के नेतृत्व में आक्रमणकारियों को पराजित कर सके और नए चीन का निर्माण कर सके**" की आम कार्यदिशा तथा अमरीकी-च्याङ प्रतिक्रियावादियों के आक्रमण के खिलाफ अपनाई गई "**शठे-शाठ्यम व्यवहार करने और एक-एक इंच जमीन के लिए लड़ने**" की नीति का विरोध किया। उसने इस बात का ढोल पीटा कि "चीनी क्रान्ति के संघर्ष का मुख्य रूप आजकल हथियारबन्द संघर्ष से गैर-हथियारबन्द, जनव्यापी, संसदीय संघर्ष के रूप में बदल गया है," उसने यह चाहा कि जन सेना पर से पार्टी का नेतृत्व हटा दिया जाए, आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना को, जिनसे बाद में जनमुक्ति सेना कायम की गई, "एकीकरण" के लिहाज से च्याङ काई-शेक की "राष्ट्रीय सेना" में शामिल कर दिया जाए और बड़ी तादाद में ऐसे सैनिकों को सेना से बरखास्त कर दिया जाए, जो मजदूर-किसान घरानों से आए थे और पार्टी के नेतृत्व में रहते थे, और इस प्रकार, उसने जड़-मूल से जन सेना को खत्म करने, चीनी क्रान्ति का गला घोंटने और विजय के उस फल को, जिसे चीनी जनता ने अपना खून बहाकर वापस छीन लिया था, अपने हाथों क्वोमिन्ताङ के हवाले कर देने की नाकाम कोशिश की।

अप्रैल 1949 में, उस मौके पर, जबकि चीनी जन-मुक्ति सेना याङत्सी नदी पार करने की तैयारियां कर रही थी, और चीन की नव-जनवादी क्रान्ति में देशव्यापी विजय प्राप्त होने ही वाली थी, ल्यू शाओ-ची भागा-भागा थ्येनचिन जा पहुंचा और पूंजीपतियों की गोद में जा बैठा। अभी अभी समाप्त हुए पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में निर्धारित की गई निजी पूंजीवादी उद्योग का इस्तेमाल करने, उसे सीमित करने और उसका रूपान्तर करने की नीति का पागलपन के साथ विरोध करते हुए, उसने यह हांक लगाई कि "चीन का पूंजीवाद आज भी अपनी जवानी के दौर में है", उसे असीमित रूप से "डंके की चोट परवान चढ़ाया जाए", "आज पूंजीवादी शोषण कोई अपराध नहीं है,

बल्कि एक योगदान है'', उसने बेशर्मी के साथ पूंजीपति वर्ग की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा कि ''वे जितना ज्यादा शोषण करेंगे, उनका योगदान भी उतना ही बड़ा होगा'', उसने उत्पादक शक्ति के संशोधनवादी सिद्धान्त की जोरशोर से डींग हांकी और इस प्रकार चीन को पूंजीवादी रास्ते पर डाल देने की नाकाम कोशिश की।

मुख्तसर यह कि नव-जनवादी क्रान्ति और समाजवादी क्रान्ति के बहुत से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मौकों पर ल्यू शाओ-ची और उसका गिरोह पागलपन के साथ अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा का विरोध करता रहा और प्रतिक्रान्तिकारी षडयन्त्रकारी तोड़फोड़ की कार्यवाहियां करता रहा। लेकिन, चूंकि वे प्रतिक्रान्तिकारी थे, इसलिए उनके षडयन्त्र का भण्डाफोड़ होना ही था। ख्रुश्चोव के सत्तारूढ़ होने के बाद, खासकर जब सोवियत संशोधनवादी अमरीकी साम्राज्यवादियों और भारत व अन्य देशों के प्रतिक्रियावादियों के साथ सांठगांठ करके बड़े पैमाने पर चीन का विरोध करने लगे, तब वे और भी ज्यादा बेबाक हो गए।

सबसे पहले अध्यक्ष माओ ने ल्यू शाओ-ची और उसके गिरोह के प्रतिक्रान्तिकारी षडयन्त्र के खतरे को महसूस किया। जनवरी 1962 के पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के कार्य-सम्मेलन में अध्यक्ष माओ ने संशोधनवाद उत्पन्न होने के खतरे से सतर्क रहने की जरूरत पर जोर देने की ताकीद की। अगस्त 1962 में पेइताएहो में हुए पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के कार्य सम्मेलन और उसी साल सितम्बर में पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दसवें पूर्ण अधिवेशन में अध्यक्ष माओ ने और ज्यादा गहराई के साथ पूर्ण रूप से समाजवाद के पूरे ऐतिहासिक दौर में हमारी पार्टी की बुनियादी कार्यदिशा पेश की। अध्यक्ष माओ ने बताया: **''समाजवादी समाज एक काफी लम्बा ऐतिहासिक दौर है। समाजवाद के इस ऐतिहासिक दौर में वर्ग, वर्ग-अन्तरविरोध और वर्ग-संघर्ष मौजूद रहते हैं, समाजवादी और पूंजीवादी दो रास्तों के बीच का संघर्ष मौजूद रहता है, पूंजीवाद की पुनर्स्थापना का खतरा बरकरार रहता है। हमें इस संघर्ष की दीर्घकालीनता और पेचीदगी को समझना चाहिए। हमें अपनी सतर्कता उन्नत करनी चाहिए। हमें समाजवादी शिक्षा का**

काम सम्भालना चाहिए। हमें वर्ग-अन्तरविरोधों और वर्ग-संघर्ष के मसले को सही ढंग से समझना और हल करना चाहिए, हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध तथा जनता के बीच के अन्तरविरोध इन दो प्रकार के अन्तरविरोधों में सही ढंग से फर्क करना चाहिए और उन्हें सही ढंग से हल करना चाहिए। वरना, यह मुमकिन है कि हमारे तरह का एक समाजवादी देश अपने विपरीत तत्व में बदल जाएगा, उसका स्वरूप बदल जाएगा और उसमें पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो जाएगी। अब से हमें हर साल, हर महीने और हर रोज इस बात की चर्चा करनी चाहिए, ताकि इस सवाल के बारे में हम अपेक्षाकृत साफ समझ हासिल कर सकें और हमारे पास एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी कार्यदिशा हो सके।'' अध्यक्ष माओ द्वारा पेश की गई यह मार्क्सवादी लेनिनवादी कार्यदिशा हमारी पार्टी का प्राण है।

इसके बाद, मई 1963 में अध्यक्ष माओ के निर्देशन में ''वर्तमान देहाती कार्य सम्बन्धी कुछ समस्याओं के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला (मसौदा)'' (यानी ''10 धाराओं वाला फैसला'') निर्धारित किया गया, जिसमें समाजवादी शिक्षा-आन्दोलन में पार्टी की कार्यदिशा, उसूल और नीति तय की गई। अध्यक्ष माओ ने फिर एक बार समूची पार्टी को चेतावनी दी कि अगर वर्ग और वर्ग-संघर्ष भुला दिया जाए और सर्वहारा अधिनायकत्व को भुला दिया जाए **''तो इस बात को ज्यादा समय नहीं लगेगा शायद चन्द साल या एक दशाब्दी या अधिक से अधिक चन्द दशाब्दियां लगें कि अनिवार्यरूप से देशव्यापी पैमाने पर प्रतिक्रान्तिकारी पुनर्स्थापना हो जाएगी, मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी निस्संदेह एक संशोधनवादी पार्टी, एक फासिस्ट पार्टी में बदल जाएगी तथा समूचे चीन का रंग बदल जाएगा। साथियो, आप जरा इस पर सोचें, यह कितनी खतरनाक स्थिति होगी!''** इस प्रकार, अध्यक्ष माओ ने समूची पार्टी और सारे देशकी जनता को पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के खतरे के बारे में और ज्यादा स्पष्टता के साथ जताया है!

इन तमाम चेतावनियों और संघर्षों ने ल्यू शाओ-ची और उसके गिरोह के प्रतिक्रियावादी वर्ग-स्वरूप को रत्तीभर भी न बदला और न ही उसे

बदलना मुमकिन था। 1964 के महान समाजवादी शिक्षा-आन्दोलन में ल्यू शाओ-ची ने खुल्लमखुल्ला मैदान में आकर जन-समुदाय का दमन किया, पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों को पनाह दी, और उसने अध्यक्ष माओ द्वारा प्रतिपादित किए गए सामाजिक स्थिति की जांच-पड़ताल और अध्ययन करने के मार्क्सवादी वैज्ञानिक तरीके पर खुलेआम चोट करते हुए कहा कि वह "पुराना पड़ चुका है"। उसने यह भी बकवास की कि जो कोई भी उसकी कार्यदिशा को लागू करने से इनकार करेगा वह "नेता बनने के लायक न होगा"। वह और उसके गिरोह के लोग पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने के लिए अधीर थे। 1964 के अन्त में अध्यक्ष माओ ने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का कार्य-सम्मेलन बुलाया और उनके निर्देशन में "देहाती इलाकों में समाजवादी शिक्षा-आन्दोलन के दौरान उठाई गई कुछ वर्तमान समस्याएं" नामक दस्तावेज (यानी, "23 धाराओं वाली दस्तावेज") तैयार की गई। अध्यक्ष माओ ने ल्यू शाओ-ची की उस बुर्जुआ प्रतिक्रियावादी कार्यदिशा की कड़ी निन्दा की, जो देखने में "वामपंथी" मगर वास्तव में दक्षिणपंथी थी, और ल्यू शाओ-ची के अनेक बेतुके कथनों का खण्डन किया, मसलन "पार्टी के भीतर और बाहर के अन्तरविरोधों की उलझनें" और "चार पहलुओं में साफ होने या न होने के अन्तरविरोध" वगैरह-वगैरह। साथ ही अध्यक्ष माओ ने पहली बार, स्पष्ट रूप से यह बताया कि **"वर्तमान आन्दोलन का मुख्य निशाना पार्टी के भीतर मौजूद वे कर्ताधर्ता लोग हैं जो पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं"**। इस नए निष्कर्ष ने, जिस पर अध्यक्ष माओ घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रों में सर्वहारा अधिनायकत्व के ऐतिहासिक अनुभवों का निचोड़ निकालकर पहुंचे, समाजवादी शिक्षा-आन्दोलन की दिशा ठीक कर दी, और शीघ्र ही बरपा होने वाली महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के लिए भी स्पष्ट दिशा दिखा दी।

इस दौर के इतिहास का सिंहावलोकन करने पर हम यह जान सकते हैं कि मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, जिसमें दसियों करोड़ क्रान्तिकारी जनता ने भाग लिया है, किसी भी तरह आकस्मिक रूप से कतई बरपा नहीं हुई है। यह समाजवादी समाज में मौजूद दो वर्गों के बीच,

दो रास्तों के बीच, दो कार्यदिशाओं के बीच के दीर्घकालीन और तीव्र संघर्ष का अनिवार्य नतीजा है। यह **"सर्वहारा वर्ग द्वारा पूंजीपति वर्ग और अन्य तमाम शोषक वर्गों के खिलाफ चलाई जा रही महान राजनीतिक क्रान्ति है। यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी व उसके नेतृत्व में व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय द्वारा क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध चलाए जा रहे दीर्घकालीन संघर्ष का जारी रूप है, तथा सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के वर्ग-संघर्ष का जारी रूप है।"** चीनी सर्वहारा वर्ग, गरीब व निम्न-मध्यम किसान, जन मुक्ति सेना, क्रान्तिकारी कार्यकर्ता और क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी, जिन्होंने महान नेता अध्यक्ष माओ का घनिष्ठ अनुसरण करते हुए समाजवादी रास्ता अपनाने का पक्का संकल्प कर रखा है, पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने की ल्यू शाओ-ची व उसके गिरोह की कार्यवाहियों को बर्दाश्त न कर सके। और इस तरह एक महा वर्ग संग्राम अनिवार्य हो गया।

जैसा कि अध्यक्ष माओ ने फरवरी 1967 में एक बार अपनी बातचीत के दौरान कहा था: **"पहले हमने देहातों में संघर्ष चलाया, कारखानों में संघर्ष चलाया, सांस्कृतिक क्षेत्र में संघर्ष चलाया और समाजवादी शिक्षा-आन्दोलन चलाया, लेकिन मसले को हल नहीं किया जा सका, क्योंकि हम ऐसा रूप और ऐसा तरीका नहीं खोज पाए, जिसके जरिए हम अपने अन्धकारमय पहलुओं का पर्दाफाश करने के लिए खुले तौर पर, चौतरफा रूप से और नीचे से ऊपर तक व्यापक जन-समुदाय को गोलबन्द कर सकें।"** अब हमने एक ऐसा रूप खोज निकाला है और वह है महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति। केवल दसियों करोड़ जनता को साहस के साथ अपनी रायें पेश करने, बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लिखने और बड़े-बड़े वाद-विवाद करने के लिए गोलबन्द करके ही पार्टी में घुसे गद्दारों, जासूसों और पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों की कलई खोली जा सकती है और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने के उनके षड्यन्त्र को धूल में मिलाया जा सकता है। गद्दार, दुश्मन एजेन्ट और स्कैब ल्यू शाओ-ची के केस की जांच-पड़ताल में व्यापक जन-समुदाय के भाग लेने की बदौलत ही इस पुराने

प्रतिक्रान्तिकारी का असली चेहरा पूरी तरह बेनकाब किया जा सका। पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के विस्तृत बारहवें पूर्ण अधिवेशन में ल्यू शाओ ची को पार्टी के भीतर और बाहर के तमाम पदों से हटा देने और उसे पार्टी से हमेशा के लिए निकाल बाहर कर देने का फैसला किया गया। यह दसियों करोड़ जनता की एक महान विजय है। सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने के सिद्धान्त के अनुसार हमारे महान शिक्षक अध्यक्ष माओ ने खुद इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का सूत्रपात और नेतृत्व किया है। वाकई यह क्रान्ति "**निहायत जरूरी और अत्यन्त समयानुकूल है**", और मार्क्सवाद लेनिनवाद के सिद्धान्त और व्यवहार के लिए यह एक महान नया योगदान है।

2. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की प्रक्रिया के बारे में

मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थिति में चलाई जाने वाली एक ऐसी महान राजनीतिक क्रान्ति है जिसका सूत्रपात खुद हमारे महान नेता अध्यक्ष माओ ने किया है और जिसका नेतृत्व खुद वे ही कर रहे हैं, और वह ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में चलाई जाने वाली एक महान क्रान्ति है। हमारा उद्देश्य है संशोधनवाद को चकनाचूर करना, सत्ता के उस भाग को, जिसे पूंजीपति वर्ग ने हथिया लिया था, वापस छीन लेना, ऊपरी ढांचे में जिसमें संस्कृति के सभी क्षेत्र भी शामिल हैं, चौतरफा सर्वहारा अधिनायकत्व को लागू करना, समाजवाद के आर्थिक आधार को सुदृढ़ व मजबूत बनाना और इस प्रकार इस बात की गारण्टी करना कि हमारा देश समाजवादी रास्ते पर लगातार लम्बे-लम्बे डग भरते हुए आगे बढ़ता रहेगा।

अध्यक्ष माओ ने 1962 में आयोजित चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दसवें पूर्ण अधिवेशन में ही बता दिया था: "**किसी एक राजसत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए, हमेशा इस बात की जरूरत होती है कि सबसे पहले लोकमत तैयार किया जाए, विचारधारात्मक क्षेत्र में कार्य किया जाए। यह बात जहां क्रान्तिकारी वर्ग पर लागू होती है, वहां प्रतिक्रान्तिकारी वर्ग पर भी लागू होती है।**" अध्यक्ष माओ के इस कथन का निशाना ल्यू शाओ ची प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी गुट के मर्मस्थल पर ठीक बैठा। वे लोग ऐसे पुरजोर के साथ विचारधारात्मक क्षेत्र के कार्य को और ऊपरी ढांचे के कार्य को अपने पंजे में लाने की कुचेष्टा करते थे, तथा अपने कब्जे में रहने वाले विभिन्न विभागों के अन्दर सर्वहारा वर्ग पर पागलपन के साथ प्रतिक्रान्तिकारी अधिनायकत्व लागू करते थे और तादाद जहरीली घासपातें फैलाते थे, जिसका मकसद सिर्फ एक ही था और वह था सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता उलटने के लिए लोकमत तैयार करना। उन्हें राजनीतिक तौर पर धराशायी करने के लिए यह जरूरी है कि हम भी सबसे पहले क्रान्तिकारी लोकमत से उनके प्रतिक्रान्तिकारी लोकमत को चकनाचूर कर दें।

अध्यक्ष माओ हमेशा से विचारधारात्मक क्षेत्र के संघर्ष पर खूब ध्यान देते आए हैं। सारे देश की मुक्ति के बाद उन्होंने फिल्म "ऊ श्युन की जीवनी", हू फङ प्रतिक्रान्तिकारी गुट और "'लाल भवन का सपना' का अध्ययन" आदि की आलोचना व खण्डन करने के लिए अनेक आन्दोलन छेड़े थे। इस बार भी फिर अध्यक्ष माओ ने ल्यू शाओ ची और उसके गिरोह के कब्जे में रहने वाले बुर्जुआ मोर्चों पर धावा बोलने में समूची पार्टी का नेतृत्व किया। अध्यक्ष माओ ने "सही विचार आखिर कहां से आते हैं?" शीर्षक मशहूर लेख और अन्य दस्तावेजें लिखीं, जिनमें उन्होंने ल्यू शाओ-ची के बुर्जुआ आदर्शवाद व आध्यात्मवाद का खण्डन किया है तथा ल्यू शाओ-ची के नियंत्रण में रहने वाले कला साहित्य विभागों की आलोचना करते हुए यह कहा कि उनमें "**अब भी 'मरे हुए लोगों' का शासन जमा हुआ है**" और सांस्कृतिक मंत्रालय की आलोचना करते हुए कहा कि "**अगर वह अपने आप को बदलने से इन्कार करे, तो उसका नाम राजा-रजवाड़ों, सेनापतियों व दीवानों के मंत्रालय, युवा विद्वानों व सुन्दरियों के मंत्रालय या विदेशी मृतकों के मंत्रालय में बदल देना चाहिए।**" और अध्यक्ष माओ ने स्वास्थ्य मंत्रालय की

आलोचना करते हुए कहा कि उसका नाम भी "**शहरी लाट साहबों के स्वास्थ्य मंत्रालय**" में बदल देना चाहिए। अध्यक्ष माओ के आह्वान के अनुसार सर्वहारा वर्ग ने सबसे पहले पेकिङ आपेरा, बैले व सिम्फोनी संगीत जैसे क्षेत्रों में, जिन्हें जमींदार वर्ग व पूंजीपति वर्ग पवित्र और अनुल्लंघनीय समझते थे, क्रान्ति चला दी। यह आमने सामने का एक घोर संग्राम था। हालांकि ल्यू शाओ-ची व उसके गिरोह ने प्रतिरोध तथा तोड़ फोड़ करने की हरचन्द कोशिश की, फिर भी सर्वहारा वर्ग ने कठोर संघर्ष के जरिए आखिरकार अहम कामयाबियां हासिल कर लीं। अनेक शानदार मिसाली क्रान्तिकारी नाटकीय रचनाएं रोशनी में आ गईं। मजदूरों, किसानों व सैनिकों की वीर प्रतिमाएं आखिरकार रंगमंच पर चढ़ गईं। इसके बाद अध्यक्ष माओ ने फिर "हाए रुइ की अपने पद से बरखास्तगी" और अन्य बड़ी-बड़ी जहरीली घासपातों की आलोचना व खण्डन करने के लिए संघर्ष छेड़ दिया; इस संघर्ष का निशाना सीधे संशोधनवादी गुट की मांद ल्यू शाओ-ची के कब्जे में रहने वाले उस दुर्भेद्य व पुख्ता "स्वतंत्र राज्य" यानी पुरानी पेकिङ म्युनिसिपल पार्टी-कमेटी पर ही लगा दिया गया।

16 मई 1966 के "सरकुलर" में, जो खुद अध्यक्ष माओ की सदारत में तैयार किया गया है, वर्तमान महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के लिए सिद्धान्त, कार्यदिशा, निर्देशक उसूल तथा नीतियां निर्धारित की गई हैं और यह "सरकुलर" पूरे आन्दोलन का महान कार्यक्रम बन गया है। इस "सरकुलर" ने ल्यू शाओ-ची के बुर्जुआ हेडक्वार्टर द्वारा इस महान क्रान्ति का दमन करने के लिए प्रस्तुत की गई "फरवरी रूपरेखा" का पूरी तरह खण्डन किया, तथा उसने सारी पार्टी व सारे देश की जनता का आह्वान किया कि वे अपने संघर्ष का निशाना पार्टी के अन्दर घुस आए पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों को बनाएं और "**अब भी हमारे बिल्कुल करीब आसन जमाए बैठे हुए**" "**ख्रुश्चोव जैसे लोगों**" का पर्दाफाश करने पर खास ध्यान दें। यह सारे देश की जनता का एक महान राजनीतिक क्रान्ति चलाने के लिए गोलबन्द करने का एक महान आह्वान था। केन्द्रीय कमेटी के मातहत सांस्कृतिक क्रान्ति ग्रुप ने, जो इस "सरकुलर" के

निर्णय के मुताबिक कायम किया गया है, अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा को दृढ़ता के साथ लागू किया है।

अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा के मार्गदर्शन में व्यापक क्रान्तिकारी जन समुदाय संघर्ष में कूद पड़ा। पेकिङ विश्वविद्यालय में पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के आह्वान में आकर बड़े बड़े अक्षरों वाला एक पोस्टर लिखा गया। प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ विचारों का खण्डन करने के बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टर तेजी के साथ सारे देश में हर तरफ नजर आने लगे। इसके बाद लाल रक्षक जत्थे के जत्थे उठ खड़े होकर प्रकाश में आए, तथा क्रान्तिकारी किशोर और नौजवान लोग हौसले और हिम्मत से भरे अग्रगामी बन गए। यह देखकर ल्यू शाओ-ची गुट के हाथ-पांव फूल गए। उसने जल्दबाजी के साथ एक प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ कार्यदिशा खींच निकाली और क्रूरता के साथ नौजवान विद्यार्थियों के क्रान्तिकारी आन्दोलन का दमन किया। लेकिन इसके बावजूद भी उसे अपने को विनाश से बचाने के लिए ज्यादा समय नहीं मिल सका। अध्यक्ष माओ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी का ग्यारहवां पूर्ण अधिवेशन बुलाया और इसकी सदारत की। इस पूर्ण अधिवेशन में एक कार्यक्रमीय दस्तावेज–"महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला" (यानी "16 धाराओं वाला फैसला")–पास की गई। अध्यक्ष माओ ने "हेडक्वार्टर पर गोलाबारी करो" शीर्षक अपना बड़े-बड़े अक्षरों वाला पोस्टर पेश कर ल्यू शाओ-ची के बुर्जुआ हेडक्वार्टर का पर्दाफाश किया। अध्यक्ष माओ ने लाल रक्षकों के नाम अपने एक पत्र में बताया कि लाल रक्षकों की क्रान्तिकारी कार्यवाहियां "**जमींदार वर्ग, पूंजीपति वर्ग, साम्राज्यवादियों, संशोधनवादियों और उनके गुर्गों, जो सब मजदूरों, किसानों, क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों और क्रान्तिकारी पार्टियों व ग्रुपों का शोषण व दमन करते हैं, के प्रति तुम लोगों के रोष व निन्दा को जाहिर करती हैं, और यह भी जाहिर करती हैं कि प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ विद्रोह करना न्यायोचित है। मैं तुम लोगों का हार्दिक समर्थन करता हूं।**" इसके बाद अध्यक्ष माओ ने राजधानी के थ्येनआनमन

पर सारे देश की विभिन्न जगहों से आए लाल रक्षकों और अन्य क्रान्तिकारी जन-समुदाय से आठ बार सलामी ली, जिनकी कुल संख्या 1 करोड़ 30 लाख थी। इससे सारे देश की जनता के क्रान्तिकारी जुझारू संकल्प को बढ़ाया गया। मजदूरों, किसानों और क्रान्तिकारी दफ्तरी कार्यकर्ताओं के क्रान्तिकारी आन्दोलन बड़ी तेजी से भड़क उठे। बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टर और भी बड़ी संख्या में निकलने लगे, मानो विशाल जंगल में प्रचण्ड आग फैल रही हो, और हजारों तोपें एक साथ गरज रही हों। **''प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ विद्रोह करना न्यायोचित है''** यह नारा सारे देश में गूंज उठा। ल्यू शाओ-ची के बुर्जुआ हेडक्वार्टर पर गोलाबारी करने का दसियों करोड़ जनता का संघर्ष जोरशोर से विकसित हो उठा।

कोई भी ऐसा प्रतिक्रियावादी वर्ग नहीं है, जो खुद-ब-खुद इतिहास के मंच से नीचे उतरे। जब क्रान्ति ने सत्ता के उस भाग को छुआ, जिसे पूंजीपति वर्ग ने नाजायज रूप से हथिया लिया था, तब वर्ग संघर्ष ने और ज्यादा तीव्र रूप धारण कर लिया। ल्यू शाओ-ची का पतन हो जाने के बाद उसके संशोधनवादी गुट और विभिन्न स्थानों में उसके एजेन्टों ने लोगों की बहुसंख्या पर प्रहार और अपने मुट्ठीभर लोगों की हिफाजत जारी रखने की नाकाम कोशिश में लगातार हथकण्डे बदलकर ''सभी पर सन्देह करना'' और ''सभी को धराशायी करना'' जैसे नारे निकाले, जिनका बाह्य रूप ''वामपंथी'' है और अन्तर्वस्तु दक्षिणपंथी। इसके अलावा अपनी हिफाजत करने के लिए उन्होंने क्रान्तिकारी जन-समुदाय में फूट डाली और जन समुदाय के एक भाग को अपने नियंत्रण में रखा और उसे धोखे में डाल दिया। जब उनकी इन साजिशों को सर्वहारा क्रान्तिकारियों द्वारा चकनाचूर कर दिया गया तो उन्होंने फिर एक बार पागलपन के साथ जवाबी हमला किया, और यह थी 1966 की सर्दियों से 1967 के बसन्त तक उत्पन्न उल्टी धारा।

इस उल्टी धारा ने अपना निशाना सर्वहारा हेडक्वार्टर को, जिसके नेता अध्यक्ष माओ हैं, बना दिया। उसका आम कार्यक्रम एक ही था: पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन में पास किये गये

फैसलों को उलट देना, ल्यू शाओ-ची की अगुआई में चलने वाले बुर्जुआ हेडक्वार्टर के बारे में, जिसे उखाड़ फेंका जा चुका था, किए गये फैसले को उलट देना, उस प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ कार्यदिशा, जिसे व्यापक जन-समुदाय खण्डित कर टुकड़ों में उड़ा चुका था, के बारे में किए गए फैसले को उलट देना तथा क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन का दमन करना और अपना बदला लेना। लेकिन इस उल्टी धारा की अध्यक्ष माओ ने गम्भीरता के साथ आलोचना की तथा व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय ने उसका प्रतिरोध किया; यह उल्टी धारा क्रान्तिकारी जन आन्दोलन की मुख्य धारा को तेजी से आगे बढ़ने से न रोक सकी।

क्रान्तिकारी आन्दोलन में कई बार टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजरने और पस्पाइयों का सामना करने से व्यापक जन-समुदाय ने राजनीतिक सत्ता के महत्व को और अच्छी तरह समझ लिया: ल्यू शाओ-ची और उसका गिरोह मुख्यत: इस वजह से बुरा काम कर सकते थे क्योंकि उन लोगों ने बहुत सी इकाइयों व स्थानों में सर्वहारा वर्ग की सत्ता नाजायज रूप से हथिया ली थी; क्रान्तिकारी जन-समुदाय को मुख्यत: इस वजह से दमन का सामना करना पड़ता था क्योंकि वहां की सत्ता सर्वहारा वर्ग के हाथ में नहीं थी। कुछ इकाइयों में बाहरी तौर पर समाजवादी मिल्कियत की व्यवस्था थी, लेकिन असली नेतृत्वकारी सत्ता मुट्ठीभर गद्दारों, जासूसों और पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों द्वारा हथिया ली गई थी, या ज्यों की त्यों भूतपूर्व पूंजीपतियों के ही हाथ में रही थी। खासकर जब ''उत्पादन पर जोर देने'' के बहाने क्रान्ति को दबाने की पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों की साजिश धूल में मिल जाने के बाद उन्होंने प्रतिक्रान्तिकारी अर्थवाद की दूषित आंधी बरपा की, तब व्यापक जन-समुदाय यह और अच्छी तरह समझने लगा कि सिर्फ खोई हुई सत्ता को फिर से वापस छीनकर ही पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों को पूरी तरह पराजित किया जा सकता है। क्रान्तिकारी परम्परा रखने वाला शांघाई का मजदूर वर्ग अध्यक्ष माओ तथा सर्वहारा हेडक्वार्टर, जिसके नेता अध्यक्ष माओ हैं, के नेतृत्व व समर्थन में सीना तानकर मैदान में उतरा और उसने व्यापक क्रान्तिकारी जन समुदाय और क्रान्तिकारी

कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर जनवरी 1967 में नीचे से पुरानी शांघाई म्युनिसिपल पार्टी कमेटी और म्युनिसिपल जन-परिषद में पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों से सत्ता छीन ली।

अध्यक्ष माओ ने ऐन मौके पर शांघाई में क्रान्ति के जनवरी तूफान के अनुभवों का निचोड़ निकाला और सारे देश का आह्वान किया: **"सर्वहारा क्रान्तिकारियो, एक हो जाओ और पार्टी के भीतर मौजूद पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले मुट्ठीभर कर्ताधर्ता लोगों से सत्ता छीन लो।"** इसके बाद अध्यक्ष माओ ने फिर यह हिदायत दी कि **"जन-मुक्ति सेना को व्यापक वामपंथी जन-समुदाय का समर्थन करना चाहिए"**। अध्यक्ष माओ ने आगे चलकर हेलुङच्याङ और अन्य कुछ प्रान्तों व म्युनिसिपलटियों के अनुभवों का निचोड़ निकाला और ऐसी क्रान्तिकारी कमेटी को, जिसमें क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि, जन-मुक्ति सेना के प्रतिनिधि और क्रान्तिकारी जन-समुदाय के प्रतिनिधि शामिल हैं तथा जिसमें क्रान्तिकारी त्रिपक्षीय संश्रय कायम होता है, स्थापित करने के निर्देशक उसूल व नीतियां निर्धारित कीं, इस प्रकार सत्ता छीनने के देशव्यापी संघर्ष को आगे बढ़ाया गया।

सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच सत्ता छीनने व फिर उसे वापस लेने का संघर्ष जीवन-मरण का संघर्ष है। 1967 में शांघाई में क्रान्ति के जनवरी तूफान से लेकर सितम्बर 1968 में तिब्बत व सिनच्याङ की क्रान्तिकारी कमेटियों की स्थापना तक के एक साल और नौ महीने के दौरान दो वर्गों तथा दो कार्यदिशाओं के बीच राजनीतिक ताकतों की बारम्बार आजमाइश हुई, सर्वहारा विचारों और गैर-सर्वहारा विचारों के बीच घोर संघर्ष हुआ, और इस प्रकार बेहद पेचीदा हालत पैदा हुई। जैसा कि अध्यक्ष माओ ने बताया है: **"अतीत काल में हम उत्तर-दक्षिण में विशाल भूमि पर लड़ते रहते थे, उस तरह के युद्ध लड़ना आसान था। क्योंकि दुश्मन साफ दीखते थे। मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति उस तरह के युद्ध से कहीं ज्यादा मुश्किल है।" "समस्या यह है कि विचारधारात्मक गलती करने वाले लोग, उन लोगों में मिलकर रह गये जिनके और हमारे बीच का अन्तरविरोध,**

हमारे और दुश्मन के बीच का अन्तरविरोध है, और कुछ समय तक के लिए उनमें फर्क करना मुश्किल है।" लेकिन अध्यक्ष माओ के विवेकपूर्ण नेतृत्व के भरोसे, हमने आखिरकार इस कठिनाई को दूर कर दिया। 1967 की गरमियों में अध्यक्ष माओ ने याङत्सी नदी के उत्तर और दक्षिण के विशाल इलाकों का दौरा किया और अत्यन्त महत्वपूर्ण हिदायतें दीं तथा हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध तथा जनता के बीच के अन्तरविरोध इन दोनों में कदम-ब-कदम भेद करने में और क्रान्तिकारी महा समन्वय व क्रान्तिकारी त्रिपक्षीय संश्रय को एक कदम आगे बढ़कर साकार बनाने में व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय का मार्गदर्शन किया और निम्न बुर्जुआ विचार रखने वाले लोगों का सर्वहारा क्रान्ति के पथ पर चलने में मार्गदर्शन किया। इसके फलस्वरूप, इस संघर्ष के दौरान सिर्फ दुश्मनों को गड़बड़ में डाल दिया गया, जबकि व्यापक जन-समुदाय तपकर फौलाद बन गया।

जन समुदाय के अन्दर छिपे मुट्ठीभर गद्दार, जासूस, जमींदार, धनी किसान, प्रतिक्रान्तिकारी, बुरे तत्व और दक्षिणपंथी, जो अब तक सुधरे नहीं हैं, क्रियाशील प्रतिक्रान्तिकारी, बुर्जुआ कैरियरवादी और दुर्ग, ये सब तब तक अपना असली रूप नहीं दिखाते, जब तक अनुकूल आब-हवा पैदा नहीं हो जाती। 1967 की गरमियों और 1968 के बसन्त में उन लोगों ने फिर एक बार दक्षिणपंथ की ओर से और अति "वामपंथ" की ओर से सही फैसलों को उलट देने वाली प्रतिक्रियावादी दूषित आंधी का एक झोंका उठाया। उन लोगों ने अपने प्रहार का निशाना सर्वहारा हेडक्वार्टर को, जिसके नेता अध्यक्ष माओ हैं, जन मुक्ति सेना को और नवजात क्रान्तिकारी कमेटियों को बनाया। साथ ही उन लोगों ने सर्वहारा वर्ग के हाथों से सत्ता को पुन: हथियाने की नाकाम कोशिश में जन समुदाय को आपस में लड़ने के लिए उकसाया दिया और प्रतिक्रान्तिकारी षडयन्त्रकारी गुट संगठित किए। लेकिन उनके सरगना ल्यू शाओ-ची की ही तरह आखिर में इन मुट्ठीभर दुष्ट जनों का भी पर्दाफाश किया गया। यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की एक भारी विजय है।

3. संघर्ष–आलोचना व खण्डन–रूपान्तर का काम संजीदगी के साथ बखूबी सम्पन्न करने के बारे में

अन्य तमाम क्रान्तियों के समान ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में वर्तमान महान क्रान्ति का बुनियादी सवाल राजनीतिक सत्ता का सवाल है, एक ऐसा सवाल कि कौन सा वर्ग नेतृत्वकारी सत्ता धारण करता है। सारे देश के सभी प्रान्तों (केवल थाइवान प्रान्त के अलावा), म्युनिसिपल्टियों और स्वायत्त प्रदेशों में क्रान्तिकारी कमेटियां कायम की जा चुकी हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि इस क्रान्ति में महान और निर्णयात्मक विजय प्राप्त हो चुकी है। लेकिन क्रान्ति अभी पूरी नहीं हुई है। सर्वहारा वर्ग को लगातार आगे बढ़ना है, **"संघर्ष–आलोचना व खण्डन–रूपान्तर का काम संजीदगी के साथ बखूबी सम्पन्न करना चाहिए"**, तथा ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में समाजवादी क्रान्ति को अन्त तक चलाना चाहिए।

अध्यक्ष माओ ने बताया है: **"कारखाने में संघर्ष–आलोचना व खण्डन–रूपान्तर का कार्य कुल मिलाकर इन मंजिलों से गुजरता है: त्रिपक्षीय संश्रय वाली क्रान्तिकारी कमेटी कायम करना; जनव्यापी आलोचना व खण्डन करना; वर्ग-पांतों को शुद्ध करना; पार्टी-संगठन को सुदृढ़ बनाना; तथा प्रशासनिक ढांचे को कारगर व सरल बनाना, अनुचित नियम-कायदों को बदल देना और दफ्तरों में काम करने वाले लोगों को वर्कशापों में भेजना।"** हमें अध्यक्ष माओ की हिदायत के मुताबिक हरेक कारखाने, हरेक स्कूल, हरेक जन कम्यून और हरेक इकाई में गहराई व बारीकी से, अपने पैर जमीन पर रखते हुए और समुचित ढंग से इन कार्यों को पूरा करना चाहिए।

यूं तो क्रान्तिकारी कमेटी के काम सैकड़ों हजारों होते हैं, पर उसे मूल कार्य को गिरफ्त में रखना चाहिए, माओ त्सेतुङ विचारधारा का सजीव रूप से अध्ययन करने और उसे सजीव रूप में लागू करने के कार्य को तमाम कामों में सर्वोपरि स्थान पर रखना चाहिए, तथा हर चीज को माओ त्सेतुङ विचारधारा की कमान में रखना चाहिए। पिछली कई दशाब्दियों से अध्यक्ष माओ की विचारधारा सारी पार्टी और सारे देश की जनता की क्रान्ति का मार्गदर्शन करती आई है। लेकिन चूंकि ल्यू शाओ-ची और उसके गिरोह के अन्य प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी तत्व अध्यक्ष माओ की हिदायतों के फैलने पर पाबन्दी लगाते थे, इसलिए व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय के लिए प्रत्यक्ष रूप से अध्यक्ष माओ की आवाज सुनना मुश्किल होता था। मौजूदा महान क्रान्ति के तूफान ने सभी छोटे-बड़े "यमों के दरबारों" को चकनाचूर कर दिया है जिसकी बदौलत अध्यक्ष माओ की विचारधारा सीधे तौर पर व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय में पहुंच सकी है। यह एक महान विजय है। माओ त्सेतुङ विचारधारा का 70 करोड़ आबादी वाले बड़े देश में इतने व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार होना मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में प्राप्त सबसे बड़ा फल है। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में दसियों करोड़ जनता हर समय "अध्यक्ष माओ त्सेतुङ की रचनाओं के उद्धरण" को अपने पास रखती है, लगन के साथ इसका अध्ययन करती है और लगन के साथ इसे लागू करती है; अध्यक्ष माओ की नवीनतम हिदायत के प्रकाशित होते ही वह फौरन उसका प्रचार करती है और उसके अनुसार व्यवहार करती है। यह एक सबसे मूल्यवान कार्य-शैली है, जिसे बनाए रखना चाहिए और जिस पर डटे रहना चाहिए। हमें माओ त्सेतुङ विचारधारा का सजीव रूप से अध्ययन करने और उसे सजीव रूप से लागू करने के जन-आन्दोलन को गहराई के साथ चलाना चाहिए, माओ त्सेतुङ विचारधारा की भिन्न-भिन्न प्रकार की अध्ययन-कक्षाओं को लगातार अच्छी तरह जारी रखना चाहिए, तथा अध्यक्ष माओ के 1966 में दिए "7 मई निर्देश" के अनुसार समूचे देश को सही अर्थ में माओ त्सेतुङ विचारधारा का एक महाविद्यालय बनाना चाहिए।

तमाम क्रान्तिकारी कामरेडों को स्पष्टता के साथ यह देख लेना चाहिए कि विचारधारात्मक और राजनीतिक क्षेत्रों में वर्ग-संघर्ष हरगिज नहीं रुकेगा। यह कतई नहीं हो सकता कि हमारे द्वारा सत्ता छीन लिये जाने की वजह से सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का संघर्ष गायब हो जाए।

हमें क्रान्तिकारी जनव्यापी आलोचना व खण्डन के झण्डे को लगातार बुलन्द रखना चाहिए. माओ त्सेतुङ विचारधारा के सहारे पूंजीपति वर्ग का खण्डन, संशोधनवाद का खण्डन, तरह-तरह की दक्षिणपंथी या अति "वामपंथी" गलत धारणाओं, जो अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा के विरुद्ध हैं, का खण्डन, बुर्जुआ व्यक्तिवाद का खण्डन तथा "बहुत से केन्द्रों" के सिद्धान्त यानी "कोई केन्द्र नहीं" के सिद्धान्त का खण्डन करना चाहिए। हमें गद्दार, दुश्मन-एजेन्ट और स्कैब ल्यू शाओ-ची के ऐसे गन्दे माल, जैसे विदेशियों के गुलाम बनने के दलाल-पूंजीवादी दर्शन तथा घोंघे की चाल से पीछे-पीछे रेंगने के सिद्धान्त का लगातार और पूरी तरह खण्डन करना चाहिए तथा पूरी तरह उनको माख मिट्टी में मिला देनी चाहिए, तथा हमें अध्यक्ष माओ के **"स्वतंत्रता व पहलकदमी और स्वावलम्बन"** के विचार को व्यापक कार्यकर्ताओं और जन समुदाय के दिलो दिमाग में मजबूती से रचा-बसा देना चाहिए, ताकि इसकी गारण्टी की जा सके कि हमारा कार्य अध्यक्ष माओ द्वारा निर्दिष्ट दिशा में लगातार आगे बढ़ता जाए।

अध्यक्ष माओ ने बताया है: **"क्रान्तिकारी कमेटी को एकीकृत नेतृत्व लागू करना, प्रशासनिक ढांचे का दोहराव भंग करना, 'बेहतर फौज और सरल प्रशासन' वाली नीति को अमल में लाना, तथा अपने को एक ऐसे क्रान्तिकारीकृत नेतृत्वकारी ग्रुप के रूप में संगठित करना चाहिए जो जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखता हो।"** यह एक ऐसा मूल उसूल है जो समाजवादी आर्थिक आधार की और अच्छी तरह सेवा करने के लिए ऊपरी ढांचे को प्रेरित करता है। जन समुदाय से अलग होने वाला दोहरा प्रशासनिक ढांचा, जन समुदाय की क्रान्तिकारी सक्रियता को दबाने और कसने का पाण्डित्यप्रदर्शनवाद तथा शान शौकत और नटक मटक दिखाने की जमींदार वर्ग और पूंजीपति वर्ग की कार्यशैली- ये सब समाजवादी आर्थिक आधार को नष्ट करते हैं, पूंजीवाद के लिए फायदेमंद हैं और समाजवाद के लिए हानिकारक। राजसत्ता की विभिन्न स्तरों की संस्थाओं और अन्य संगठनों को अध्यक्ष माओ की हिदायतों के अनुसार जन समुदाय से, और सबसे पहले

जन-समुदाय के बुनियादी तबकों—मजदूर वर्ग और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों से घनिष्ठ सम्पर्क रखना चाहिए। नए और पुराने कार्यकर्ताओं को अक्सर नौकरशाहाना धूल की झाड़ पोंछ करनी चाहिए, "नौकरशाह और लाट के समान व्यवहार करने" की बुरी आदत न लगनी चाहिए। उन्हें किफायत से क्रान्ति चलाने और परिश्रम व अल्पव्यय से तमाम समाजवादी कार्य चलाने पर डटे रहना चाहिए, शान शौकत दिखाने और फिजूलखर्ची का विरोध करना चाहिए और पूंजीपति वर्ग की शक्कर में लिपटी गोलियों के प्रहार से सतर्क रहना चाहिए। उन्हें कार्यकर्ताओं के सामूहिक उत्पादक श्रम में भाग लेने की व्यवस्था को अविचल रूप से बनाए रखना चाहिए और जन-समुदाय के जीवन पर ध्यान रखना चाहिए। अध्यक्ष माओ की शिक्षाओं के अनुसार खुद जांच-पड़ताल व अध्ययन करना चाहिए, एक या कई "गौरैयाओं" को चीर-फाड़कर उनका विश्लेषण करना चाहिए और लगातार अनुभवों का निचोड़ निकालते रहना चाहिए। हमेशा आलोचना और आत्मालोचना करनी चाहिए, क्रान्ति के उत्तराधिकारियों के बारे में अध्यक्ष माओ द्वारा पेश की गई पांच शर्तों के अनुसार **"स्वार्थ से संघर्ष और संशोधनवाद का खण्डन"** करना चाहिए और संजीदगी से अपने विश्व-दृष्टिकोण का पुनःसंस्कार करना चाहिए।

जन-मुक्ति सेना सर्वहारा अधिनायकत्व का शक्तिशाली आधार स्तम्भ है। अध्यक्ष माओ ने कई बार बताया है कि मार्क्सवादी दृष्टिकोण से देखा जाए, तो राज्य का मुख्य तत्व सेना है। चीनी जन मुक्ति सेना, जो खुद अध्यक्ष माओ के हाथों स्थापित हुई है और जिसका नेतृत्व वे खुद करते आए हैं, मजदूरों और किसानों की सेना है, सर्वहारा वर्ग की सेना है। साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाह-पूंजीवाद, इन तीन बड़े पहाड़ों को उलट देने के संघर्ष में, तथा मातृभूमि की रक्षा करने, अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण का मुकाबला करने व कोरिया की सहायता करने और साम्राज्यवाद, संशोधनवाद व प्रतिक्रियावादियों के आक्रमण को नेस्तनाबूद करने के संघर्षों में इस सेना ने महान ऐतिहासिक योगदान किया है। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में कमाण्डरों और सैनिकों की बड़ी संख्या ने उद्योग, कृषि और व्यापक वामपंथी जन-समुदाय का समर्थन करने, फौजी

नियंत्रण करने, फौजी व राजनीतिक ट्रेनिंग देने के कार्य में भाग लिया है; वे वर्ग-संघर्ष में तप चुके हैं, उन्होंने जन-समुदाय से घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखे हैं, सेना के विचारधारात्मक क्रान्तिकारीकरण को बढ़ाया है, और जनता के लिए नया योगदान किया है। युद्ध का मुकाबला करने के लिए यह सबसे अच्छी तैयारी भी है। हमें **"सरकार का समर्थन करने और जनता को प्यार करने"** तथा **"सेना का समर्थन करने और जनता को प्यार करने"** की गौरवपूर्ण परम्परा का विकास करना चाहिए, सेना और जनता की एकता को और मजबूत करना चाहिए, जन-मिलिशिया के निर्माण-कार्य को और बढ़ाना चाहिए, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के निर्माण-कार्य को और बढ़ाना चाहिए और अपने सभी कामों को और अधिक सुचारू ढंग से करना चाहिए। पिछले तीन सालों में गद्दारों, जासूसों और अपने आप को न सुधारने पर अड़े पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों तथा प्रतिक्रान्तिकारियों ने हमारी इस महान जन सेना को छिन्न-भिन्न करने की कोशिश की थी, लेकिन उनकी कुचेष्टा धूल में मिला दी गई, इसकी वजह ठीक यह है कि जनता ने सेना का समर्थन किया है और सेना ने जनता की रक्षा की है।

ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में संस्कृति, कला, शिक्षा, प्रेस और स्वास्थ्य-सेवा आदि विभागों का बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। पार्टी की सातवीं केन्द्रीय कमेटी के दूसरे पूर्ण अधिवेशन में **"दिलोजान से मजदूर वर्ग पर भरोसा रखना चाहिए"** की कार्यदिशा तय की गई थी और अब, **"मजदूर वर्ग को हर कार्य का नेतृत्व करना चाहिए"**, अध्यक्ष माओ के इस महान आह्वान पर, मजदूर वर्ग, जो कि सर्वहारा क्रान्ति की मुख्य शक्ति है, और उसके सुदृढ़ संश्रयकारी गरीब और निम्न-मध्यम किसान, ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में संघर्ष-आलोचना व खण्डन-रूपान्तर के राजनीतिक रंगमंच पर चढ़ गए हैं। 27 जुलाई 1968 से मजदूर वर्ग के शक्तिशाली जत्थों ने पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ता लोगों द्वारा लम्बे अरसे से शासित इकाइयों में और उन सभी स्थानों में जहां बुद्धिजीवी केन्द्रित हैं, प्रवेश करना शुरू कर दिया है। यह एक महान क्रान्तिकारी कार्यवाही है। सर्वहारा वर्ग संस्कृति और

शिक्षा के मोर्चों को मजबूती के साथ अपने कब्जे में रख सकता है या नहीं और माओ त्सेतुङ विचारधारा से उनका रूपान्तर कर सकता है या नहीं, यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति को अन्त तक चलाने का कुंजीभूत सवाल है। अध्यक्ष माओ इस काम पर बड़ा महत्व देते हैं, उन्होंने खुद आदर्श नमूनों पर गिरफ्त रखी है, और इस प्रकार हमारे सामने एक शानदार मिसाल कायम कर दी है। हमें अपने कुछ साथियों की विचारधारात्मक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक मोर्चों की अवहेलना करने की गलत प्रवृत्ति को दूर कर देना चाहिए; हमें अध्यक्ष माओ का घनिष्ठ अनुसरण करना चाहिए और दीर्घकालीन, कठोर व बारीक काम करना चाहिए। **"मजदूर वर्ग को भी चाहिए कि वह संघर्ष में लगातार अपनी राजनीतिक चेतना उन्नत करता रहे"**, ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में संघर्ष–आलोचना व खण्डन-रूपान्तर का नेतृत्व करने के अनुभवों का निचोड़ निकालें और इस मोर्चे पर जीत हासिल करें।

4. महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की नीतियों के बारे में

ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में क्रान्ति जारी रखने के लिए यह बेहद जरूरी है कि संजीदगी के साथ अध्यक्ष माओ की विभिन्न सर्वहारा नीतियां लागू की जाएं।

16 मई 1966 के "सरकुलर" और अगस्त 1966 के "16 धाराओं वाले फैसले" में ही महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की नीतियों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया था। अध्यक्ष माओ की सिलसिलेवार नवीनतम हिदायतों ने जिनमें **"महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में संघर्ष–आलोचना व खण्डन–रूपान्तर की मंजिल के दौरान नीति पर संजीदगी से ध्यान देना चाहिए"** वाली हिदायत भी शामिल है, विभिन्न नीतियों को और भी ठोस रूप में दे दिया है।

अब मुख्य सवाल इन नीतियों को कार्यान्वित करने का है।

पार्टी की विभिन्न नीतियों का, जिनमें बुद्धिजीवियों के प्रति नीति,

कार्यकर्ताओं के प्रति नीति **''शिक्षित किए जा सकने वाले बेटे-बेटियों''** के प्रति नीति (यहां उन लोगों के बेटे-बेटियों का जिक्र है जिन्होंने अपराध किए हैं या गम्भीर गलतियां की हैं। –अनुवादक), जन समुदाय के संगठनों के प्रति नीति, दुश्मन के खिलाफ संघर्ष करने के बारे में नीति और आर्थिक नीति आदि शामिल हैं, आम विषय इस सवाल से सम्बन्धित है कि हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तर्विरोध तथा जनता के बीच के अन्तरविरोध इन दो भिन्न प्रकार के अन्तर्विरोधों को किस तरह सही ढंग से हल किया जाए।

पुराने स्कूलों और कालेजों में प्रशिक्षित बुद्धिजीवियों की बहुसंख्या या भारी बहुसंख्या अपने आप को मजदूरों, किसानों और सैनिकों के साथ एकरूप कर सकती है या करने की इच्छा रखती है। अध्यक्ष माओ की सही कार्यदिशा के मार्गदर्शन में मजदूरों, किसानों और सैनिकों द्वारा उन्हें **''पुन:शिक्षा''** दी जानी चाहिए। जिन बुद्धिजीवियों ने अपने आप को मजदूरों, किसानों और सैनिकों से अच्छी तरह एकरूप कर दिया है और जो लाल रक्षक व नौजवान बुद्धिजीवी पहाड़ी इलाकों और देहातों में जा बसने के लिए सक्रिय हैं, उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अध्यक्ष माओ ने अनेक बार हमें यह शिक्षा दी है: **''शिक्षा के जरिए ज्यादा व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए और प्रहार का दायरा छोटा करना चाहिए'', ''मार्क्स की इस शिक्षा कि सर्वहारा वर्ग समूची मानव जाति को मुक्त कराके ही अपनी अन्तिम मुक्ति प्राप्त कर सकता है, पर अमल किया जाना चाहिए।''** जिन लोगों ने गलतियां की हैं, उनके प्रति इस बात पर जोर देना चाहिए कि उन्हें शिक्षा और पुन:शिक्षा दी जाए, धीरज और बारीकी के साथ विचारधारात्मक व राजनीतिक काम किया जाए और **''साथियों में विचारधारात्मक सवालों को सुलझाने और उन्हें एकता के सूत्र में बांधने के दोहरे उद्देश्य में 'भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने'** और **'मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने' के उसूल पर अमल''** सच्चे मायने में किया जाए। जहां तक उन अच्छे लोगों का

सवाल है, जिन्होंने पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्ताधर्ताओं की सी गलती की थी, जब उनकी राजनीतिक चेतना उन्नत हो गई है, और उन्हें जन-समुदाय ने माफ कर दिया है, तो उन्हें समय पर ''मुक्त'' कर दिया जाना चाहिए, और उचित काम दिया जाना चाहिए तथा उन्हें मजदूर-किसान जन-समुदाय में जाकर अपने विश्व दृष्टिकोण का पुन:संस्कार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जहां तक उन लोगों का ताल्लुक है, जिन्होंने कुछ-कुछ उन्नति की है और जो कुछ हद तक जागृत हो गए हैं, तो उन्हें एकता के लिहाज से लगातार मदद की जानी चाहिए। हाल ही में अध्यक्ष माओ ने बताया है: **''सर्वहारा वर्ग मानव-इतिहास में सबसे महान वर्ग है। विचारधारा, राजनीति और शक्ति की दृष्टि से वह सबसे शक्तिशाली क्रान्तिकारी वर्ग है। वह ऐसा करने में समर्थ है और उसे ऐसा करना जरूरी भी है कि मुट्ठीभर दुश्मनों को चरम सीमा तक अलगाव में डालने और उन पर प्रहार करने के लिए अतिअधिकांश लोगों को अपने इर्द-गिर्द एकजुट करे।''**

दुश्मन के खिलाफ संघर्ष करते समय **''अन्तरविरोधों का फायदा उठाने, बहुसंख्यकों को अपने पक्ष में कर लेने, अल्पसंख्यकों का विरोध करने और दुश्मनों को एक-एक करके शिकस्त देने''** की उस नीति को लागू करना चाहिए जिस पर अध्यक्ष माओ हमेशा से जोर देते आए हैं। **''सबूतों पर और जांच-पड़ताल व अध्ययन पर जोर देना चाहिए। इस बात की सख्त मनाही है कि किसी पर जोर-जबरदस्ती करके जुर्म कबूल करवाया जाए और ऐसे बयान पर विश्वास किया जाए।'' ''अपने अपराध खुद मानने वालों को रियायत देने और प्रतिरोध करने वालों को कड़ा दण्ड देने''** के बारे में और **''रास्ता देने''** के बारे में अध्यक्ष माओ की नीतियां लागू की जानी चाहिए। हम दुश्मन पर अधिनायकत्व लागू करने में मुख्य रूप से व्यापक जन-समुदाय पर निर्भर रहते हैं। वर्ग-पांतों को शुद्ध करने के आन्दोलन में जांच पड़ताल के जरिए जिन दुष्ट जनों और शंकाजनक तत्वों का पता लगा लिया गया है, उनमें से अकाट्य प्रमाणों से साबित हुए हत्या करने, आग लगाने और

जहर देने आदि जुल्म ढाने वाले क्रियाशील प्रतिक्रान्तिकारियों के अलावा जिन्हें कानून के मुताबिक निपटाया जाना चाहिए, बाकी सब लोगों के प्रति **"किसी को भी मौत की सजा न देने और अधिकांश को गिरफ्तार न करने"** की नीति लागू की जानी चाहिए।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में बुर्जुआ प्रतिक्रियावादी धुरंधर विद्वानों के प्रति या पहले उनका खण्डन करने, फिर उनका व्यवहार देखने, या पहले उनका खण्डन करने, फिर उन्हें काम में लाने, अथवा पहले उनका खण्डन करने, फिर उन्हें समुचित जीविका देने की नीति अपनाई जानी चाहिए, एक शब्द में, उनके विचारों का खण्डन किया जाना चाहिए और उन्हें रास्ता भी दिया जाना चाहिए। हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तर्विरोधों के इस भाग को जनता के बीच के अन्तर्विरोधों के समान हल करना सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने के लिए फायदेमन्द है और दुश्मनों को छिन्न-भिन्न करने के लिए फायदेमन्द है।

पार्टी की विभिन्न नीतियों को कार्यान्वित करने के सिलसिले में हमें अपनी-अपनी इकाई की ठोस स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। उन स्थानों में जहां क्रान्तिकारी महा समन्वय काफी सुदृढ़ नहीं है, क्रान्तिकारी उसूल के मुताबिक कार्य-क्षेत्रों, व्यवसायों या स्कूल-क्लासों के आधार पर क्रान्तिकारी महा समन्वय को साकार बनाने के लिए वहां के व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय की मदद की जानी चाहिए, ताकि वह दुश्मन के खिलाफ एकजुट हो जाए। उन इकाइयों में जहां वर्ग-पांतों को शुद्ध करने का काम अभी नहीं किया गया है या अभी-अभी शुरू हुआ है, पार्टी की नीतियों के अनुसार इस काम को मजबूती से गिरफ्त में रखना और अच्छी तरह करना चाहिए। उन इकाइयों में जहां वर्ग पांतों को शुद्ध करने का काम लगभग पूरा किया जा चुका है, संघर्ष–आलोचना व खण्डन–रूपान्तर की विभिन्न मंजिलों के बारे में अध्यक्ष माओ की हिदायतों के अनुसार अन्य कामों पर भी जोर देना चाहिए। साथ ही, वर्ग-संघर्ष की नई प्रवृत्ति पर कड़ा ध्यान देना चाहिए। अगर दुष्ट जन फिर सिर उठाने लगें तो क्या करें? अध्यक्ष माओ का एक मशहूर कथन है: **"पूर्ण भौतिकवादी लोग निर्भय होते हैं"**। अगर वर्ग-दुश्मन फिर हंगामा बरपा करें, तो जन-समुदाय को गोलबन्द करके उन्हें फिर एक बार धराशायी कर दिया जाएगा।

जैसा कि "16 धाराओं वाले फैसले" में बताया गया है: **"यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति हमारे देश की सामाजिक उत्पादक शक्तियों को विकसित करने वाली एक जबरदस्त प्रेरक शक्ति है।"** हमारे देश के कृषि-उत्पादन में पिछले कई साल से लगातार भरपूर फसलें प्राप्त हुई हैं। औद्योगिक उत्पादन और विज्ञान-तकनालाजी में भी फलने-फूलने की हालत नजर आ रही है। व्यापक मेहनतकश जनता में क्रान्ति चलाने और उत्पादन बढ़ाने की सक्रियता अभूतपूर्व ऊंची हो गई है। बहुत से कारखानों, खानों और कारोबारों में उत्पादन के नए रिकार्ड एक के बाद एक कायम किये जा चुके हैं, उत्पादन को पिछले किसी भी समय के मुकाबले सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया गया है और तकनीकी क्रान्ति लगातार विकसित होती चली जा रही है। बाजार में चीजों की भरमार है। चीजों के दाम स्थिर रहे हैं। 1968 के अन्त तक हम नेशनल बॉण्ड पूरी तरह चुका चुके हैं। हमारा देश एक ऐसा समाजवादी देश बन गया है जो न देशी कर्ज से लदा है और न विदेशी कर्ज से।

"क्रान्ति को दृढ़ता से चलाओ और उत्पादन-कार्य को बढ़ावा दो" यह उसूल बिलकुल सही है, इसने सही ढंग से इस सवाल का जवाब दिया है कि क्रान्ति और उत्पादन के बीच, चेतना और पदार्थ के बीच, ऊपरी ढांचे और आर्थिक आधार के बीच तथा उत्पादन-सम्बन्ध और उत्पादक शक्ति के बीच, क्या सम्बन्ध होते हैं। अध्यक्ष माओ हमेशा हमें यह शिक्षा देते हैं: **"राजनीतिक कार्य समस्त आर्थिक कार्य का प्राण है"**। लेनिन ने उन अवसरवादियों की, जो राजनीतिक तौर पर मामले को परखने का विरोध करते थे, कड़ी निन्दा करते हुए यह कहा था: **"अर्थतंत्र पर अनिवार्य रूप से राजनीति की प्राथमिकता रहती है। इसके विरुद्ध तर्क करने का मतलब है मार्क्सवाद का ए.बी.सी. भूल जाना।"** ("लेनिन ग्रन्थावली", चीनी संस्करण, ग्रन्थ 32, पृष्ठ 72) लेनिन ने यह भी बताया था कि राजनीति को अर्थतंत्र के समकक्ष रखने का मतलब भी **"मार्क्सवाद का ए.बी.**

सी. **भूल जाना ही है।"** (वही पृष्ठ) राजनीति अर्थतंत्र की केन्द्रित अभिव्यक्ति है। अगर ऊपरी ढांचे के क्षेत्र में क्रान्ति न चलाई जाए, व्यापक मजदूर किसान जन समुदाय को जागृत न किया जाए, संशोधनवादी कार्यदिशा का खण्डन न किया जाए, मुट्ठीभर गद्दारों, जासूसों, पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले कर्णधार लोगों और प्रतिक्रान्तिकारियों का पर्दाफाश न किया जाए, सर्वहारा वर्ग की नेतृत्वकारी सत्ता सुदृढ़ न बनाई जाए, तो समाजवाद के आर्थिक आधार को और ज्यादा मजबूत कैसे बनाया जा सकता है? समाजवादी उत्पादक शक्ति का और ज्यादा विकास कैसे किया जा सकता है? यह क्रान्ति को उत्पादन की जगह पर बिठाना नहीं है, बल्कि उत्पादन को क्रान्ति की कमान में रखना है और क्रान्ति से उत्पादन को बढ़ावा और प्रेरणा देना है। हमें **"भरपूर शक्ति से, दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते हुए, ज्यादा से ज्यादा, जल्दी से जल्दी, अच्छे से अच्छा और कम से कम खर्च में समाजवाद का निर्माण करने"** की अध्यक्ष माओ की आम कार्यदिशा के अनुसार, **"युद्ध का मुकाबला करने के लिए तैयारी, प्राकृतिक संकट का मुकाबला करने के लिए तैयारी और सब कुछ जनता के लिए"** के उनके महान रणनीतिक विचार के अनुसार, **"कृषि को आधार बनाने, उद्योग को प्रधानता देने"** के उनके सिलसिलेवार निर्देशक उसूलों के अनुसार जांच पड़ताल और अध्ययन करना चाहिए तथा आर्थिक मोर्चे पर संघर्ष-आलोचना व खण्डन-रूपान्तर के कार्य में बहुत से नीति सम्बन्धी सवालों को सक्रिय और समुचित रूप से हल करना चाहिए। विभिन्न जातियों के जन समुदाय की क्रान्तिकारी पहलकदमी और सृजनशीलता का पूर्ण विकास करना चाहिए, दृढ़ता के साथ क्रान्ति चलाना और जोरदार तरीके से उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए तथा राष्ट्रीय अर्थतंत्र का विकास करने की योजना को पूरा करना या उसके निर्धारित लक्ष्यों को पार करना चाहिए। यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में प्राप्त महान विजय की प्रेरणा से आर्थिक मोर्चे पर और हमारे समाजवादी निर्माण के तमाम कार्यों में जरूर लगातार नई छलांग के नजारे नजर आते रहेंगे।

5. हमारे देश में क्रान्ति की आखिरी विजय के बारे-में

यह सच है कि हमारे देश की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की विजय महान है, लेकिन यह हरगिज नहीं समझना चाहिए कि अब हम लम्बी तान कर सो सकते हैं। अक्तूबर 1968 में अध्यक्ष माओ ने अपनी बातचीत के दौरान बताया था: **"हम महान विजय प्राप्त कर चुके हैं लेकिन पराजित वर्ग अवश्य ही हाथ-पैर मारेगा। ये लोग अब भी मौजूद हैं और यह वर्ग अब भी मौजूद है। इसलिए हम आखिरी विजय नहीं कह सकते। यहां तक कि कई दशाब्दियों तक हम यह नहीं कह सकते। हमें अपनी सतर्कता को नहीं खो बैठना चाहिए। लेनिनवादी दृष्टिकोण के अनुसार, किसी एक समाजवादी देश की आखिरी विजय के लिए न सिर्फ इस बात की जरूरत होती है कि उसी देश का सर्वहारा वर्ग और विशाल जन-समुदाय प्रयत्न करे, बल्कि यह तकाजा भी है कि विश्व-क्रान्ति भी विजय प्राप्त करे, पूरी पृथ्वी पर मानव द्वारा मानव का शोषण करने की व्यवस्था का खात्मा हो, जिससे कि सारी मानव जाति मुक्त हो जाए। इसलिए बिना सोचे समझे हमारे देश की क्रान्ति की आखिरी विजय के बारे में कहना गलत है, लेनिनवाद के खिलाफ है और तथ्यों से भी मेल नहीं खाता।"** वर्ग संघर्ष में पुनरावृत्ति अवश्य होगी। हमें वर्ग-संघर्ष हरगिज नहीं भूलना चाहिए। इस तरह नीतियों को कार्यान्वित करने के दौरान दो कार्यदिशाओं के बीच का संघर्ष फिर भी मौजूद रहता है और उसमें "वामपंथ" की तरफ से या दक्षिणपंथ की तरफ से बाधाएं आएंगी। संघर्ष आलोचना व खण्डन–रूपान्तर की विभिन्न मंजिलों से सम्बन्धी कार्यों को अच्छी तरह पूरा करने के लिए और भी ज्यादा कोशिशें करने की जरूरत है। हमें चाहिए कि अध्यक्ष माओ का घनिष्ठता के साथ अनुसरण करें, विशाल क्रान्तिकारी जन समुदाय पर पूरा भरोसा रखें, तथा आगे के रास्ते में घुमावों और कठिनाइयों को दूर करते हुए, समाजवादी कार्य में और भारी विजय प्राप्त करें।

6. पार्टी को सुदृढ़ बनाने और उसका निर्माण करने के बारे में

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की विजय से हमें यह मूल्यवान अनुभव प्राप्त हुआ है कि सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थिति में पार्टी का निर्माण कैसे किया जाए। जैसा कि अध्यक्ष माओ ने समूची पार्टी को बताया है: **"पार्टी-संगठन को सर्वहारा वर्ग में से आगे बढ़े हुए तत्वों से बनना चाहिए; उसे ओजस्विता व जीवन-शक्ति से भरपूर एक ऐसा हिरावल संगठन होना चाहिए जो वर्ग-शत्रु के खिलाफ लड़ने में सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी जन-समुदाय का नेतृत्व कर सके।"** अध्यक्ष माओ की इस हिदायत ने हमारी पार्टी को सुदृढ़ बनाने और हमारी पार्टी का निर्माण करने की राजनीतिक दिशा तय की है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी हमारे महान नेता अध्यक्ष माओ की शिक्षा-दीक्षा में पली-बढ़ी पार्टी है। 1921 में अपना जन्म होने के बाद हमारी पार्टी सशस्त्र शक्ति से राजनीतिक सत्ता छीनने और सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने के दीर्घकालीन संघर्ष से गुजरी है। अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में हमारी पार्टी शुरू से ही सदा क्रान्तिकारी युद्ध और क्रान्तिकारी संघर्ष के सबसे अग्रिम मोर्चे पर डटी रहती है। अध्यक्ष माओ की सही कार्यदिशा के ही मार्गदर्शन में हमारी पार्टी, ऐसी हालत में जबकि देश-विदेश के दुश्मन बेहद शक्तिशाली थे और परिस्थिति बेहद पेचीदा थी, चीन के सर्वहारा वर्ग और व्यापक जन-समुदाय का नेतृत्व करके, **स्वतंत्रता व पहलकदमी और स्वावलम्बन** के निर्देशक उसूलों पर डटी रहकर, शहीदों के हाथों से झण्डा लेकर उसे लगातार बुलन्द रखते हुए वीरता के साथ संघर्ष करती आई है, तब जाकर हमारी यह पार्टी, शुरू के केवल चन्द दर्जन सदस्यों वाले कम्युनिस्ट ग्रुपों से विकसित होकर आज शक्तिशाली चीन लोक गणराज्य का नेतृत्व करने वाली महान, गौरवमय और सही पार्टी बन गई है। हम गहराई के साथ यह समझते हैं कि जनता के सशस्त्र संघर्ष के बिना न आज की चीनी कम्युनिस्ट पार्टी रहती, न आज का चीन लोक गणराज्य रहता। हमें सदा अध्यक्ष माओ की यह शिक्षा याद रखनी चाहिए: **"खून बहाकर प्राप्त यह अनुभव सारी पार्टी के कामरेडों को नहीं भूलना चाहिए।"**

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की तमाम कामयाबियां अध्यक्ष माओ के विवेकपूर्ण नेतृत्व का फल हैं और माओ त्सेतुङ विचारधारा की विजय हैं। पिछली आधी शताब्दी में अध्यक्ष माओ ने चीन की सभी जातियों की जनता के नव-जनवादी क्रान्ति को पूरा करने के महान संघर्ष का नेतृत्व करने में, तथा साम्राज्यवाद, आधुनिक संशोधनवाद और विभिन्न देशों के प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ मौजूदा युग के अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के महान संघर्ष में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की विश्वव्यापी सच्चाई को क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिलाया है, राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक क्षेत्रों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को विरासत के रूप में ग्रहण किया है, उसकी रक्षा की है और उसका विकास किया है, तथा उसे पहले से ज्यादा ऊंची एक बिल्कुल नई मंजिल में पहुंचा दिया है। माओ त्सेतुङ विचारधारा एक ऐसे युग का मार्क्सवाद-लेनिनवाद है जिसमें साम्राज्यवाद अपने पूर्ण विनाश की ओर जा रहा है और समाजवाद विश्वव्यापी विजय की ओर अभियान कर रहा है। हमारी पार्टी के सारे इतिहास ने यह सच्चाई जाहिर की है कि अध्यक्ष माओ के नेतृत्व और माओ त्सेतुङ विचारधारा से अलग होने पर हमारी पार्टी को असफलताओं का सामना करना पड़ता है और हार खानी पड़ती है; अध्यक्ष माओ का घनिष्ठता के साथ अनुसरण करने पर वह आगे बढ़ती और विजयी होती रहती है। हमें इस अनुभव को सदा याद रखना चाहिए। किसी भी समय, किसी भी स्थिति में, जो कोई अध्यक्ष माओ का विरोध करे, माओ त्सेतुङ विचारधारा का विरोध करे, तो सारी पार्टी व सारा देश उसकी कड़ी निन्दा करेगा और उसको धराशायी कर देगा।

पार्टी के सुदृढ़ीकरण व निर्माण का जिक्र करते समय अध्यक्ष माओ ने यह कहा है: **"आदमी के शरीर में धमनियां और शिराएं होती हैं जिनके जरिए हृदय खून का संचार करता है, और वह फेफड़ों के जरिए सांस लेता है, कार्बन-डाइआक्साइड छोड़ता है और ताजा आक्सीजन लेता है। यह है फालतू व बेकार को त्याग देना और नए**

व ताजे को ग्रहण करना। इसी तरह, एक सर्वहारा पार्टी तब ही ओजस्विता व जीवन-शक्ति से भरपूर हो सकती है, जब वह भी फालतू व बेकार को त्याग दे और नए व ताजे को ग्रहण करे। फालतू कचरे का त्याग किए बगैर और नया खून ग्रहण किए बगैर पार्टी ओजपूर्ण नहीं हो सकती।" अध्यक्ष माओ ने इस सजीव उपमा से पार्टी के भीतर अन्तरविरोध के द्वन्द्ववाद की व्याख्या की है। **"वस्तुओं में अन्तरविरोध का नियम, यानी विपरीत तत्वों की एकता का नियम, भौतिकवादी द्वन्द्ववाद का सबसे बुनियादी नियम है।"** पार्टी के भीतर दो कार्यदिशाओं के बीच विरोध और संघर्ष समाज में वर्गों के अन्तरविरोधों और नए व पुराने के अन्तरविरोधों को पार्टी में प्रतिबिम्बित करता है। अगर पार्टी के अन्दर अन्तरविरोध न हों और उन्हें हल करने के लिए संघर्ष न चलाए जाएं, तथा फालतू व बेकार को त्याग न दिया जाए और नए व ताजे को ग्रहण न किया जाए, तो पार्टी की जिन्दगी खत्म हो जाएगी। पार्टी के भीतर अन्तरविरोध के बारे में अध्यक्ष माओ का सिद्धान्त पार्टी के सुदृढ़ीकरण व निर्माण का मूल निर्देशक विचार है और रहेगा।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास अध्यक्ष माओ की मार्क्सवादी-लेनिनवादी कार्यदिशा के द्वारा पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी और "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशाओं के खिलाफ संघर्ष करने का ही इतिहास है। अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में हमारी पार्टी ने छन तू-श्यू की दक्षिणपंथी अवसरवादी कार्यदिशा को, छ्वी छ्यू-पाए और ली ली-सान की "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशाओं को, वाङ मिङ की पहले "वामपंथी" बाद में दक्षिणपंथी अवसरवादी कार्यदिशाओं को, लाल सेना को छिन्न-भिन्न करने की चाङ क्वो-थाओ की कार्यदिशा को, तथा फङ तेह-ह्वाए, काओ काङ, राओ शू-श आदि लोगों के पार्टी विरोधी दक्षिणपंथी अवसरवादी गिरोह को पराजित किया, और लम्बे अरसे तक संघर्ष करने के बाद ल्यू शाओ-ची की प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी कार्यदिशा को भी चकनाचूर कर दिया है। हमारी पार्टी ठीक दो कार्यदिशाओं के बीच के संघर्ष में ही, विशेष रूप से छन तू-श्यू, वाङ और ल्यू शाओ ची के तीन गद्दार गुटों को, जो पार्टी के लिए सबसे अधिक हानिकारक थे, पराजित करने के संघर्ष में मजबूत,

विकसित और शक्तिशाली हो गई है।

सर्वहारा अधिनायकत्व के नए ऐतिहासिक काल में सर्वहारा वर्ग अपना अधिनायकत्व और तमाम कार्यों में अपना नेतृत्व अपने हिरावल दस्ते कम्युनिस्ट पार्टी-के जरिए लागू करता है। सर्वहारा अधिनायकत्व से अलग होकर, सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने से अलग होकर पार्टी-निर्माण के सवाल को, यानी इस सवाल को कि किस तरह की पार्टी का निर्माण किया जाए और पार्टी का निर्माण कैसे किया जाए, सही ढंग से हल करना नामुमकिन है।

पार्टी-निर्माण के बारे में ल्यू शाओ-ची की संशोधनवादी कार्यदिशा ने सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में मार्क्सवादी लेनिनवादी शिक्षा के और पार्टी निर्माण के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के मूल तत्व से ही गद्दारी की है। जब चीन की समाजवादी क्रान्ति गहराई के साथ विकसित होती जा रही थी और वर्ग-संघर्ष बेहद तीव्र हो रहा था, इसी महत्वपूर्ण समय पर ल्यू शाओ ची ने फिर एक बार अपनी "आत्म-उत्थान" के बारे में लिखी गई जहरीली पुस्तक प्रकाशित की। उसका उद्देश्य था हमारे देश के सर्वहारा अधिनायकत्व को उलट देना और बुर्जुआ अधिनायकत्व की पुनर्स्थापना करना। ल्यू शाओ ची ने सर्वहारा अधिनायकत्व की आवश्यकता के बारे में लेनिन की रचना से उस पैराग्राफ को, जिसका हवाला हम इस रिपोर्ट के शुरू में ही दे चुके हैं, उद्धृत करते समय जानबूझकर फिर एक बार इस सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष को कि **"सर्वहारा अधिनायकत्व लागू करना जरूरी हो जाता है"** काट दिया। इससे सर्वहारा अधिनायकत्व से गद्दारी करने का उसका प्रतिक्रान्तिकारी चेहरा स्पष्ट रूप से बेनकाब हो गया। इसके अलावा, ल्यू शाओ ची ये प्रतिक्रियावादी बेहूदा दलीलें भी फैलाता रहता था, जैसे "वर्ग-संघर्ष बुझ गया है" का सिद्धान्त "आज्ञाकारी साधन" का सिद्धान्त, "जन समुदाय पिछड़ा है" का सिद्धान्त, "अफसर बनने के लिए पार्टी में शामिल होने" का सिद्धान्त "पार्टी के भीतर क्रान्ति" का सिद्धान्त, "सार्वजनिक हितों और व्यक्तिगत हितों का मिलन" का सिद्धान्त (यानी "बड़े लाभ की खातिर छोटा हित त्याग देने" का सिद्धान्त), वगैरह वगैरह। उसको नाकाम

कोशिश यह थी कि हमारी पार्टी को नष्ट भ्रष्ट और छिन्न-भिन्न किया जाए, पार्टी-सदस्य जितना ज्यादा ''आत्म-उत्थान'' करें उतना ज्यादा संशोधनवादी बनें, मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी ''शान्तिपूर्ण विकास'' के जरिए संशोधनवादी पार्टी में बदल जाए, सर्वहारा अधिनायकत्व ''शान्तिपूर्ण विकास'' के जरिए बुर्जुआ अधिनायकत्व में बदल जाए। हमें लगातार जनव्यापी क्रान्तिकारी खण्डन करके उसकी सिलसिलेवार प्रतिक्रियावादी बेहूदा दलीलों के बुरे असर को पूरी तरह मिटा देना चाहिए।

मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति हमारी पार्टी के इतिहास में पार्टी को सुदृढ़ बनाने का एक सबसे व्यापक और सर्वहारा आन्दोलन है। विभिन्न स्तरों के पार्टी-संगठन और व्यापक पार्टी-सदस्य दो कार्यदिशाओं के बीच के तीव्र संघर्ष में तपे-तपाए हैं, बड़े पैमाने के वर्ग-संघर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं, तथा पार्टी के अन्दर और बाहर के क्रान्तिकारी जन-समुदाय की कसौटी पर पूरे-पूरे खरे उतरे हैं। इस प्रकार पार्टी-सदस्यों और कार्यकर्ताओं को तूफान का मुकाबला करने और दुनिया का सामना करने का मौका मिला और उनकी वर्ग चेतना व दो कार्यदिशाओं के बीच के संघर्ष के बारे में उनकी चेतना उन्नत हो गई है। इस महान क्रान्ति ने हमें यह बताया है कि सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत हमें व्यापक पार्टी-सदस्यों को वर्गों, वर्ग-संघर्ष और दो कार्यदिशाओं के बीच के संघर्ष के बारे में तथा क्रान्ति जारी रखने के बारे में शिक्षा देनी चाहिए, पार्टी के भीतर और बाहर संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए, गद्दारों, जासूसों और शोषक वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले तत्वों को पार्टी से निकाल बाहर कर देना चाहिए, और सर्वहारा वर्ग के उन सच्चे आगे बढ़े हुए तत्वों को जो क्रान्तिकारी तूफान की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं, पार्टी-सदस्य बनाना चाहिए। हमें प्रयत्नपूर्वक इस बात की गारण्टी करनी चाहिए कि विभिन्न स्तरों के पार्टी संगठनों का नेतृत्व सचमुच मार्क्सवादियों के हाथों में रहे। हमें पार्टी सदस्यों को इस योग्य बनाना चाहिए कि वे सचमुच सिद्धान्त को ठोस व्यवहार के साथ मिलाएं, जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम रखें और आलोचना व आत्मालोचना करने का साहस बांधें। हमें पार्टी-सदस्यों को इस योग्य बनाना चाहिए कि वे हमेशा नम्र और विवेकशील होने, घमण्ड व उतावलेपन से बचने की कार्यशैली तथा सादा जीवन बिताने व कठोर संघर्ष करने की कार्यशैली बनाए रखें। केवल ऐसा करने से ही पार्टी सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी जन-समुदाय का नेतृत्व करके समाजवादी क्रान्ति को अन्त तक चला सकेगी।

अध्यक्ष माओ ने हमें शिक्षा दी है: **''ऐतिहासिक अनुभव ध्यान देने योग्य है। कार्यदिशा और दृष्टिकोण की अक्सर व बारम्बार चर्चा की जानी चाहिए। केवल चन्द लोगों को बताने से काम नहीं चलेगा; उनसे विशाल क्रान्तिकारी जन-समुदाय को वाकिफ कराना चाहिए।''** मौजूदा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के बुनियादी अनुभव का अध्ययन और प्रचार, दो कार्यदिशाओं के बीच के संघर्ष के इतिहास का अध्ययन और प्रचार, तथा सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने के बारे में अध्यक्ष माओ के सिद्धान्त का अध्ययन और प्रचार केवल एक ही बार नहीं, बल्कि हर साल, हर महीने और हर रोज बार-बार किया जाना चाहिए। केवल ऐसा करने से ही, गलत कार्यदिशा और गलत रुझान का उदय होते ही व्यापक पार्टी सदस्य और जन-समुदाय इनका खण्डन और बहिष्कार कर सकेंगे और यह गारण्टी की जा सकेगी कि हमारी पार्टी सदा अध्यक्ष माओ द्वारा निर्दिष्ट सही मार्ग पर विजयपूर्वक आगे बढ़ती जाएगी।

पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यसूची में एक महत्वपूर्ण विषय पार्टी-संविधान का संशोधन करना है। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने पार्टी-संविधान के मसौदे को कांग्रेस में विचार-विनिमय करने के लिए पेश किया है। यह मसौदा समूची पार्टी और सारे देश के क्रान्तिकारी जन समुदाय ने एक साथ मिलकर तैयार किया है। नवम्बर 1967 में अध्यक्ष माओ ने राय दी कि बुनियादी पार्टी संगठन पार्टी-संविधान का संशोधन करने के काम में भाग लें। तब से पार्टी की केन्द्रीय कमेटी को हजारों मसौदे प्राप्त हुए। इस बुनियाद पर पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के विस्तृत बारहवें पूर्ण अधिवेशन ने पार्टी संविधान का मसौदा तैयार किया। इसके बाद सारी पार्टी, सारी सेना और सारे देश के व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय ने फिर एक बार उत्साह और संजीदगी के साथ

विचार विनिमय किया। यह कहा जा सकता है कि पार्टी के नए संविधान का मसौदा महान नेता अध्यक्ष माओ के विवेकपूर्ण नेतृत्व के व्यापक जन समुदाय के साथ मिलने की उपज है। यह सारी पार्टी, सारी सेना, और सारे देश के व्यापक क्रान्तिकारी जन समुदाय का संकल्प प्रतिबिम्बित करता है, और जनवादी केन्द्रीयता और जनदिशा का, जिन्हें पार्टी हमेशा से ही अविचल रूप से लागू करती आई है, एक सजीव प्रतीक भी है। खास महत्वपूर्ण बात यह है कि पार्टी के संविधान के मसौदे में फिर एक बार स्पष्ट रूप से यह तय किया गया है कि पार्टी के विचार का मार्गदर्शन करने वाला सैद्धान्तिक आधार मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ त्सेतुङ विचारधारा है। यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति द्वारा ल्यू शाओ-ची की पार्टी निर्माण की संशोधनवादी कार्यदिशा को चकनाचूर करने में प्राप्त महान विजय है, मार्क्सवाद लेनिनवाद माओ-त्सेतुङ विचारधारा की महान विजय है। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी को यह विश्वास है कि कांग्रेस में नए पार्टी संविधान पर विचार-विनिमय करने और इसे स्वीकृत करने के बाद हमारी पार्टी इसके नियमों के अनुसार निश्चय ही अपने आप को पहले से और ज्यादा महान और ज्यादा गौरवमय, और ज्यादा सही पार्टी के रूप में निर्मित कर लेगी।

7. विदेशों के साथ हमारे देश के सम्बन्धों के बारे में

यहां हम विदेशों के साथ हमारे देश के सम्बन्धों के बारे में विशेष रूप से कुछ बताना चाहते हैं।

विश्व सर्वहारा वर्ग और उत्पीड़ित जनता व उत्पीड़ित राष्ट्रों के क्रान्तिकारी संघर्ष हमेशा एक दूसरे का समर्थन करते हैं। अलबानियाई श्रमिक पार्टी और तमाम अन्य सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी बिरादराना पार्टियों व बिरादराना संगठनों, सारी दुनिया के व्यापक सर्वहारा वर्ग व क्रान्तिकारी जनता, तथा बहुत से मित्र-देशों, मित्र संगठनों और मैत्रीपूर्ण व्यक्तियों ने हमारे देश की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की गर्मजोशी

के साथ तारीफ और समर्थन किया है। यहां मैं महान नेता अध्यक्ष माओ और पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस की तरफ से उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं। साथ ही हम दृढ़ता से यह विश्वास दिलाते हैं कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता निश्चय ही अपने सर्वहारा अन्तरराष्ट्रवादी कर्तव्य को निभाएगी तथा उनके साथ साम्राज्यवाद, आधुनिक संशोधनवाद और विभिन्न देशों के प्रतिक्रियावादियों का विरोध करने के महान संघर्ष को अन्त तक चलाएगी।

आज की दुनिया की आम प्रवृत्ति वैसी ही है जैसे अध्यक्ष माओ ने वर्णन किया था: **"दुश्मन दिन-ब-दिन सड़ते-गलते जा रहे हैं, जबकि हमारे लिए स्थिति दिन-ब-दिन बेहतर होती जा रही है।"** एक तरफ, सारी दुनिया के सर्वहारा आन्दोलन प्रचण्ड रूप से उभरते जा रहे हैं। वियतनाम के दक्षिणी भाग, लाओस, थाइलैण्ड, बर्मा, मलाया, इण्डोनेशिया, भारत, फिलस्तीन और एशिया, अफरीका तथा लातिन अमरीका के अन्य देशों और क्षेत्रों की जनता के सशस्त्र संघर्ष दिन-ब-दिन विकसित होते जा रहे हैं। **"राजनीतिक सत्ता का जन्म बन्दूक की नली से होता है"**, इस सच्चाई को व्यापक उत्पीड़ित जनता और उत्पीड़ित राष्ट्र दिन-ब-दिन और ज्यादा आत्मसात करते जा रहे हैं। जापान, पश्चिमी यूरोप और उत्तर अमरीका में, जो पूंजीवाद के "हृदय" क्षेत्र हैं, अभूतपूर्व बड़े पैमाने के क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन छिड़ गए हैं। अधिकाधिक जनता जागृत होती जा रही है। सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी बिरादराना पार्टियां और बिरादराना संगठन मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अपने-अपने देश के ठोस क्रान्तिकारी व्यवहार के साथ मिलाने के दौरान कदम-ब-कदम विकसित होते जा रहे हैं। दूसरी तरफ अमरीकी साम्राज्यवाद और सोवियत संशोधनवादी सोशल-साम्राज्यवाद राजनीतिक और आर्थिक संकटों में फंस गए हैं, और घरेलू व बाहरी विपत्तियों के दो पाटों में पिसते हुए बेबसी की हालत में पड़ गए हैं। दुनिया को नए सिरे से बांटने की कुचेष्टा में जहां वे एक दूसरे के साथ सांठगांठ करते हैं, वहां वे एक दूसरे से छीना झपटी भी करते हैं। वे चीन, कम्युनिज्म और जनता का विरोध करने, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का दमन करने और हमलावर युद्ध छेड़ने में एक दूसरे का साथ देते हैं

और आपस में सांठगांठ कर दुष्कर्म करते हैं। कच्चे माल, मण्डी, अधीन देश और महत्वपूर्ण रणनीतिक स्थान छीनने तथा प्रभाव क्षेत्र बांटने में वे एक दूसरे के खिलाफ दांव-पेंच खेलते हैं और एक दूसरे को परास्त करने की हरचन्द कोशिश करते हैं। अपनी-अपनी कुआकांक्षा पूरी करने की नाकाम कोशिश में वे सैन्य-विस्तार और युद्ध की तैयारी कर रहे हैं।

लेनिन ने बताया है कि साम्राज्यवाद का मतलब है युद्ध। "**ऐसी आर्थिक व्यवस्था में जबकि उत्पादक साधन में निजी मिलकियत मौजूद रहती है, साम्राज्यवादी युद्ध सर्वथा अनिवार्य होता है।**" ("लेनिन ग्रन्थावली", चीनी संस्करण, ग्रन्थ 22, पृष्ठ 182) लेनिन ने आगे चलकर यह भी बताया है: "**साम्राज्यवादी युद्ध समाजवादी क्रान्ति की पूर्ववेला है।**" ("लेनिन ग्रन्थावली", चीनी संस्करण, ग्रन्थ 25, पृष्ठ 349) लेनिन के ये वैज्ञानिक निष्कर्ष पुराने कतई नहीं हुए हैं। हाल ही में अध्यक्ष माओ ने यह बताया है: "**जहां तक विश्वयुद्ध का ताल्लुक है, उसकी केवल दो सम्भावनाएं हैं: एक तो यह कि युद्ध क्रान्ति को उभार दे, और दूसरी यह कि क्रान्ति युद्ध को रोक दे।**" इसका कारण यह है कि आज की दुनिया में चार बड़े अन्तरविरोध मौजूद हैं: एक तरफ उत्पीड़ित राष्ट्रों और दूसरी तरफ साम्राज्यवाद व सोशल-साम्राज्यवाद के बीच का अन्तरविरोध; पूंजीवादी और संशोधनवादी देशों में सर्वहारा वर्ग और पूंजीवादी वर्ग के बीच का अन्तरविरोध; साम्राज्यवादी देशों और सोशल-साम्राज्यवादी देश के बीच का तथा विभिन्न साम्राज्यवादी देशों के बीच का अन्तरविरोध; तथा एक तरफ समाजवादी देशों और दूसरी तरफ साम्राज्यवादी देशों व सोशल साम्राज्यवादी देश के बीच का अन्तरविरोध। इन अन्तरविरोधों के अस्तित्व और विकास के कारण अनिवार्य रूप से क्रान्ति छिड़ जाती है। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के ऐतिहासिक अनुभवों को देखते हुए निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि यदि साम्राज्यवादी, संशोधनवादी और प्रतिक्रियावादी दुनिया की जनता के सिर पर जबरदस्ती तीसरा विश्वयुद्ध थोप दें, तो नतीजा केवल यही होगा कि उपरोक्त अन्तरविरोध बहुत तेजी से विकसित हो जाएंगे, सारी दुनिया की जनता उठकर क्रान्ति चलाएगी और साम्राज्यवादियों,

संशोधनवादियों व प्रतिक्रान्तिवादियों के पूरे गिरोह को दफना देगी।

अध्यक्ष माओ हमें शिक्षा देते हैं: "**तमाम प्रतिक्रियावादी कागजी बाघ हैं।**" "**रणनीति की दृष्टि से हमें सभी दुश्मनों को नाचीज समझना चाहिए, और कार्यनीति की दृष्टि से हमें सभी दुश्मनों का पूरा-पूरा ब्यौरा नजर में रखना चाहिए।**" अध्यक्ष माओ द्वारा प्रतिपादित इस महान सच्चाई से सारी दुनिया की जनता के क्रान्तिकारी जुझारू संकल्प को बढ़ावा मिलता है और उसके मार्गदर्शन में हम साम्राज्यवाद, संशोधनवाद और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ संघर्ष में लगातार विजय प्राप्त करते जा रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद की कागजी बाघ होने की प्रकृति का भण्डाफोड़ सारी दुनिया की जनता बहुत पहले ही कर चुकी है। सारी दुनिया की जनता का यह सबसे क्रूर दुश्मन, अमरीकी साम्राज्यवाद दिन-ब-दिन पतनोन्मुख होता जा रहा है। सत्तारूढ़ होने के बाद, निक्सन को जगह-जगह हंगामों और मायूसी से भरी स्थिति का और ऐसे आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा है जिससे बचने के लिए कोई उपाय नहीं है, उसे सारी दुनिया की जनता और अपने देश के जन-समुदाय के जबरदस्त विरोध का सामना करना पड़ा है, और साम्राज्यवादी देशों के छिन्न-भिन्न होने तथा अमरीकी साम्राज्यवाद के डण्डे का जोर अधिकाधिक कम होने की कठिन हालत का सामना करना पड़ा है। सवाल हल करने के लिए निक्सन को कोई उपाय नहीं है। बेबस होकर वह अपने पूर्वाधिकारियों के समान लगातार प्रतिक्रान्तिकारी दुरंगी चाल चलने लगता है। दिखावट में तो वह "शान्तिप्रिय" होने का रूप धारण करता है, वास्तव में वह और ज्यादा बड़े पैमाने पर सैन्य-विस्तार और युद्ध छेड़ने की तैयारी कर रहा है। अमरीका का सैन्य-व्यय साल पर साल बढ़ता जा रहा है। अमरीकी साम्राज्यवादी आज तक हमारे देश की प्रादेशिक भूमि थाइवान पर कब्जा किए बैठे हैं। उन्होंने अपनी हमलावर सेना को बहुत से देशों में भेज दिया है और दुनिया के विभिन्न स्थानों में सैकड़ों हजारों फौजी अड्डे और सैनिक संस्थान कायम किए हैं उन्होंने इतने ज्यादा विमान, तोपें, इतने ज्यादा न्यूक्लीयर बम और गाइडेड मिसाइल तैयार कर रखे हैं। ये सब

जिनकी गौरवमय क्रान्तिकारी परम्परा है, उठ खड़े होकर इन मुट्ठीभर गद्दारों के गुट का तख्ता जरूर उलट देंगे। जैसा कि अध्यक्ष माओ ने बताया है: **"सोवियत संघ पहला समाजवादी राज्य था, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी लेनिन के हाथों स्थापित की गई थी। हालांकि सोवियत संघ की पार्टी और राज्य का नेतृत्व अब संशोधनवादियों द्वारा हथिया लिया गया है, फिर भी मैं कामरेडों को यह सलाह देता हूं कि वे इस बात का पक्का विश्वास रखें कि सोवियत संघ की विशाल जनता, विशाल पार्टी-सदस्य और कार्यकर्ता अच्छे हैं, वे क्रान्ति करना चाहते हैं। संशोधनवादी शासन ज्यादा दिन नहीं रहेगा।"**

सोवियत सरकार ने अपने ही हाथों हमारे देश की प्रादेशिक भूमि चनपाओ द्वीप पर सशस्त्र अतिक्रमण करने की वारदात खड़ी कर दी है, इसी कारण चीन-सोवियत सीमा-सवाल ने सारी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। हमारे देश और हमारे अन्य पड़ोसी देशों के बीच की सीमा-समस्याओं की ही तरह चीन सोवियत सीमा-सवाल भी इतिहास द्वारा छोड़ा गया है। इन सवालों के प्रति हमारी पार्टी और सरकार का हमेशा से यह मत रहा है कि इन्हें न्यायोचित ढंग से हल करने के लिए राजनयिक रास्ते के जरिए वार्ता की जाए। हल किए जाने के पहले, मुठभेड़ से बचने के लिए सीमावर्ती इलाके की यथापूर्व स्थिति बरकरार रखी जाए। इस मत के मुताबिक हमारे देश ने क्रमशः बर्मा, नेपाल, पाकिस्तान, मंगोलिया, अफगानिस्तान आदि पड़ोसी देशों के साथ सीमा-सवालों को सन्तोषजनक तौर पर व सफलता पूर्वक हल किया। केवल सोवियत संघ और चीन के बीच तथा भारत और चीन के बीच के सीमा-सवाल आज तक हल नहीं हो पाए हैं।

चीन भारत सीमा सवाल के बारे में चीन सरकार ने भारत सरकार के साथ अनेक बार वार्ताएं की हैं। मगर चूंकि प्रतिक्रियावादी भारत सरकार ने बरतानवी साम्राज्यवाद की आक्रमणकारी नीति विरासत के रूप में ग्रहण कर ली, इसलिए वह इस बात पर अड़ी रही कि हम गैरकानूनी "मैकमहोन लाइन" मान लें, जिसे पुराने चीन की विभिन्न शासन-काल की प्रतिक्रियावादी सरकारों तक ने भी नहीं माना था, इतना ही नहीं, उसने

एक कदम और आगे बढ़कर चीन के प्रशासन में हमेशा से रहने वाले आक्साइ छिन इलाके पर भी कब्जा करने की नाकाम कोशिश की। इस तरह उसने चीन-भारत सीमा वार्ता को भंग कर दिया। यह बात तो सब लोग जानते हैं।

चीन सोवियत सीमा सवाल चीन के खिलाफ जारशाही रूस के साम्राज्यवादी आक्रमण की उपज है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जबकि चीन और रूस, दोनों देशों की जनता के हाथ में राजसत्ता नहीं थी, जारशाही सरकार ने चीन का बंटवारा करने के लिए साम्राज्यवादी आक्रमणकारी हरकतें कीं, चीन पर सिलसिलेवार असमान सन्धियों को जबरदस्ती थोप दिया, चीन की विशाल प्रादेशिक भूमि को छीन लिया, बहुत सी जगहों में असमान सन्धियों द्वारा निर्धारित सीमा-रेखा तक को भी पार किया तथा और एक कदम आगे बढ़कर चीन की प्रादेशिक भूमि को हड़प लिया। इस तरह की लुटेरों की हरकतों की निन्दा मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन ने रोष के साथ की थी। 27 सितम्बर 1920 को महान लेनिन के नेतृत्व में चलने वाली सोवियत सरकार ने बड़ी गम्भीरता के साथ यह ऐलान किया था: "विभिन्न शासन-काल की भूतपूर्व रूसी सरकारों ने चीन के साथ जो भी सन्धियां की थीं, वे सबकी सब रद्द व अप्रभावी हो गई हैं, और वह तमाम छीनी गई चीनी भूमि व चीन में रूस द्वारा लिए गए सभी रियायती इलाकों को त्याग देती है और जारशाही सरकार व रूसी पूंजीपति वर्ग द्वारा चीन से क्रूरता के साथ लूटी गई हर चीज को बिना किसी मुआवजे के और सदा के लिए चीन को लौटा देती है।" (देखिए, "चीन सरकार के प्रति रूसी समाजवादी संघीय सोवियत गणराज्य की सरकार का घोषणा-पत्र") उस समय की ऐतिहासिक स्थिति की ही वजह से, लेनिन की इस सर्वहारा नीति को साकार नहीं किया जा सका।

22 अगस्त और 21 सितम्बर 1960 को ही चीन सरकार ने सीमा-सवाल के प्रति अपने हमेशा के रुख के अनुसार चीन-सोवियत सीमा-सवाल को हल करने के लिए दो बार पहलकदमी से सोवियत सरकार के सामने वार्ता करने का प्रस्ताव रखा था। 1964 में, चीन और सोवियत संघ दोनों पक्षों ने पेकिङ में वार्ता शुरू की। हालांकि चीन और

सोवियत संघ की मौजूदा सीमा से सम्बन्धित सन्धियां ऐसी असमान सन्धियां हैं जो जारशाहों ने चीनी जनता पर जबरदस्ती थोपी थीं, फिर भी चीन और सोवियत संघ दोनों देशों की जनता की क्रान्तिकारी दोस्ती की हिफाजत करने की इच्छा से प्रेरित होकर हमने इस बात का पक्षपोषण किया कि ये सन्धियां सीमा-सवाल को हल करने के आधार के रूप में मानी जाएं। लेकिन, सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट ने लेनिन की सर्वहारा नीति के साथ गद्दारी कर दी, वह नए जारशाह के सोशल-साम्राज्यवाद के रुख पर अड़ा रहा, और इस बात से इन्कार किया कि वे सन्धियां असमान सन्धियां हैं। इतना ही नहीं, उसने बड़ी धृष्टता के साथ हठधर्मी की कि चीन अपनी उस तमाम प्रादेशिक भूमि पर, जिसे उन्होंने इन सन्धियों तक का उल्लंघन करके कब्जे में रखा है या कब्जे में रखने की कोशिश की है, सोवियत संघ का स्वामित्व माने। सोवियत सरकार के इस महाराष्ट्र-शोविनिज्म व सोशल-साम्राज्यवादी रुख की वजह से वार्ता भंग हो गई।

ब्रेजनेव के सत्तारूढ़ होने के बाद, सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट ने दुगुनी ताकत लगाकर सीमावर्ती इलाके की यथापूर्व स्थिति को भंग करने का भरसक प्रयत्न किया। उसने बारम्बार सीमा-वारदातें खड़ी कर दीं, हमारे निहत्थे मछुओं और किसानों को गोली से मार डाला, और हमारे देश की प्रभुसत्ता का उल्लंघन किया। हाल ही में उसने दो हाथ और आगे बढ़कर बार-बार हमारे देश की प्रादेशिक भूमि चनपाओ द्वीप पर सशस्त्र अतिक्रमण किया। ऐसी हालत में जबकि मामला बर्दाश्त के बाहर हो गया, तब हमारी सीमा रक्षक टुकड़ियों ने आत्मरक्षार्थ जवाबी प्रहार कर हमलावरों को समुचित आघात पहुंचाया और विजय के साथ अपने देश की पवित्र प्रादेशिक भूमि की हिफाजत की। सांप छछूंदर की सी कठिन हालत से छुटकारा पाने के लिए 21 मार्च को कोसीगिन ने हमारे नेताओं से फोन के जरिए सम्पर्क करने की मांग पेश की। जवाब में 22 मार्च को हमारी सरकार ने फौरन एक मेमोरेंडम दे दिया जिसमें साफ बताया गया कि "चीन और सोवियत संघ के बीच के मौजूदा सम्बन्धों को देखते हुए फोन के जरिए सम्पर्क करना अनुचित है, अगर सोवियत सरकार कुछ कहना चाहती हो, तो वह राजनयिक रास्ते के जरिए औपचारिक रूप से चीन सरकार को बताए।" 29 मार्च को सोवियत सरकार ने एक बयान जारी किया जिसमें वह एक तरफ अपने कट्टर हमलावरों के रुख पर अड़ी रही तो, दूसरी तरफ उसने "सलाह-मशविरा" फिर से शुरू करने की इच्छा जाहिर की। इसका जवाब देने का हमारी सरकार विचार कर रही है।

हमारी पार्टी और सरकार की विदेश नीति हमेशा से इस प्रकार रही है: सर्वहारा अन्तरराष्ट्रवाद के उसूल पर समाजवादी देशों के साथ मैत्री, आपसी सहायता व सहयोग के सम्बन्धों का विकास करना; तमाम उत्पीड़ित जनता व उत्पीड़ित राष्ट्रों के क्रान्तिकारी संघर्षों का समर्थन व सहायता करना; प्रादेशिक भूमि की अखण्डता व प्रभुसत्ता का आपसी सम्मान करने, एक दूसरे पर आक्रमण न करने, एक दूसरे के घरेलू मामलों में दखल न देने, समानता व आपसी लाभ और शान्तिपूर्ण सहजीवन के लिए कोशिश करना तथा साम्राज्यवाद की आक्रमणकारी नीति और युद्धनीति का विरोध करना। हमारी सर्वहारा विदेश नीति किसी एक समय के लिए अपनाई जाने वाली काम चलाऊ नीति नहीं है, बल्कि वह एक दीर्घकालीन नीति है, जिस पर हम डटे रहते हैं। पहले हमने ऐसा किया था और भविष्य में भी ऐसा करने पर डटे रहेंगे।

हम हमेशा से इस बात का पक्ष पोषण करते आए हैं कि विभिन्न देशों के अन्दरूनी मामले विभिन्न देशों की जनता द्वारा खुद ही निपटाए जाने चाहिए। सभी देशों को, चाहे वे बड़े हों या छोटे, और पार्टियों को, चाहे वे बड़ी हों या छोटी पारस्परिक सम्बन्धों को समानता व एक दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दखल न देने के उसूलों के आधार पर कायम करना चाहिए। इन मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसूलों की हिफाजत करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने लम्बे अरसे से सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट के घृणित महाराष्ट्र शोविनिज्म के खिलाफ संघर्ष किया है। यह सर्वविदित तथ्य है। सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट "बिरादराना पार्टियों" और "बिरादराना देशों" का जाप करता है, लेकिन असल में वह अपने को पितृ-पार्टी समझता है, और जो मनमाने तौर पर दूसरे देशों की प्रादेशिक भूमि पर आक्रमण कर सकता है और कब्जा जमा सकता है। ये गद्दार न

केवल चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अलबानियाई श्रमिक पार्टी आदि सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों के खिलाफ तोड़फोड़ व उन्मूलनकारी कार्यवाही करते हैं, बल्कि उन सभी पार्टियों के प्रति और तथाकथित "बड़ी समाजवादी कम्युनिटी" में से उन सभी देशों के प्रति जो उनसे थोड़ा-बहुत मतभेद रखते हैं, उन्हें अपना खूंखार चेहरा दिखाते हुए डराते-धमकाते हैं और दमन, तोड़फोड़ व उन्मूलनकारी कार्यवाही करते हैं, यहां तक कि अपने तथाकथित "बिरादराना देशों" में फौज भेजकर अधिकार करने, अपनी तथाकथित "बिरादराना पार्टियों" के सदस्यों का अपहरण करने तक के सभी काले करतूत कर सकते हैं। उन्हें अपनी इन फासिस्ट डकैती कार्यवाहियों से अनिवार्य रूप से सर्वनाश का फल भुगतना ही पड़ेगा।

अमरीकी साम्राज्यवाद और सोवियत संशोधनवाद हमेशा चीन को अलगाव में डालने की हरचन्द कोशिश करते हैं, यह चीन के लिए गौरव की बात है। उनके द्वारा पागलपन के साथ चीन का विरोध किए जाने से हमारा बाल तक बांका नहीं होता, इसके ठीक विपरीत, इससे हमारे देश की जनता में स्वतंत्रता व पहलकदमी और स्वावलम्बन कायम रखने और देश की समृद्धि के लिए कठोर संघर्ष करने की भावना उभर आती है; इससे सारी दुनिया के सामने यह साबित हो जाता है कि चीन ने अपने और अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत संशोधनवाद के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींची है। आज, जो दुनिया का भाग्य तय करता है, वह साम्राज्यवाद, संशोधनवाद और प्रतिक्रियावाद नहीं, बल्कि सभी देशों के सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी जनता ही है। विभिन्न देशों की सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियां व संगठन, जो सर्वहारा वर्ग में से आगे बढ़े हुए तत्वों से बने हैं, एक ऐसी उदीयमान नवजात शक्ति है, जिसका अत्यन्त उज्जवल भविष्य है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दृढ़तापूर्वक उनके साथ एकता पर कायम रहेगी और कन्धे से कन्धा मिलाकर संघर्ष करती रहेगी। हम साम्राज्यवाद और संशोधनवाद के खिलाफ अलबानियाई जनता के संघर्ष का दृढ़ समर्थन करते हैं, अमरीकी आक्रमण का मुकाबला करने और देश को बचाने के युद्ध को अन्त तक चलाने में वियतनामी जनता का

दृढ़ समर्थन करते हैं, लाओस, थाइलैण्ड, बर्मा, मलाया, इण्डोनेशिया, भारत, फिलस्तीन और एशिया, अफरीका व लातिन अमरीका के अन्य देशों व क्षेत्रों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों का दृढ़ समर्थन करते हैं, अमरीकी सर्वहारा वर्ग, नौजवान विद्यार्थियों और अफ्रो-अमरीकी जन-समुदाय द्वारा अमरीकी शासक गुट के खिलाफ चलाए गए न्यायोचित संघर्ष का दृढ़ समर्थन करते हैं, सोवियत संघ के सर्वहारा वर्ग और मेहनतकश जनता द्वारा सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट को उखाड़ फेंकने के लिए चलाए गए न्यायोचित संघर्ष का दृढ़ समर्थन करते हैं, चेकोस्लोवाकिया और अन्य सभी देशों की जनता द्वारा सोवियत संशोधनवादी सोशल साम्राज्यवाद के विरुद्ध चलाए गये न्यायोचित संघर्षों का दृढ़ समर्थन करते हैं, जापान, पश्चिमी यूरोप और ओशेनिया के विभिन्न देशों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों का दृढ़ समर्थन करते हैं, दुनिया के सभी देशों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों का दृढ़ समर्थन करते हैं, तथा अमरीकी साम्राज्यवाद और सोवियत संशोधनवाद के आक्रमण व उत्पीड़न के खिलाफ सभी न्यायोचित संघर्षों का दृढ़ समर्थन करते हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत संशोधनवाद के आक्रमण, नियंत्रण, हस्तक्षेप और अत्याचार के शिकार सभी देशो व लोगो, एक हो जाओ, सबसे व्यापक संयुक्त मोर्चा कायम करो और अपने मुश्तरका दुश्मन को नष्ट करो!

विजय हासिल करने पर हमें ऐसा हरगिज नहीं करना चाहिए कि अपनी क्रान्तिकारी सतर्कता में ढील आने दें और अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत संशोधनवाद द्वारा बड़े पैमाने पर आक्रमणकारी युद्ध छेड़ने के खतरे को नजरअन्दाज कर दें। इस सिलसिले में हमें हर तरह की पूरी पूरी तैयारियां करनी चाहिए कि वे युद्ध बड़े पैमाने पर छेड़ें, या फौरन ही छेड़ें, या नियमित युद्ध छेड़ें या बड़े पैमाने का न्यूक्लीयर युद्ध छेड़ें। **सारांश यह है हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए।** अध्यक्ष माओ ने बहुत पहले ही कहा था: **जब तक हम पर हमला न हो, तब तक हम हमला नहीं करेंगे, अगर हम पर हमला किया गया, तो हम जरूर जवाबी हमला करेंगे।** यदि वे लड़ने की जिद करें, तो हम उनके खिलाफ अन्त तक लड़ेंगे। चीनी क्रान्ति की विजय लड़ने से ही प्राप्त की गई है। माओ त्सेतुङ

विचारधारा से लैस और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में तपी-तपाई दसियों करोड़ चीनी जनता और चीनी जन-मुक्ति सेना पक्का इरादा कर चुकी है और वे विजय पाने का पूरा विश्वास लिए हुए जरूर अपनी पवित्र प्रादेशिक भूमि थाइवान को मुक्त कराके ही रहेंगी और चीन पर आक्रमण करने का दुस्साहस बांधने वाले सभी हमलावरों का **दृढ़तापूर्वक, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से सफाया करके ही रहेंगी।**

हमारे महान नेता अध्यक्ष माओ ने बताया है: "**सोवियत संशोधनवाद और अमरीकी साम्राज्यवाद एक दूसरे के साथ सांठगांठ करके इतने ज्यादा बुरे व गन्दे काम कर चुके हैं कि सारी दुनिया की क्रान्तिकारी जनता उन्हें सजा दिए बिना नहीं छोड़ेगी। दुनिया के सभी देशों की जनता उठ खड़ी हो रही है। अब अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत संशोधनवाद के खिलाफ एक नया ऐतिहासिक काल शुरू हो गया है।**" चाहे युद्ध क्रान्ति को उभार दे या क्रान्ति युद्ध को रोक दे, अमरीकी साम्राज्यवाद और सोवियत संशोधनवाद के दिन अब इने गिने ही रह गए हैं! सारी दुनिया के मजदूरो, एक हो जाओ! सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग और उत्पीड़ित लोगो व उत्पीड़ित राष्ट्रो एक हो जाओ! अमरीकी साम्राज्यवाद, सोवियत संशोधनवाद और उनके गुर्गों को दफना दो!

8. और अधिक महान विजय प्राप्त करने के लिए समूची पार्टी, सारे देश की जनता, एक हो

पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस हमारी पार्टी के ऐतिहासिक विकास के महत्वपूर्ण समय पर, हमारे देश के सर्वहारा अधिनायकत्व के सुदृढ़ और विकसित होने के महत्वपूर्ण समय पर, तथा विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन और विश्व-क्रान्ति के विकास के महत्वपूर्ण समय पर बुलाई गई है। हमारी कांग्रेस के प्रतिनिधियों में पुरानी पीढ़ी के सर्वहारा क्रान्तिकारी हैं और बड़ी

संख्या में ताजा खून भी है। औद्योगिक मजदूरों में से आने वाले पार्टी-सदस्यों के प्रतिनिधि, गरीब और निम्न-मध्यम किसानों में से आने वाले पार्टी-सदस्यों के प्रतिनिधि तथा पार्टी सदस्याओं की प्रतिनिधि, इन प्रतिनिधियों की तादाद इतनी ज्यादा है जितनी हमारी पार्टी की भूतपूर्व कांग्रेसों में कभी नहीं थी। जन-मुक्ति सेना से आने वाले पार्टी-सदस्यों के प्रतिनिधियों में पुराने लाल सेना के योद्धा भी हैं और नए योद्धा भी। लाल रक्षकों में से आने वाले पार्टी-सदस्यों के प्रतिनिधि तो पहली बार पार्टी की राष्ट्रीय कांग्रेस में शिरकत कर रहे हैं। इतने ज्यादा प्रतिनिधियों का पार्टी और राज्य के महत्वपूर्ण मामलों पर एक साथ विचार-विमर्श और निर्णय करने के लिए देश के कोने-कोने से पेकिङ आना और हमारे महान नेता अध्यक्ष माओ के पास इकट्ठा होना इस बात का प्रतीक है कि हमारी यह कांग्रेस एक ओजस्विता व जीवन-शक्ति से ओतप्रोत कांग्रेस है, एक एकता की कांग्रेस है और एक विजय की कांग्रेस है।

अध्यक्ष माओ ने हमें शिक्षा दी है: "**देश का एकीकरण, जनता की एकता और हमारी विभिन्न जातियों की एकता—ये सब हमारे कार्य की निश्चित विजय की बुनियादी गारण्टी है।**" महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के जरिए, माओ त्सेतुङ विचारधारा के महान लाल झण्डे तले हमारी मातृभूमि अभूतपूर्व रूप से एकीकृत हो गई है और हमारे देश की जनता में अत्यन्त व्यापक रूप से एक महान क्रान्तिकारी एकता कायम हो गई है। यह महान एकता सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व के मातहत है और मजदूर-किसान संश्रय पर आधारित है; इस महान एकता में विभिन्न बिरादराना जातियां, देशभक्त जनवादी व्यक्ति, जिन्होंने लम्बे अरसे तक मातृभूमि की क्रान्ति और निर्माण-कार्य के लिए अच्छे काम किए हैं, व्यापक देशभक्त प्रवासी चीनी और हाङकाङ व मकाओ के व्यापक देशभक्त बन्धु, थाइवान में अमरीकी साम्राज्यवादियों व च्याङ काई-शेक प्रतिक्रियावादियों द्वारा दलित देशभक्त बन्धु, तथा समाजवाद का समर्थन करने और समाजवादी मातृभूमि से प्यार करने वाले तमाम लोग भी शामिल हैं। हमें विश्वास है कि पार्टी की इस राष्ट्रीय कांग्रेस के बाद हमारे देश की विभिन्न जातियों की जनता, महान नेता अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में, निश्चय

ही और ज्यादा घनिष्ठता के साथ एक हो जाएगी तथा अपने मुश्तरका दुश्मन के खिलाफ संघर्ष में और शक्तिशाली समाजवादी मातृभूमि के निर्माण कार्य में और ज्यादा बड़ी विजय प्राप्त करेगी।

अध्यक्ष माओ ने 1962 में यह बताया था: **"अब से शुरू होने वाले अगले पचास से सौ साल तक का दौर दुनिया भर में सामाजिक व्यवस्था के पूर्ण परिवर्तन का एक महान युग होगा, धरती को हिलाकर रख देने वाला एक ऐसा युग होगा जिसका मुकाबला पहले का कोई भी ऐतिहासिक काल नहीं कर सकेगा। ऐसे युग में रहते हुए हमें ऐसे महान संघर्ष करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो रूप की दृष्टि से भूतकाल के संघर्षों से बहुत सी भिन्न विशेषताएं रखेंगे।"** अध्यक्ष माओ का यह महान दूरदर्शन और शानदार भविष्यवाणी आगे बढ़ने के हमारे रास्ते को रोशन करती है, साथ ही कम्युनिज्म के महान आदर्श को साकार बनाने के लिए वीरतापूर्वक संघर्ष करने वाले तमाम सच्चे मार्क्सवादी लेनिनवादियों को प्रेरित करती है।

समूची पार्टी एक हो जाओ, सारे देश की जनता एक हो जाओ, माओ त्सेतुङ विचारधारा के महान लाल झण्डे को बुलन्द रखो, **विजय प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प रखो, कुरबानियों से न डरो, और हर तरह की कठिनाइयों को दूर करो।**

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की महान विजय जिन्दाबाद!

सर्वहारा अधिनायकत्व जिन्दाबाद!

पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस जिन्दाबाद!

महान, गौरवमय और सही चीनी कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद!

महान मार्क्सवाद-लेनिनवाद माओ त्सेतुङ विचारधारा जिन्दाबाद!

हमारे महान नेता अध्यक्ष माओ जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!

सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय अमर रहे

—पेरिस कम्यून की शतवार्षिक जयन्ती की स्मृति में

"रनमिन रपाओ", "हुङछी" और "च्येफाङच्युन पाओ" के सम्पादकीय विभाग

(18 मार्च 1971)

मजदूरों का पेरिस और उसका कम्यून नए समाज के गौरवशाली अग्रदूत के रूप में सदा के लिए लोगों के आदर के पात्र बन रहेंगे। उसके शहीदों को मजदूर वर्ग के महान हृदय मन्दिर में हमेशा के लिए जगह मिल गई है।

कार्ल मार्क्स

यदि कम्यून को नष्ट भी कर दिया गया, तब भी संघर्ष सिर्फ स्थगित होगा। कम्यून के सिद्धान्त शाश्वत और अनश्वर हैं; जब तक मजदूर वर्ग मुक्त नहीं हो जाता, तब तक ये सिद्धान्त बार-बार प्रकट होते रहेंगे।

कार्ल मार्क्स

1. पेरिस कम्यून के सिद्धान्त शाश्वत हैं

इस साल 18 मार्च को पेरिस कम्यून की शत वार्षिक जयन्ती है। महान नेता अध्यक्ष माओ की शिक्षा में पलते बढ़ते चीनी कम्युनिस्ट और समूचे देश की जनता, सर्वहारा अन्तरराष्ट्रवाद की गहरी भावना रखते हुए सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग तथा क्रान्तिकारी जनता के साथ मिलकर बड़े जोश से यह महान "**सर्वहारा वर्ग का त्यौहार**"[1] मनाते हैं।

सौ साल पहले फ्रांस में पेरिस के सर्वहारा वर्ग तथा व्यापक जन-समुदाय ने वीरता से हथियारबन्द बगावत की और पेरिस कम्यून की स्थापना की। यह मानव जाति के इतिहास में अभ्युदित प्रथम सर्वहारा राजसत्ता थी और पूंजीपति वर्ग का तख्ता उलट देने व सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने में सर्वहारा वर्ग की प्रथम महान कोशिश थी।

पेरिस कम्यून ने पूंजीपति वर्ग की प्रतिक्रियावादी सरकार की सेना व पुलिस को भंग कर दिया और उनका स्थान सशस्त्र जनता को दे दिया; बन्दूक मजदूर वर्ग के हाथ में थी।

पेरिस कम्यून ने जनता को गुलाम बनाने वाली बुर्जुआ नौकरशाही मशीनरी को तोड़ दिया, मजदूर वर्ग की अपनी सरकार कायम की, मेहनतकश जनता के हितों की रक्षा करने के लिए सिलसिलेवार नीतियां लागू कीं और राज्य के प्रशासन में सक्रियता से भाग लेने के लिए जन-समुदाय को संगठित किया।

पेरिस कम्यून के वीरों ने सर्वहारा राजसत्ता की स्थापना करने और उसकी रक्षा करने के संग्राम में असाधारण क्रान्तिकारी पहलकदमी, असीम क्रान्तिकारी सक्रियता तथा आत्मबलिदान की वीरता दिखाई, इसलिए क्रान्तिकारी जनता पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनका आदर-सम्मान करती आती है।

हालांकि पेरिस कम्यून जल्लाद थिएर द्वारा बिस्मार्क के साथ सांठगांठ कर फौजी हमले व खूनी दमन किए जाने से असफल हो गया, लेकिन उसका ऐतिहासिक योगदान अमिट है। जैसा कि मार्क्स ने बतलाया था, "**18 मार्च का गौरवमय आन्दोलन मानव जाति को वर्ग-शासन से सदा के लिए मुक्त कराने वाला महान सामाजिक क्रान्ति का प्रभात है।**"[2]

उस समय जबकि बारूद के धुओं से ढके पेरिस में लड़ाई चल रही थी, मार्क्स ने यह बता दिया था: **"यदि कम्यून को नष्ट भी कर दिया गया, तब भी संघर्ष सिर्फ स्थगित होगा। कम्यून के सिद्धान्त शाश्वत और अनश्वर हैं; जब तक मजदूर वर्ग मुक्त नहीं हो जाता, तब तक ये सिद्धान्त बार-बार प्रकट होते रहेंगे।"**[3]

सर्वहारा वर्ग के महान शिक्षक मार्क्स और एंगेल्स ने पेरिस कम्यून के अमल के आधार पर जो क्रान्तिकारी सिद्धान्त निकाले हैं वे क्या हैं?

सारांश में कहा जाए तो ये हैं: **"मजदूर वर्ग बनी-बनाई राज्य-मशीनरी को ज्यों का त्यों अपने हाथ में नहीं ले सकता और उसे अपना मकसद पूरा करने के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकता।"**[4] सर्वहारा वर्ग को पुरानी राज्य-मशीनरी को "**तोड़ने**" व "**चकनाचूर करने**"[5] के लिए क्रान्तिकारी हिंसा का इस्तेमाल करना चाहिए तथा **"सर्वहारा अधिनायकत्व लागू करना"**[6] चाहिए।

मार्क्स ने इस सिद्धान्त की व्याख्या करते समय जोर देकर बतलाया था: **"सर्वहारा अधिनायकत्व का पहला अवयव सर्वहारा वर्ग की सेना है। मजदूर वर्ग को अपनी मुक्ति का अधिकार युद्धभूमि में प्राप्त करना चाहिए।"**[7] सर्वहारा वर्ग क्रान्तिकारी सशस्त्र शक्तियों पर निर्भर रहकर ही प्रतिक्रियावादी वर्गों के शासन का तख्ता उलट सकता है और इससे आगे बढ़कर अपने समूचे ऐतिहासिक मिशन को पूरा कर सकता है।

मार्क्स ने यह भी बतलाया था कि सर्वहारा अधिनायकत्व वाले राज्य को **"एक संसदीय संस्था नहीं बल्कि एक कामकाजी संस्था होना चाहिए, प्रशासनीय होने के साथ-साथ विधि-निर्मात्री भी।"**[8]

जैसा कि लेनिन ने बतलाया था, **"राजसत्ता के विषय पर मार्क्सवाद का एक सबसे विलक्षण और अत्यन्त महत्वपूर्ण विचार" है "'सर्वहारा अधिनायकत्व' (जैसा कि मार्क्स और एंगेल्स ने पेरिस कम्यून के बाद उसे पुकारना शुरू किया था)"।**[9] पूंजीपति वर्ग की राज्य-मशीनरी को चकनाचूर करने और सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना करने पर डटे रहा जाए या पूंजीपति वर्ग की राज्य मशीनरी को बरकरार रखा जाए और सर्वहारा अधिनायकत्व का विरोध किया जाए, यह पिछले

सौ सालों में मार्क्सवाद के पक्ष और संशोधनवाद, सुधारवाद, अराजकतावाद व नाना प्रकार के पूंजीवादी व निम्न-पूंजीवादी विचारों के पक्ष के बीच बार-बार संघर्ष होने का केन्द्र बिन्दु रहा है और अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में दो कार्यदिशाओं के बीच बार-बार संघर्ष होने का केन्द्र बिन्दु रहा है। ठीक सर्वहारा अधिनायकत्व के इसी बुनियादी सवाल पर दूसरी इन्टरनेशनल के संशोधनवाद से लेकर आधुनिक संशोधनवाद तक जिसका केन्द्र सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट है, इन सबों ने मार्क्सवाद के साथ पूर्ण रूप से विश्वासघात किया है। पिछले सौ सालों के इतिहास ने पूरी तरह यह साबित कर दिखाया है कि सर्वहारा क्रान्ति तथा सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में मार्क्सवाद की शिक्षाएं अपराजेय हैं।

पेरिस कम्यून बगावत के 46 साल बाद, रूसी सर्वहारा वर्ग ने महान लेनिन के नेतृत्व में हथियार बन्द बगावत के जरिए अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की विजय हासिल की और विश्व में सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व का एक नया युग आरम्भ किया। लेनिन ने यह कहा था कि पुरानी राज्य-मशीनरी को नेस्तनाबूद करने के रास्ते पर पेरिस कम्यून ने **"विश्व-ऐतिहासिक महत्व वाला पहला कदम रखा, सोवियत राजसत्ता ने दूसरा कदम रखा"।**[10]

पेरिस कम्यून बगावत के 78 साल बाद, चीनी जनता ने महान नेता अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में क्रान्ति की विजय हासिल कर ली। अध्यक्ष माओ ने देहाती आधार-क्षेत्र कायम करने, देहाती इलाकों से शहरों को घेरने और अन्त में शहरों पर कब्जा करने का रास्ता खोल दिया और दीर्घकालीन क्रान्तिकारी युद्ध के जरिए साम्राज्यवाद, सामन्तवाद तथा नौकरशाही पूंजीवाद के प्रतिक्रियावादी शासन का तख्ता उलट देने, पुरानी राज्य मशीनरी को नेस्तनाबूद कर देने और चीन में जनता का जनवादी अधिनायकत्व यानी सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने में चीनी जनता का नेतृत्व किया। इसके बाद से अध्यक्ष माओ सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने तथा प्रशस्त समाजवादी रास्ते पर विजय पूर्वक आगे बढ़ने में चीनी जनता का नेतृत्व करते आ रहे हैं।

पिछली शताब्दी से सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग और उत्पीड़ित जनता

व उत्पीड़ित राष्ट्र, लहरों के समान एक के बाद एक आगे बढ़ते हुए, वीरता से संग्राम करते हुए तथा एक दूसरे को समर्थन व प्रोत्साहन देते हुए समाजवादी क्रान्ति व राष्ट्रीय जनवादी क्रान्ति को अनवरत रूप से आगे बढ़ाते रहे हैं और अत्यन्त शानदार विजयें हासिल कर चुके हैं। जैसा कि कामरेड माओ त्सेतुङ ने बतलाया है, "**यह एक ऐसा ऐतिहासिक युग है जिसमें विश्व पूंजीवाद और साम्राज्यवाद अपने सर्वनाश की ओर बढ़ रहे हैं तथा विश्व समाजवाद और जनता की लोकशाही विजय की ओर अभियान कर रहे हैं।**"[11] पेरिस कम्यून का कार्य नई ऐतिहासिक स्थिति में तथा पहले से और ऊंची मंजिल में व्यापक रूप से विकसित हुआ है। समूची दुनिया में अत्यन्त भारी परिवर्तन हुए हैं।

मार्क्स और एंगेल्स ने पेरिस कम्यून की दसवीं जयन्ती के अवसर पर भरपूर क्रान्तिकारी जोश के साथ योरपीय मजदूर वर्ग से कहा था: "**कम्यून, जो पुरानी दुनिया के शासकों के विचार में पूर्ण रूप से नष्ट हो चुका है, पहले के किसी भी समय के मुकाबले आज और ज्यादा जीवन-शक्ति से ओतप्रोत है। इसलिए हम आप लोगों के साथ मिलकर यह नारा बुलन्द कर सकते हैं: कम्यून जिन्दाबाद!**"[12] आज, पेरिस कम्यून द्वारा उठाई गई क्रान्तिकारी मशाल की लपटें दुनिया भर में भभक रही हैं, साम्राज्यवाद, सामाजिक साम्राज्यवाद तथा विभिन्न देशों के प्रतिक्रियावादियों के खात्मे का दिन अब दूर नहीं है। ऐसी परिस्थिति में पेरिस कम्यून की शतवार्षिक जयन्ती मनाते हुए सारी दुनिया के मार्क्सवादियों-लेनिनवादियों, सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी जनता के पास पक्के विश्वास के साथ ये नारे बुलन्द करने के और ज्यादा सबब हैं: कम्यून जिन्दाबाद! सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय अमर रहे!

पेरिस कम्यून की स्मृति मनाने में हमें चाहिए कि सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षाओं का अध्ययन करें, ऐतिहासिक अनुभव ग्रहण करें, आधुनिक संशोधनवाद जिसका केन्द्र सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट है, का खण्डन करें, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रान्तिकारी कार्यदिशा पर डटे रहें, तथा और भी

बड़ी विजय प्राप्त करने के लिए सारी दुनिया की जनता के साथ एकजुट हो जाएं।

2. क्रान्तिकारी जनता द्वारा बन्दूक को अपने अधिकार में रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है

पेरिस कम्यून के ऐतिहासिक अनुभवों ने यह पूर्ण रूप से साबित कर दिया है कि क्रान्तिकारी सशस्त्र शक्तियों को अपने अधिकार में रखना सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पेरिस कम्यून के अनुभवों पर प्रकाश डालते समय लेनिन ने एंगेल्स के इस महत्वपूर्ण निष्कर्ष का हवाला दिया था कि फ्रांस में हर क्रान्ति के बाद मजदूर हमेशा हथियारबन्द रहते थे, इसलिए राजसत्ता की बागडोर थामे हुए बुर्जुआ अधिनायकों का पहला काम यह था कि मजदूरों को निहत्था कर दिया जाए। लेनिन के विचार में एंगेल्स के इस निष्कर्ष ने "**मसले के सारतत्व को, और साथ ही राजसत्ता के प्रश्न के सारतत्व को भी (क्या उत्पीड़ित वर्ग के हाथ में हथियार हैं?) बहुत ही विलक्षण ढंग से पकड़ लिया है**"[13]

पेरिस कम्यून का जन्म सशस्त्र क्रान्ति और सशस्त्र प्रतिक्रान्ति के बीच हुए घमासान संघर्ष में हुआ था। पेरिस कम्यून के 72 दिन हथियारबन्द बगावत, सशस्त्र संघर्ष तथा सशस्त्र आत्मरक्षा के 72 दिन थे। ठीक इसी वजह से कि बन्दूक पेरिस के सर्वहारा वर्ग के हाथ में थी, बुर्जुआ प्रतिक्रियावादियों के प्राण उड़ गए थे। पेरिस कम्यून की जानलेवा गलती यह थी कि उसने प्रतिक्रान्ति के साथ ज्यादा उदारता बरती और फौरन ही वर्साई की ओर अभियान नहीं किया जिससे थिएर को क्रान्तिकारी पेरिस पर झपटने के उद्देश्य से अपनी प्रतिक्रियावादी फौज को जुटाने के लिए सांस लेने का मौका मिल गया। जैसा कि एंगेल्स ने कहा था, "**अगर पेरिस कम्यून ने पूंजीपति वर्ग के विरोध में सशस्त्र जनता के इस प्राधिकार का इस्तेमाल नहीं किया होता, तो क्या वह एक दिन तक भी टिका रह सकता था? दूसरी तरफ से देखा जाए, तो क्या हमारे**

पास यह आलोचना करने का सबब नहीं है कि कम्यून ने इस प्राधिकार का बहुत ही कम प्रयोग किया है?"[14]

कामरेड माओ त्सेतुङ ने अत्यन्त सरल और बेहद स्पष्ट भाषा में सशस्त्र संघर्ष तथा जन-सेना के भारी महत्त्व का सारांश निकाला और यह सुप्रसिद्ध स्थापना पेश की कि "**राजनीतिक सत्ता का जन्म बन्दूक की नली से होता है।**"[15] तथा उन्होंने यह बताया कि "**राज्य सम्बन्धी मार्क्सवादी सिद्धान्त के अनुसार, सेना राजसत्ता का मुख्य तत्व होती है। जो कोई भी राजसत्ता पर कब्ज़ा करना चाहता हो और उसे बनाए रखना चाहता हो, उसके पास एक शक्तिशाली सेना होनी चाहिए।**"[16]

हिंसात्मक क्रान्ति सर्वहारा क्रान्ति का एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी को अवश्य ही इस सार्वभौमिक सिद्धान्त पर कायम रहना चाहिए और उसे अपने देश के ठोस अमल में इस्तेमाल करना चाहिए। ऐतिहासिक अनुभवों ने यह साबित कर दिखाया है कि किसी देश के सर्वहारा वर्ग और उत्पीड़ित जनता का राजसत्ता छीनना और क्रान्ति की विजय प्राप्त करना निरपवाद रूप से बन्दूक की ताकत के जरिए पूरे किए जाते हैं; ये सर्वहारा राजनीतिक पार्टी के नेतृत्व में, अपने देश की ठोस स्थितियों को ध्यान में रखते हुए , व्यापक जन-समुदाय को संघर्ष के लिए आन्दोलित करने के आधार पर जनता की सशस्त्र शक्तियों का कदम ब-कदम निर्माण करके और लोकयुद्ध चलाकर तथा साम्राज्यवाद व प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ बार बार संघर्ष चलाकर ही पूरे किए जाते हैं। यह बात रूसी क्रान्ति पर लागू होती है, चीनी क्रान्ति पर लागू होती है और अलबानिया, वियतनाम व कोरिया आदि देशों की क्रान्तियों पर भी लागू होती है, और इसका कोई अपवाद नहीं है।

इसके विपरीत, यदि सर्वहारा राजनैतिक पार्टी क्रान्तिकारी सशस्त्र शक्तियां कायम नहीं करती या इनका त्याग कर देती है, तो क्रान्ति को धक्का पहुंचता है। इस मामले में गम्भीर सबक देखने को मिले हैं: कुछ पार्टियां बन्दूक पर अधिकार न करने की वजह से साम्राज्यवाद तथा उसके पालतू कुत्तों के अचानक हमले तथा प्रतिक्रान्तिकारी दमन के सामने लाचार हो गई जिसके परिणामस्वरूप लाखों-लाख क्रान्तिकारी लोगों की हत्या हो

गई। कुछ पार्टियों ने एक ऐसी स्थिति में जबकि क्रान्तिकारी जनता ने हथियार उठा लिए थे और जनता की सशस्त्र शक्तियों का काफी हद तक विकास हुआ था, पूंजीपति वर्ग की सरकार में ओहदा पाने के लिए या प्रतिक्रियावादियों के धोखे में आने की वजह से जनता की सशस्त्र शक्तियां सौंप दीं जिससे उन्हें क्रान्ति के फलों से हाथ धोना पड़ा।

पिछले करीब सौ सालों में बहुत सी कम्युनिस्ट पार्टियों ने चुनावों में भाग लिया है और संसद में शिरकत की है, लेकिन उनमें से कोई भी पार्टी इस तरीके से सर्वहारा अधिनायकत्व कायम नहीं कर सकी। यदि कम्युनिस्ट पार्टी ने संसद में बहुमत हासिल कर लिया हो और सरकार में शिरकत की हो, तो भी इसका मतलब यह नहीं कि राजसत्ता की पूंजीवादी प्रकृति बदल गई है, पुरानी राज्य मशीनरी का चकनाचूर होना तो और भी दूर की बात है। प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग चुनाव को अप्रभावी घोषित कर सकते हैं, संसद भंग कर सकते हैं या कम्युनिस्ट पार्टी को लात मारकर हटाने के लिए सीधे हिंसा का प्रयोग कर सकते हैं। अगर सर्वहारा राजनीतिक पार्टी जन समुदाय में काम नहीं करती, सशस्त्र संघर्ष नहीं चलाती और संसदीय चुनाव में मग्न रहती है, तो वह केवल जन-समुदाय को निष्प्राण बनाएगी और अपने आपको भ्रष्ट करेगी। पूंजीपति वर्ग संसदीय चुनाव के जरिए कम्युनिस्ट पार्टी को खरीद लेता है और उसे संशोधनवादी पार्टी, पूंजीपति वर्ग की पार्टी में बदल देता है, क्या इतिहास में ऐसे तथ्य कम मिलते हैं? सर्वहारा वर्ग को राजसत्ता छीनने के लिए बन्दूक का सहारा लेना चाहिए और राजसत्ता की रक्षा करने के लिए भी बन्दूक का सहारा लेना चाहिए। मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली जन सेना सर्वहारा अधिनायकत्व का मजबूत आधार स्तम्भ है और वह पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम करने वाले विभिन्न तत्वों में से एक मुख्य तत्व है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा से लैस जन-सेना के रहते देश के अन्दर व बाहर के वर्ग संघर्ष में उत्पन्न होने वाली किसी भी जटिल स्थिति का मुकाबला किया जा सकता है और सर्वहारा वर्ग के राज्य की रक्षा की जा सकती है।

उत्पीड़ित राष्ट्रों का वर्तमान मुक्ति आन्दोलन सर्वहारा विश्व-क्रान्ति का

महत्वपूर्ण अंग है और उसका महान संश्रय भाग है। राष्ट्रीय जनवादी क्रान्ति और समाजवादी क्रान्ति आपस में सम्बन्ध भी रखती हैं और साथ ही एक दूसरे से भिन्न भी होती हैं; ये दो भिन्न मंजिलों का प्रतिनिधित्व करती हैं और स्वरूप में एक दूसरे से भिन्न होती हैं। लेकिन राष्ट्रीय जनवादी क्रान्ति की पूर्ण विजय की प्राप्ति के लिए भी, साम्राज्यवादियों तथा प्रतिक्रियावादियों से हथियारबन्द ताकतों की आजमाइश करने को तैयार रहना चाहिए। उत्पीड़ित राष्ट्रों के लिए भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है कि वह बन्दूक पर अधिकार करें।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से साम्राज्यवाद और नया व पुराना उपनिवेशवाद, जिनका सरगना अमरीका है, लगातार आक्रमणकारी युद्ध छेड़ते रहे हैं तथा वे उन देशों व जनता को, जो स्वाधीनता के लिए संघर्ष चला रहे हैं या स्वाधीनता प्राप्त कर चुके हैं, दमन करने के लिए अधिकाधिक सशस्त्र हस्तक्षेप, सशस्त्र उन्मूलन और भाड़े के सैनिकों के द्वारा अतिक्रमण करने आदि हथकंडे अपनाते रहे हैं। अपूर्ण आंकड़ों के अनुसार, पिछले 25 सालों में अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा रचे और छेड़े गए सशस्त्र हस्तक्षेपों व सशस्त्र आक्रमणों की संख्या 50 से ऊपर तक पहुंच गई है। जहां तक उसके हाथों उकसाए गए सशस्त्र उन्मूलनों का ताल्लुक है, इनकी संख्या तो अनगिनत है। इसलिए, अपनी मुक्ति प्राप्त करने के लिए, अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता व देश की प्रभुसत्ता की रक्षा करने के लिए तथा साम्राज्यवाद व उसके पालतू कुत्तों की आक्रमणकारी व उन्मूलनकारी कार्यवाहियों का कारगर रूप से मुकाबला करने के लिए सभी उत्पीड़ित राष्ट्रों को खुद अपनी साम्राज्यवाद-विरोधी सशस्त्र शक्तियां कायम करनी चाहिए और आक्रमणकारी युद्ध का क्रान्तिकारी युद्ध से विरोध करने के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए। वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया इन तीनों देशों की जनता द्वारा अमरीकी आक्रमण का मुकाबला करने व देश को बचाने के युद्ध ने सारी दुनिया के उत्पीड़ित राष्ट्रों व उत्पीड़ित जनता के लिए शानदार मिसाल कायम कर दी है। आक्रमण व उन्मूलन के खिलाफ एशिया, अफ्रीका व लातिन अमरीका के अन्य बहुत से देशों व इलाकों की जनता के संघर्षों ने भी मूल्यवान अनुभव प्रदान किए हैं।

अध्यक्ष माओ ने **"सारी दुनिया के लोगो एक हो जाओ, अमरीकी आक्रमणकारियों तथा उनके तमाम पालतू कुत्तों को शिकस्त दो"** शीर्षक अपने गम्भीर वक्तव्य में यह बताया है कि **"कमजोर देश शहजोर देश को परास्त कर सकता है। छोटा देश बड़े देश को परास्त कर सकता है। छोटे देश की जनता बड़े देश के आक्रमण को निश्चय ही परास्त कर सकती है, बशर्ते कि वह संघर्ष के लिए उठ खड़ी होने का साहस करे, हथियार उठाने का साहस करे और अपने देश के भाग्य की बागडोर अपने हाथ में ले ले। यह इतिहास का एक नियम है।"**[17]

लोक युद्ध अमरीकी साम्राज्यवाद व उसके गुर्गों के खिलाफ एक अत्यन्त कारगर शस्त्र है। सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग और उत्पीड़ित जनता व उत्पीड़ित राष्ट्र हथियार उठा लेंगे और लड़ाइयां लड़ना सीख जाएंगे, चाहे उन्होंने पहले कभी ऐसा न किया हो। अमरीकी साम्राज्यवाद तथा उसके तमाम पालतू कुत्ते अन्त में अपने हाथों सुलगाई लोकयुद्ध की प्रचण्ड आग में जलकर भस्म हो जाएंगे।

3. क्रान्ति लाखों-करोड़ों जन-समुदाय का कार्य है

पेरिस कम्यून के ऐतिहासिक अनुभव हमें बताते हैं कि सर्वहारा क्रान्ति और सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय की प्राप्ति के लिए यह जरूरी है कि लाखों-करोड़ों जन समुदाय की क्रान्तिकारी सक्रियता पर भरोसा रखा जाए और जन-समुदाय की इतिहास का निर्माण करने की महान शक्ति को पूर्ण रूप से उजागर किया जाए। लेनिन ने कहा: **"लाखों-करोड़ों जागरूक जन-समुदाय की क्रान्तिकारी कार्यवाहियों के बिना, जन-समुदाय की उमड़ती वीरता के बिना और कम्यून-काल के पेरिस के मजदूरों की चर्चा करते समय मार्क्स के कहे शब्दों में 'धरती को हिला देने वाले' दृढ़संकल्प व क्षमता के बिना तानाशाही व्यवस्था का खात्मा करना असम्भव है।"**[18]

सर्वहारा वर्ग के महान शिक्षक मार्क्स ने जन समुदाय की क्रान्तिकारी पहलकदमी को भारी महत्व दिया और क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन के प्रति सही रुख अपनाने में हमारे लिए एक शानदार मिसाल कायम कर दी।

पेरिस कम्यून की स्थापना से पहले, 1870 की शरद में, मार्क्स ने यह बताया था कि फ्रांसीसी मजदूरों द्वारा बगावत करने की स्थिति अभी परिपक्व नहीं है। लेकिन मार्च 1871 में जब पेरिस के सर्वहारा वर्ग ने असीम क्रान्तिकारी वीरता से बगावत करना शुरू कर दिया, तो उन्होंने फौरन एक शरीक की हैसियत से इस सर्वहारा क्रान्ति का डटकर समर्थन किया और उसकी मदद की। हालांकि मार्क्स ने कम्यून की गलतियां देखीं और कम्यून की विफलता का दूरदर्शन किया, लेकिन फिर भी उन्होंने इस क्रान्ति को फ्रांसीसी मजदूर वर्ग का सबसे गौरवमय कारनामा समझा। क्योंकि उन्होंने इस आन्दोलन में **"अत्यन्त भारी महत्व का ऐतिहासिक अनुभव देखा, सर्वहारा विश्व-क्रान्ति की एक निश्चित प्रगति देखी और एक ऐसा अमली कदम देखा जो सैकड़ों प्रोग्रामों और तर्कों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।"**[19] उस समय मार्क्स ने एल. कुगेलमान के नाम अपने एक पत्र में भारी उत्साह के साथ प्रशंसा की कि **"इन पेरिसवासियों में क्या गजब का लचीलापन है, क्या गजब की ऐतिहासिक पहलकदमी है, क्या गजब की आत्मबलिदान की क्षमता है!" "इतनी महानता की ऐसी मिसाल इतिहास में नहीं मिलती"**[20]

इस पत्र में लेनिन ने सर्वहारा क्रान्तिकारियों और अवसरवादियों के बीच जमीन आसमान का अन्तर देखा और उन्होंने यह आशा की कि **"यह पत्र हरेक पढ़े-लिखे रूसी मजदूर के घर में लगाया जाएगा"**।[21]

मार्क्सवादियों के विपरीत, तमाम अवसरवादी और नए व पुराने संशोधनवादी सर्वहारा क्रान्ति और सर्वहारा अधिनायकत्व का विरोध करते हैं, और न अनिवार्य रूप से जन समुदाय से बेहद खौफ और खार खाते हैं तथा क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन की हंसी उड़ाते हैं, उसे कोसते हैं और उसकी जड़ काटते हैं। उस समय जबकि रूस में दिसम्बर 1905 की हथियारबन्द बगावत विफल हो गई, प्लेखानोव ने अलग खड़े होकर जन-समुदाय की यह भर्त्सना की कि "उन्हें हथियार नहीं उठाने चाहिए

थे"। लेनिन ने क्रान्तिकारी जन आन्दोलन के प्रति प्लेखानोव के अपनाए बेईमाना रुख का रोष के साथ खण्डन किया और यह कहकर उसकी कड़ी निन्दा की कि वह मार्क्सवाद का एक बदनाम रूसी गद्दार है। लेनिन ने बताया कि 1905 के "आम पूर्वाभ्यास" के बिना 1917 की अक्तूबर क्रान्ति का विजयी होना असम्भव था।

1959 में हमारे महान शिक्षक अध्यक्ष माओ ने पार्टी विरोधी फड़ते हुए दक्षिणपंथी अवसरवादी गुट द्वारा क्रान्तिकारी जन आन्दोलन पर लांछन लगाने और उसका विरोध करने की बेहूदा दलीलों की भर्त्सना करते समय मार्क्सवाद विरोधी इन गद्दारों को तीखे तौर पर यह बताया:

"कृपया आप लोग जरा यह देखिए कि मार्क्स और लेनिन ने पेरिस कम्यून पर कैसे टिप्पणी की और लेनिन ने रूसी क्रान्ति पर कैसे टिप्पणी की!" "क्या आप लोगों ने देखा है कि लेनिन ने गद्दार प्लेखानोव, उन 'बुर्जुआ सज्जनों व उनके पालतू कुत्तों' तथा 'मरणासन्न पूंजीपति वर्ग के व उस पर आश्रित रहने वाले निम्न-पूंजीवादी जनवादियों के कुत्तों और सुअरों' की किस तरह भर्त्सना की थी? अगर नहीं देखा, तो कृपया जरा देखिए तो सही।"[22]

अध्यक्ष माओ ने इस ऐतिहासिक अनुभव से हमारी समग्र पार्टी को गहरी शिक्षा दी और हमारे पार्टी सदस्यों व कार्यकर्ताओं से यह मांग की कि वे मार्क्स और लेनिन को अपने आदर्श मानकर क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन के प्रति सही रुख अपनाएं।

"आज दुनिया की मुख्य प्रवृत्ति क्रान्ति ही है।"[23] सभी देशों की जनता की यह रोषपूर्ण गरज सारी दुनिया में गूंज रही है: अमरीकी आक्रमणकारियों और उनके तमाम पालतू कुत्तों का नाश हो! साम्राज्यवाद का रणनीतिक पृष्ठभाग साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का अग्रिम मोर्चा बन गया है। हिन्दचीन के तीनों देशों की जनता द्वारा अमरीकी आक्रमण का मुकाबला करने व देश को बचाने के लिए छेड़े गए युद्ध के विजयपूर्ण विकास ने अमरीकी साम्राज्यवाद विरोधी विश्वव्यापी संघर्ष को एक नई बुलन्दी पर पहुंचा दिया है। दो सर्वोपरि शक्तियों के प्रभुत्ववाद के

खिलाफ संघर्ष अधिकाधिक जोर पकड़ता जा रहा है। एशिया और अफ्रीका में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन प्रचण्ड आग का रूप धारण करके तेजी से आगे बढ़ता जा रहा है। अमरीकी व जापानी प्रतिक्रियावादियों द्वारा जापानी सैन्यवाद को पुनर्जीवित करने के खिलाफ कोरिया, जापान और अन्य एशियाई देशों की जनता के संघर्ष दिन व दिन उभरते जा रहे हैं फिलस्तीनी जनता और अन्य अरब जनता अमरीकी व इजराइली आक्रमणकारियों के खिलाफ संग्राम में निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है। उत्तर अमरीका, योरप व ओशेनिया में अभूतपूर्व पैमाने पर क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन फूट पड़े हैं। संयुक्त राज्य अमरीका में मजदूर, विद्यार्थी, काले लोग और अन्य अल्पसंख्यक जातियों के लोग दिन-ब दिन जागरूक होते जा रहे हैं और उन्होंने निक्सन सरकार के प्रतिक्रियावादी शासन और आक्रमणकारी नीति के खिलाफ क्रान्तिकारी तूफान बरपा कर दिया है। अमरीकी साम्राज्यवाद के "पिछवाड़े" लातिन अमरीका में अमरीकी साम्राज्यवाद विरोधी क्रोधाग्नि, जो लम्बे अरसे से जनता की छाती में दबी हुई थी, अब फूट पड़ी है, और राष्ट्रीय हितों और देश की प्रभुसत्ता की रक्षा करने के लिए मिलकर संघर्ष करने की नई स्थिति पैदा हो गई है। सामाजिक-साम्राज्यवाद के खिलाफ कुछ पूर्वी योरपीय देशों की जनता का क्रान्तिकारी संघर्ष उठान पर है। उन इलाकों में भी, जो हमेशा अपेक्षाकृत रूप से शान्त रहे थे, क्रान्ति का बसन्त-गर्जन गूंज उठा है। ये सब संघर्ष एक दूसरे का साथ देते हुए और एक दूसरे को बढ़ावा देते हुए विश्व जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलन की शक्तिशाली धारा बन गए हैं।

मौजूदा महान क्रान्तिकारी आन्दोलन के बारे में तीन विकल्प हो सकते हैं जन समुदाय के आगे आगे चलें और उनका नेतृत्व करें? या उनके पीछे पीछे चलें और उंगली उठा-उठा कर उनकी आलोचना करते रहें? या उनके सामने खड़े होकर उनका विरोध करें? सभी क्रान्तिकारी राजनीतिक पार्टियों और क्रान्तिकारियों को इन तीनों में से कोई एक चुनना होगा। सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी राजनीतिक पार्टियों और तमाम क्रान्तिकारियों को जन-समुदाय की क्रान्तिकारी कार्यवाहियों का

जोश के साथ समर्थन करना चाहिए, दृढ़ता के साथ जन आन्दोलन के आगे-आगे चलना चाहिए और जन-समुदाय का आगे बढ़ने में नेतृत्व करना चाहिए।

सर्वहारा राजनीतिक पार्टियों और तमाम क्रान्तिकारियों को "**दुनिया का सामना करना चाहिए और तूफान का मुकाबला करना चाहिए; यह दुनिया जन-संघर्षों की विशाल दुनिया है तथा यह तूफान जन-संघर्षों का जबरदस्त तूफान है।**"[24] उन्हें जरूर जन-समुदाय के दुख सुख में हाथ बंटाना चाहिए और अपने भाग्य को जन समुदाय के भाग्य के साथ नत्थी करना चाहिए, नम्रता से उससे सीखना चाहिए और स्वेच्छा से उसका शिष्य बनना चाहिए, तथा जन-समुदाय की क्रान्तिकारी पहलकदमी का पता लगाने में निपुण होना चाहिए और जन समुदाय से बुद्धि व शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। सर्वहारा राजनीतिक पार्टी जन आन्दोलन के प्रचण्ड तूफान में कूदकर ही अपने आपको तपाकर फौलादी बना सकती है। सही प्रोग्राम व कार्यदिशा सिर्फ विशाल जन-समुदाय के वर्ग-संघर्ष के अमल के जरिए ही तैयार किए जा सकते हैं व उनका विकास किया जा सकता है तथा उन्हें जांचा-परखा जा सकता है और कार्यान्वित किया जा सकता है।

क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन की मुख्य धारा हमेशा ही अच्छी होती है और समाज के विकास के अनुकूल होती है। यह स्वाभाविक ही है कि जन आन्दोलन में तरह तरह की विचारात्मक प्रवृत्तियों का प्रभाव होता है, नाना प्रकार की दलबन्दियां उदित होती हैं और तरह तरह के व्यक्ति शरीक होते हैं। दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जो एकदम शुद्ध हो। संघर्ष के अमल के जरिए और बारम्बार तुलना करके व्यापक जन समुदाय आखिरकार यह पहचान लेगा कि क्या सही है और क्या गलत; वह आखिरकार संशोधनवाद और अन्य सभी गलत चीजों को त्याग देगा और मार्क्सवाद लेनिनवाद की क्रान्तिकारी सच्चाई अपना लेगा और उस पर महारत हासिल कर लेगा। सर्वहारा राजनीतिक पार्टियों को चाहिए कि वे जन समुदाय के बीच जाएं, लम्बे अरसे तक कड़ी मेहनत और धीरज के साथ काम करें और इस प्रकार जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना लगातार

उन्नत करें और जन आन्दोलन का सही रास्ते पर आगे बढ़ने में मार्गदर्शन करें।

क्रान्ति का प्राथमिक महत्व वाला सवाल है दुश्मनों व दोस्तों के बीच फर्क करना, सच्चे दोस्तों के साथ एकता कायम करना और सच्चे दुश्मनों पर प्रहार करना। क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन के विकास की यह मांग है कि क्रान्तिकारी शक्तियों की भीतरी एकता को निरन्तर मजबूत बनाया जाए, और साम्राज्यवाद, संशोधनवाद व प्रतिक्रियावादियों की फूट डालने व तोड़ फोड़ करने की साजिशों को नकनाचूर किया जाए। जनता, जिसकी संख्या कुल आबादी के नब्बे फीसदी से ज्यादा है, यानी मजदूर, किसान, विद्यार्थी और वे तमाम लोग जो साम्राज्यवाद का उत्पीड़न सहना नहीं चाहते, आखिरकार क्रान्ति के लिए उठ खड़े हो जाएंगे। अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके तमाम पालतू कुत्तों को शिकस्त देने के लिए यह जरूरी है कि व्यापक संयुक्त मोर्चा कायम किया जाए, दुश्मन को छोड़कर उन तमाम शक्तियों के साथ एकता कायम की जाए जिनके साथ एकता कायम की जा सकती है, और कठोर संघर्ष चलाया जाए।

कामरेड माओ त्सेतुङ ने बताया है: "**विशाल क्रान्तिकारी जन-समुदाय पर सीधा भरोसा रखना ही कम्युनिस्ट पार्टी का एक बुनियादी सिद्धान्त है।**"[25] जब हम राजसत्ता की प्राप्ति के लिए लड़ते हैं तब हमें जन-समुदाय पर भरोसा रखना और जन-आन्दोलन चलाना चाहिए। सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना के बाद जब हम समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण में लगते हैं। तब भी हमें जन समुदाय पर भरोसा रखना, जन आन्दोलन चलाना व सभी कामों में जनदिशा पर कायम रहना चाहिए। "**यदि हम जनता पर भरोसा रखते हैं, जन-समुदाय की असीम सृजन-शक्ति पर पक्का विश्वास रखते हैं, तथा इस प्रकार जनता पर विश्वास करते हैं और उसके साथ एकरूप हो जाते हैं, तो हम हर मुश्किल पर काबू पा सकेंगे, तथा हमें कोई भी दुश्मन नहीं पछाड़ सकेगा और हम हर दुश्मन को पछाड़ देंगे।**"[26]

4. एक सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी का होना जरूरी है

मार्क्स और एंगेल्स ने पेरिस कम्यून के अनुभवों का सारांश निकालते समय स्पष्ट रूप से यह बताया था: "**सम्पत्तिवान वर्गों की संयुक्त सत्ता के खिलाफ अपने संघर्ष में मजदूर वर्ग अपने को सम्पत्तिवान वर्गों द्वारा स्थापित तमाम पुरानी पार्टियों के विरुद्ध और उनसे भिन्न एक राजनीतिक पार्टी में संगठित करके ही एक वर्ग की हैसियत से कार्यवाही कर सकता है।**"[27] सर्वहारा क्रान्ति की विजय हासिल करने, सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना करने व उसे सुदृढ़ बनाने और वर्गों का खात्मा करने के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह एक लाजिमी शर्त है।

पेरिस कम्यून की असफलता का बुनियादी कारण यह था कि तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति की वजह से मार्क्सवाद को मजदूर आन्दोलन में शासन का स्थान प्राप्त नहीं हो पाया था और एक ऐसी सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टी स्थापित नहीं हो पाई थी जिसने मार्क्सवाद को अपना मार्गदर्शक विचार बनाया हो। दूसरी ओर, ब्लांकीवाद और प्रूदोंवाद जो उस समय पेरिस कम्यून में प्रमुख स्थान पर थे, सर्वहारा क्रान्ति को विजय की ओर नहीं ले जा सकते थे।

ऐतिहासिक अनुभवों से यह सिद्ध होता है कि जब एक उम्दा क्रान्तिकारी स्थिति तथा जन-समुदाय की क्रान्तिकारी सक्रियता मौजूद होती है, तो सर्वहारा वर्ग के एक सुदृढ़ नेतृत्व-केन्द्र का भी होना जरूरी है, यानी "**क्रान्तिकारी पार्टी ... जिसका निर्माण मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रान्तिकारी सिद्धान्त के आधार पर और मार्क्सवादी-लेनिनवादी क्रान्तिकारी शैली में हुआ हो**"।[28] केवल एक ऐसी पार्टी ही साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों को पराजित करने और क्रान्ति की विजय प्राप्त करने में सर्वहारा वर्ग और विशाल जन-समुदाय का नेतृत्व कर सकती है।

प्रथम विश्व युद्ध के काल में बहुत से देशों में क्रान्तिकारी स्थिति पैदा हुई थी। लेकिन चूंकि दूसरी इन्टरनेशनल की लगभग सभी राजनीतिक

पार्टियां पतित होकर संशोधनवादी, सोशल-शॉविनिस्ट पार्टियों में बदल गई थीं, इसलिए यह बात तो दरकिनार ही थी कि वे राजसत्ता छीनने में सर्वहारा वर्ग का मार्गदर्शन कर सकतीं। सिर्फ रूस में लेनिन के हाथों संस्थापित बोलशेविक पार्टी के नेतृत्व में महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति सफल हुई।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और इसके बाद, चीन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, जिसके नेता अध्यक्ष माओ हैं, के नेतृत्व की ही बदौलत क्रान्ति विजयी हो गई; अन्य कुछ देशों में भी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों के ही नेतृत्व में क्रान्तियां क्रमशः विजयी हो गईं या दीर्घकालीन क्रान्तिकारी संघर्ष जारी रहे। लेकिन और कुछ देशों में पार्टियों में अवसरवादी, संशोधनवादी कार्यदिशा के हावी होने की वजह से क्रान्ति विफल हो गई।

आज, विश्व-क्रान्ति में अभूतपूर्व उम्दा स्थिति दिखाई दे रही है। वस्तुगत स्थिति की यह फौरी मांग है कि सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी का सुदृढ़ नेतृत्व हो और एक ऐसी सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टी का निर्माण किया जाए जो संशोधनवादी कार्य-दिशा से कोई सम्बन्ध न रखती हो और जो विचारधारात्मक, राजनीतिक व संगठनात्मक तौर पर सुदृढ़ हो और जनव्यापी हो।

क्रान्ति का नेतृत्व करने का कार्य सम्भालने के योग्य होने की खातिर सर्वहारा राजनीतिक पार्टी के लिए बुनियादी सवाल यह है कि वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अपना मार्गदर्शक विचार बनाए, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को अपने देश की क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिलाए, और अपने देश की स्थिति के अनुकूल एक सही कार्यदिशा निर्धारित करे व उसे कार्यान्वित करे। कार्यदिशा सही हो तो कमजोर शक्ति बढ़कर मजबूत बन सकती है तथा सशस्त्र शक्तियों को कायम किया जा सकता है और राजसत्ता को प्राप्त किया जा सकता है। कार्यदिशा गलत हो तो क्रान्ति को धक्का लगेगा, और पाए हुए फलों से हाथ धोना पड़ेगा।

कामरेड माओ त्सेतुङ ने दीर्घकालीन संघर्ष में चीनी जनता की क्रान्ति का नेतृत्व करने के दौरान बारम्बार यह बताया- **''चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के सम्पर्क में आते ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी**

सच्चाई ने चीनी क्रान्ति को एक बिलकुल नए रंग में रंग दिया।''[29] और **''मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त को चीनी क्रान्ति के व्यवहार के साथ घनिष्ठता से मिलाना हमारी पार्टी का विचारात्मक उसूल रहा है।''**[30]

कामरेड माओ त्सेतुङ ने जापानी मजदूर दोस्तों के लिए लिखे अपने महत्वपूर्ण अभिलेख में इस बुनियादी उसूल की और साफ तौर पर व्याख्या करते हुए बताया: **''जापानी क्रान्ति निस्सन्देह विजयी होगी, बशर्ते कि संजीदगी से मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को जापानी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिला दिया जाए।''**[31]

सर्वहारा राजनीतिक पार्टी को चाहिए कि वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धान्तों के अनुसार, मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिबिन्दु, दृष्टिकोण और तरीका अपनाकर समाज में वर्ग-सम्बन्धों की गहराई से जांच-पड़ताल और अध्ययन करे, अपने देश की मौजूदा स्थिति, इतिहास और अपने देश की क्रान्ति की विशेषताओं का ठोस रूप से विश्लेषण करे, अपने देश की क्रान्ति के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक सवाल स्वतंत्र रूप से हल करे। अन्तरराष्ट्रीय अनुभव सीखना आवश्यक है, लेकिन सर्वहारा राजनीतिक पार्टी को इन अनुभवों की यांत्रिक रूप से नकल नहीं करनी चाहिए, बल्कि इन्हें अपने देश की वास्तविक स्थिति के साथ मिलाते हुए अपने अनुभवों का सृजन करना चाहिए। सिर्फ ऐसा करने से ही वह क्रान्ति को विजय की ओर ले जा सकती है और सर्वहारा विश्व क्रान्ति के कार्य के लिए अपना योगदान कर सकती है।

सिद्धान्त को अमल के साथ मिलाने पर कायम रहने के लिए सर्वहारा राजनीतिक पार्टी को चाहिए कि वह जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम रखे, उसके बीच रहे और **''जन-समुदाय से लेकर जन-समुदाय को ही लौटा देने''**[32] का नेतृत्वकारी तरीका लागू करे, ताकि पार्टी की सही कार्यदिशा और निर्देशक उसूल को जन-समुदाय की कार्यवाहियों में बदल सके। साथ ही उसे यह भी चाहिए कि वह अनुभवों और सबकों का निचोड़ निकालने में निपुण हो, आलोचना व आत्मालोचना करे, जनता के हित में सही बात पर दृढ़ता से डटी रहे और गलत बात को सुधारती रहे,

व्यवहारिक संघर्ष के जरिए विकास के नियम खोज निकालें और फिर उनसे व्यवहारिक संघर्ष का मार्गदर्शन करें।

कामरेड माओ त्सेतुङ ने बताया है: **''पार्टी के भीतर, विभिन्न विचारों के बीच विरोध और संघर्ष लगातार चलता रहता है; यह पार्टी के भीतर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच के अन्तरविरोधों तथा नए और पुराने के बीच के अन्तरविरोधों को प्रतिबिम्बित करता है।''**[33] अपनी राजनीतिक कार्यदिशा के सहीपन और अपनी संगठनात्मक मजबूती की गारंटी करने के लिए सर्वहारा राजनीतिक पार्टी को सभी प्रकार के अवसरवाद और संशोधनवाद के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष करना चाहिए, पूंजीपति वर्ग व अन्य तमाम शोषक वर्गों की विचारधाराओं के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष करना चाहिए।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद और संशोधनवाद के बीच का संघर्ष तथा अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में दो कार्यदिशाओं के बीच का संघर्ष दीर्घकालीन है। पिछले दस से ज्यादा वर्षों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, अलबानियाई श्रमिक पार्टी और दुनिया के तमाम सच्चे मार्क्सवादियों-लेनिनवादियों ने एक साथ मिलकर विचारधारात्मक, सैद्धान्तिक और राजनीतिक तौर पर आधुनिक संशोधनवाद जिसका केन्द्र सोवियत संशोधनवाद है, के खिलाफ दृढ़ संघर्ष किया और महान विजय हासिल की है। लेकिन संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। सर्वहारा विश्व क्रान्ति को लगातार आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न देशों की मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टियों और क्रान्तिकारी जनता का एक महत्वपूर्ण कार्य यह है कि आधुनिक संशोधनवाद जिसका केन्द्र सोवियत संशोधनवाद है, का खण्डन करना जारी रखा जाए और इस संघर्ष को अन्त तक चलाया जाए।

पूंजीपति वर्ग और अन्य सभी शोषक वर्गों की विचारधाराएं समाज में एक लम्बे अरसे से शासन के स्थान पर रही हैं। चाहे विकसित पूंजीवादी देशों में हो या आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों में, चाहे कम्युनिस्ट पार्टी को कानूनी स्थान प्राप्त हो या नहीं, चाहे सर्वहारा वर्ग द्वारा राजसत्ता प्राप्त करने से पहले हो या सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना के बाद, पूंजीपति वर्ग हमेशा ही विभिन्न तरीकों और रास्तों के जरिए विचारधारात्मक तौर पर

कम्युनिस्ट पार्टी पर असर डालने, उसे भ्रष्ट करने और ''विघटन'' के लिए भरसक कोशिश करता है। अगर सर्वहारा राजनीतिक पार्टी पूंजीवादी विचारधारा के हमले के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष न चलाए, तो वह अपनी विचारधारात्मक, राजनीतिक व संगठनात्मक स्वाधीनता को बरकरार नहीं रख सकेगी और वह पूंजीपति वर्ग और उसकी राजनीतिक पार्टी की दुम बन जाएगी। सर्वहारा राजनीतिक पार्टी तभी अपनी जुझारू शक्ति प्रदर्शित कर सकती है और सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय प्राप्त कर सकती है जब वह सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण से पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी विश्व दृष्टिकोण पर विजय प्राप्त करने के लिए मार्क्सवाद लेनिनवाद को खण्डन के हथियार के तौर पर इस्तेमाल करती है और विचारधारात्मक क्षेत्र में वर्ग संघर्ष पर डटी रहती है।

5. आधुनिक संशोधनवादी पेरिस कम्यून के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों के गद्दार हैं

इस समय जबकि सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग और क्रान्तिकारी लोग बड़ी धूमधाम के साथ पेरिस कम्यून की शतवार्षिक जयन्ती मना रहे हैं, सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट अपने आपको सजा संवार कर रंगमंच पर चढ़ आया है तथा उसने ''पेरिस कम्यून के सिद्धान्तों से वफादार रहने''[34] की लम्बी-चौड़ी बातें की हैं और अपने आपको पेरिस कम्यून के उत्तराधिकारी के रूप में पेश किया है। यह सचमुच बेहयाई की चरम सीमा है।

सोवियत संशोधनवादी गद्दारों को पेरिस कम्यून की चर्चा करने का क्या हक है? इन्हीं गद्दारों के गिरोह ने सोवियत संघ में पार्टी और राज्य का नेतृत्व नाजायज तरीके से हथिया लिया है, फलस्वरूप सोवियत राज्य जिसकी स्थापना लेनिन ने की थी और जिसकी रक्षा स्तालिन ने की थी, का राजनीतिक रंग बदल गया है। इन्हीं गद्दारों ने सर्वहारा अधिनायकत्व को बुर्जुआ अधिनायकत्व में बदल डाला है और सामाजिक-साम्राज्यवाद और सामाजिक फासिज्म लागू किया है। ये पेरिस कम्यून के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों के प्रति सरासर गद्दारी है।

ख्रुश्चोव से लेकर ब्रेजनेव तक इन सब ने "समूची जनता के राज्य" के साइनबोर्ड के सहारे अपने बुर्जुआ अधिनायकत्व पर पर्दा डालने की कोशिश की है। ख्रुश्चोव कहा करता था कि सोवियत संघ "समूची जनता के राज्य में बदल चुका है"।[35] आज ब्रेजनेव और उसके जैसे लोग यह कहते फिरते हैं कि उनका राज्य "समूची जनता का सोवियत समाजवादी राज्य"[36] है, और वे "सोवियत जनवाद" लागू कर रहे हैं। यह तमाम की तमाम शेखीभरी बकवासें हैं।

सोवियत, रूसी सर्वहारा वर्ग का महान सृजन, मेहनतकश जनता के अपने देश के आप स्वामी बनने की अभिव्यक्ति थी तथा एक गौरवपूर्ण नाम था। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के नाम की तरह, सोवियत यह नाम बोलशेविक इस्तेमाल कर सकते हैं और मेनशेविक भी; मार्क्सवादी-लेनिनवादी इस्तेमाल कर सकते हैं और संशोधनवादी भी। सवाल का निर्णय नाम से नहीं बल्कि सारतत्व से होता है, रूप से नहीं बल्कि अन्तर्वस्तु से होता है। आज सोवियत संघ में सोवियत यह नाम नहीं बदला है, न ही राज्य का नाम बदला है, मगर वर्ग अन्तर्वस्तु एकदम बदल गई है। सोवियत राज्य, जिसका नेतृत्व सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट ने नाजायज तरीके से हथिया लिया है, अब एक ऐसा साधन नहीं रहा जिसके जरिए सर्वहारा वर्ग पूंजीपति वर्ग का दमन करता है, बल्कि एक ऐसा साधन बन गया है जिसके जरिए पूंजीपति वर्ग, जो अपनी सत्ता को फिर से हथियाए हुए है, सर्वहारा वर्ग का दमन कर रहा है। सोवियत संशोधनवादी गद्दारों ने सोवियत संघ को मुट्ठी भर लोगों से बने एक नए किस्म के नौकरशाही इजारेदार पूंजीपति वर्ग के लिए स्वर्गलोक और लाखों करोड़ों मेहनतकश जनता के लिए कालकोठरी बना दिया है। यही उनके कथित "समूची जनता के सोवियत समाजवादी राज्य" और "सोवियत जनवाद" की सम्पूर्ण अन्तर्वस्तु है। हकीकत बिलकुल यह नहीं है कि "समूची जनता का राज्य सर्वहारा अधिनायकत्व वाले राज्य का प्रत्यक्ष जारी रूप है"[37] बल्कि यह है कि ब्रेजनेव की कार्यदिशा ख्रुश्चोव की कार्यदिशा का "प्रत्यक्ष जारी रूप" है। यही इस बात का सारतत्व है कि ब्रेजनेव और उसके जैसे लोग आज "समूची जनता के राज्य" के नारे से क्यों चिपके हुए हैं।

पेरिस कम्यून के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट का विश्वासघात इस बात में भी केन्द्रित रूप से अभिव्यक्त होता है कि वे सर्वहारा हिंसात्मक क्रान्ति का पागलपन से विरोध करते हैं। ब्रेजनेव और उसके जैसे लोग यह चीख पुकार करते हैं कि "सर्वहारा वर्ग के नेताओं को संघर्ष के हरेक दौर में हिंसा को न्यूनतम हद तक कम करना चाहिए" और "जोर-जबरदस्ती के और अधिक नरम रूप अपनाने चाहिए", तथा "सशस्त्र संघर्ष और गृह-युद्ध के साथ भारी कुरबानियां और जन-समुदाय की मुसीबतें, उत्पादक-शक्तियों की बरबादी और श्रेष्ठ क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं का विनाश जुड़े हुए हैं।" अपनी "शान्तिपूर्ण संक्रमण" की बेहूदा दलील के लिए बहाना गढ़ने में गद्दारों के इस गिरोह ने मनमाने ढंग से इतिहास को तोड़ मरोड़ कर पेश किया है और यह प्रचार किया है कि पेरिस कम्यून "शुरू में" "लगभग एक रक्तपातहीन क्रान्ति"[38] था।

पेरिस कम्यून की क्रान्ति शुरू से अंत तक सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच जीवन मरण की भिड़ाई रही थी और क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच का हिंसात्मक संघर्ष रही थी। पेरिस कम्यून बगावत से पहले, आध साल से भी कम समय में पेरिस की जनता ने दो बार हथियारबन्द बगावत की थी, लेकिन इन दोनों का प्रतिक्रियावादियों द्वारा खूनी दमन कर दिया गया। पेरिस कम्यून बगावत शुरू होने के बाद के संग्राम के दौरान दसियों हजार मजदूरों और अन्य मेहनतकश लोगों ने अपनी जान कुरबान कर दी थी। तब यह कैसे कहा जा सकता है कि "शुरू में" यह क्रान्ति "लगभग एक रक्तपातहीन क्रान्ति" थी? मार्क्स ने बताया था: **"मजदूरों का पेरिस और उसका कम्यून नए समाज के गौरवशाली अग्रदूत के रूप में सदा के लिए लोगों के आदर के पात्र बने रहेंगे। उसके शहीदों को मजदूर वर्ग के महान हृदय-मन्दिर में हमेशा के लिए जगह मिल गई है। उसके जल्लादों को इतिहास ने हमेशा के लिए उस सूली पर ठोंक दिया है जहां से उनके पुजारियों की प्रार्थनाएं किसी भी तरह उन्हें छुटकारा नहीं दिला सकेंगी।"**[39] अब सोवियत संशोधनवादी गद्दार गुट खुल्लमखुल्ला मैदान में उतरकर जल्लादों के लिए

प्रार्थना करने वाले पुजारियों का पार्ट अदा कर रहा है। यह पेरिस कम्यून के शहीदों के प्रति घोर अपमान है।

सोवियत संशोधनवादी गद्दार प्रतिक्रान्तिकारी हिंसा की वकालत करने में एड़ी-चोटी का जोर लगाते हैं, जबकि वे क्रान्तिकारी हिंसा को दांत पीस पीस कर कोसते हैं। साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादियों के हिंसात्मक शासन तले मेहनतकश लोग हर रोज, हर घण्टे, हर मिनट अगण्य मुसीबतें झेलते हैं और बड़ी संख्या में मर जाते हैं। इस आदमखोर व्यवस्था का अन्त करने और जनता को गुलामी और शोषण से छुटकारा दिलाने के लिए ही उत्पीड़ित जनता हिंसात्मक क्रान्ति चलाती है। लेकिन सोवियत संशोधनवादी गद्दारों ने क्रान्तिकारी सशस्त्र शक्तियों और क्रान्तिकारी युद्धों पर यह कहकर बहुत से दोष लगाए हैं कि ये "जनता के लिए मुसीबतें" लाएंगे, "कार्यकर्ताओं का विनाश" करेंगे और "उत्पादक-शक्तियों की बरबादी" करेंगे, आदि आदि। क्या इन गद्दारों के तर्क का मतलब यह नहीं हुआ कि साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादियों द्वारा जनता का उत्पीड़न और कत्लेआम करना न्याय है, जबकि क्रान्तिकारी जनता द्वारा हथियार उठाना और प्रतिरोध करना घोर अपराध है?

सोवियत संशोधनवादी गद्दार यह चाहते हैं कि विभिन्न देशों की जनता अपनी क्रान्तिकारी हिंसा को "न्यूनतम हद तक कम करे", लेकिन वे खुद अपनी प्रतिक्रान्तिकारी हिंसा को लगातार उच्चतम हद तक बढ़ाते जा रहे हैं। सोवियत जनता के जीवन मरण की परवाह न करके ब्रेजनेव और उसके जैसे लोग ज्यादा से ज्यादा हवाई जहाज, तोपें, युद्धपोत, गाइडेड मिसाइल और नाभिकीय हथियार बनाने में ज्यादा से ज्यादा रूबल खर्च करके सैन्यवाद और शस्त्रीकरण दौड़ पर पूरा जोर लगा रहे हैं। इसी विशालकाय हिंसात्मक मशीनरी के बल पर वे देश के अन्दर व्यापक जनता का उत्पीड़न करते हैं और देश के बाहर नए जारशाहों के उपनिवेशी शासन को बरकरार रखते हैं तथा कुछ देशों को अपने काबू में रखने की हरचन्द कोशिश करते हैं। वे इसी हिंसात्मक मशीनरी को अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ सौदेबाजी करने, बल-राजनीति लागू करने और प्रभाव-क्षेत्र निर्धारित करने के लिए पूंजी के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

सोवियत संशोधनवादी गद्दार चाहते हैं कि क्रान्तिकारी जनता प्रतिक्रान्ति के प्रति तथाकथित "जोर-जबरदस्ती के नरम रूप" अपनाए, लेकिन वे खुद क्रान्तिकारी जनता के खिलाफ सबसे बर्बरतापूर्ण व सबसे क्रूरतापूर्ण हथकंडे अपनाते हैं।

यहां हम पूछना चाहते हैं:

क्या यह एक "नरम" रूप है कि तुम लोगों ने बड़ी तादाद में हथियारबन्द फौजें व पुलिस भेजकर अपने देश की विभिन्न जातियों की जनता का दमन किया?

क्या यह एक "नरम" रूप है कि तुम लोगों ने कुछ पूर्वी यूरोपीय देशों और मंगोलिया लोक गणराज्य को अपने कड़े नियंत्रण में रखने के लिए वहां अपनी भारी फौजें तैनात कर दीं, यहां तक कि तुम लोगों ने अपने टैंक प्राग में भेजकर चेकोस्लोवाकिया पर फौजी कब्जा जमा लिया?

और क्या यह एक "नरम" रूप है कि तुम लोग हर जगह फौजी विस्तार करते हो और दूसरे देशों के खिलाफ तरह तरह की साजिशभरी उन्मूलनकारी कार्यवाहियां करते हो?

सोवियत संशोधनवादी गद्दारों की हरकतों से पूर्ण रूप से यह जाहिर होता है कि वे न सिर्फ हिंसात्मक क्रान्ति का विरोध करते हैं, बल्कि वे हिंसा का इस्तेमाल कर क्रान्ति का भी विरोध करते हैं व दयावान का रूप धरे बैठे हैं मगर दरअसल वे **"मजदूरों का सबसे खूंखार दुश्मन हैं और भेड़ की खाल ओढ़े भेड़िये हैं"।**[40]

उधर, जापान में एक मियामोतो संशोधनवादी गुट भी है, जो हिंसात्मक क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व का विरोध करने में एड़ी चोटी का जोर लगाता है और यह ढोल पीटता है कि संसद-रास्ता अपनाने के लिए "भरसक कोशिश करना जरूरी है"।[41] दिमाग खपा खपा कर वह यह बकवास करता है कि शब्दकोश में "हिंसा" शब्द का अर्थ "उद्दंडता" या "विधिहीनता" होता है, और जनता को इस तरह की क्रान्ति नहीं करनी चाहिए।[42] वह यह भी कहता है कि कुछ लोग "सर्वहारा अधिनायकत्व" इस शब्द से "भयभीत" हो गए हैं; इस शब्द का अनुवाद "बहुत अनुपयुक्त" है और बाद में "इसका सही अर्थ से ठीक ठीक अनुवाद

करना''[43] चाहिए। अमरीकी साम्राज्यवाद और जापानी सैन्यवाद की हिंसा को बनाए रखने और जापानी जनता की क्रान्ति का विरोध करने की खातिर मियामोतो गुट को शब्दकोश तक का सहारा लेना पड़ा है और शब्दार्थ की परख का खेल खेलना पड़ा है। इससे यह सिद्ध होता है कि आधुनिक संशोधनवाद मानसिक तौर पर किस हद तक पतित हो चुका है।

कामरेड माओ त्सेतुङ ने बताया है कि "**समाजवादी व्यवस्था अन्त में पूंजीवादी व्यवस्था की जगह ले लेगी; यह मनुष्य की इच्छा से स्वतंत्र एक वस्तुगत नियम है।**"[44] आधुनिक संशोधनवाद का अव्वल नम्बर का प्रतिनिधि ख्रुश्चेव कब से ही इतिहास के कूड़े के ढेर में फेंका जा चुका है। ख्रुश्चेवी संशोधनवादी कार्यदिशा के अनुयायी नोवोत्नी और गोमुलका का भी क्रमश: पतन हो चुका है। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि जो कोई भी इतिहास के नियमों के विरुद्ध आचरण करता है और पेरिस कम्यून के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों तथा सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व से गद्दारी करता है, उसका अच्छा अन्जाम कतई नहीं होगा।

6. सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने पर डटे रहो, तथा और बड़ी विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करो

पेरिस कम्यून से और खासकर अक्तूबर क्रान्ति से लेकर अब तक के ऐतिहासिक अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि सर्वहारा वर्ग द्वारा राजसत्ता प्राप्त किया जाना समाजवादी क्रान्ति की शुरुआत होती है, न कि इसकी समाप्ति। सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम करने के लिए यह लाजिमी है कि समाजवादी क्रान्ति को अन्त तक चलाया जाए।

सर्वहारा विश्व-क्रान्ति के आन्दोलन ने टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता तय किया है। उस समय जबकि अक्तूबर क्रान्ति की जन्मभूमि में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की जा रही थी, यह कुछ समय के लिए एक प्रश्न सा बन

गया था कि पेरिस कम्यून के क्रान्तिकारी सिद्धान्त, अक्तूबर क्रान्ति और सर्वहारा अधिनायकत्व अब भी पुरअसर हैं या नहीं। साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी खुशी के मारे आपे से बाहर हो गए थे। उनका विचार था कि जब सोवियत संघ "शान्तिपूर्ण विकास" के जरिए बदल गया है, तो क्या चीन में सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता इसी तरीके से उलट देना सम्भव नहीं है? लेकिन महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, जिसका सूत्रपात खुद अध्यक्ष माओ ने किया है और जो उन्हीं के नेतृत्व में चल रही है, की तोप की गूंज से बुर्जुआ हेडक्वार्टर को, जिसका सरगना गद्दार, दुश्मन-एजेन्ट व म्केब ल्यू शाओ ची था, नेस्तनाबूद कर दिया गया और चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने का साम्राज्यवाद और आधुनिक संशोधनवाद का सुनहरा सपना खाक में मिला दिया गया।

अध्यक्ष माओ ने सर्वहारा अधिकनायकत्व के सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के ऐतिहासिक अनुभवों का सर्वांगीण रूप से निचोड़ निकाला है, सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में मार्क्सवादी लेनिनवादी सिद्धान्त को विरासत के रूप में ग्रहण किया है, उसकी रक्षा की है और उसका विकास किया है, सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति जारी रखने के बारे में महान शिक्षा पेश की है और मौजूदा जमाने के सबसे महत्वपूर्ण सवाल यानी सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम करने के सवाल को सैद्धान्तिक और व्यवहारिक तौर पर सुलझा दिया है। इस तरह उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के लिए महान व नया योगदान किया है और हमारे लिए सर्वहारा क्रान्ति को विजयपूर्वक अंत तक चलाने का रास्ता खोल दिया है। चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान, माओ त्सेतुङ विचारधारा और अध्यक्ष माओ की क्रान्तिकारी कार्यदिशा करोड़ों-करोड़ जन-समुदाय के क्रान्तिकारी अमल के साथ अधिकाधिक गहन रूप से मिलती जा रही हैं और यह सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने के लिए एक सबसे महान शक्ति बन गई है।

समाजवादी समाज एक काफी लम्बा ऐतिहासिक दौर है। इस पूरे ऐतिहासिक दौर में वर्ग, वर्ग अन्तरविरोध और वर्ग-संघर्ष मौजूद रहते हैं।

संघर्ष फिर भी राजसत्ता के सवाल पर केन्द्रित रहता है। पराजित वर्ग अवश्य ही हाथ पैर मारेगा। ये लोग अब भी मौजूद हैं और यह वर्ग अब भी मौजूद है। वे पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने के लिए निरपवाद रूप से कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर अपने एजेंटों की तलाश करने की कोशिश करते हैं। इसलिए, सर्वहारा वर्ग को न केवल थिएर व बिस्मार्क जैसे दुश्मनों से सतर्क रहना चाहिए जो शस्त्र बल के जरिए क्रान्तिकारी राजसत्ता का तख्ता उलट देते हैं, बल्कि उसे खास तौर से ख्रुश्चोव और ब्रेजनेव जैसे कैरियरवादियों, षडयंत्रकारियों से भी सतर्क रहना चाहिए जो भीतर से पार्टी व राज्य का नेतृत्व नाजायज तरीके से हथिया लेते हैं। सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम करने के लिए सर्वहारा वर्ग को आर्थिक मोर्चे पर समाजवादी क्रान्ति चलाने के अलावा राजनीतिक और विचारधारात्मक व सांस्कृतिक मोर्चों पर भी समाजवादी क्रान्ति चलानी चाहिए तथा ऊपरी ढांचे में, जिसमें संस्कृति के सभी क्षेत्र शामिल हैं, पूंजीपति वर्ग पर चौतरफा अधिनायकत्व लागू करना चाहिए। इस बात की गारंटी करने के लिए कि हमारी पार्टी व राज्य हमेशा अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ते जाएं, पार्टी सदस्यों, कार्यकर्ताओं व व्यापक जन-समुदाय को सबसे तीक्ष्ण हथियार - मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर महारत हासिल करने में मदद दी जानी चाहिए ताकि वे सही व गलत कार्यदिशाओं के बीच और सच्चे व नकली मार्क्सवाद के बीच तथा भौतिकवाद और आदर्शवाद के बीच फर्क करने के योग्य हो जाएं।

अध्यक्ष माओ ने बताया कि "**किसी एक समाजवादी देश की आखिरी विजय के लिए न सिर्फ इस बात की जरूरत होती है कि उसी देश का सर्वहारा वर्ग और विशाल जन-समुदाय प्रयत्न करे, बल्कि यह तकाजा भी है कि विश्व-क्रान्ति भी विजय प्राप्त करे, पूरी पृथ्वी पर मानव द्वारा मानव का शोषण करने की व्यवस्था का खात्मा हो, जिससे कि सारी मानव जाति मुक्त हो जाए।**"[45]

सर्वहारा क्रान्तिकारी आन्दोलन हमेशा ही अन्तरराष्ट्रीय होता है। इसलिए सर्वहारा क्रान्ति व सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय हासिल करने के लिए

इन महान नारों को साकार बनाना जरूरी है- "**दुनिया के मजदूरो, एक हो**"[46] और "**सारी दुनिया के मजदूरो और उत्पीड़ित राष्ट्रो, एक हो**"।[47] पूंजीवादी देशों के सर्वहारा वर्ग को उपनिवेशों व अर्ध-उपनिवेशों की जनता के मुक्ति-संघर्ष का समर्थन करना चाहिए और उपनिवेशों व अर्ध उपनिवेशों की जनता को पूंजीवादी देशों के सर्वहारा वर्ग के मुक्ति-संघर्ष का समर्थन करना चाहिए, जो जनता अपनी क्रान्ति में विजय प्राप्त कर चुकी है उसे मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही जनता की सहायता करनी चाहिए। यही, सर्वहारा अन्तरराष्ट्रवाद का उसूल है।

चीनी क्रान्ति विश्व-क्रान्ति का एक अंग है। चीनी जनता का क्रान्तिकारी कार्य और दुनिया के अन्य देशों की जनता का क्रान्तिकारी कार्य एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं और एक ही सूत्र में बंधे हुए हैं। हम हमेशा से अन्य देशों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्ष को खुद अपना ही संघर्ष समझते हैं और उसे चीनी जनता के लिए सहायता मानते हैं; हमें अन्य देशों की क्रान्तिकारी जनता से सीखना चाहिए और उसके संघर्ष का दृढ़तापूर्वक समर्थन करना चाहिए तथा अपना अपरिहार्य कर्तव्य निभाना चाहिए और बड़ी विजय प्राप्त करने के लिए हमें चाहिए कि हम सर्वहारा अन्तरराष्ट्रवाद की भावना प्रदर्शित करें और सारी दुनिया की सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों व संगठनों के साथ और सारी दुनिया के सर्वहारा वर्ग, उत्पीड़ित जनता व उत्पीड़ित राष्ट्रों के साथ अपनी जुझारू एकता को और अधिक मजबूत बनाएं।

सौ साल पहले, मार्क्स ने यह बताया था कि "**चाहे पेरिस में कम्यून का भाग्य कैसा भी क्यों न हो, वह सारी दुनिया में अपने पांव जमाकर ही रहेगा।**"[48] मार्क्स की यह महान भविष्यवाणी समय बीतने के साथ-साथ ज्वलन्त वास्तविकता में परिणत होती जा रही है। अतीत का सिंहावलोकन और भविष्य का अवलोकन करते हुए हम और अधिक पक्के विश्वास के साथ यह घोषित करते हैं कि साम्राज्यवाद, आधुनिक संशोधनवाद और सभी देशों के प्रतिक्रियावादियों का आखिरी खात्मा तथा सर्वहारा वर्ग और उत्पीड़ित जनता व उत्पीड़ित राष्ट्रों की पूर्ण मुक्ति अनिवार्य है।

''इन्टरनेशनल'' गीत जिसके बोल पेरिस कम्यून के कवि युज्नी पाटेर ने लिखे हैं, आज दुनिया के कोने-कोने में गूंज रहा है। ''पुरानी दुनिया को तहस-नहस कर दो''। ''हम दुनिया के मालिक होकर ही रहेंगे!'' ''एकजुट हो जाओ'', ''इन्टरनेशनल निश्चय ही साकार होकर रहेगा!'' विश्व जनता की क्रान्ति के जबरदस्त तूफान के सामने साम्राज्यवादियों, सामाजिक-साम्राज्यवादियों और तमाम प्रतिक्रियावादियों को कांपने दो! क्रान्ति में '' **मजदूरों के पास खोने के लिए अपनी बेड़ियों के सिवा और कुछ नहीं है। जीतने के लिए उनके सामने सारी दुनिया है।''**[49]

नोट

एंगेल्स, ''पेरिस कम्यून की 21वीं जयन्ती पर फ्रांसीसी मजदूरों के नाम अभिनन्दन पत्र'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 22, पृष्ठ 331।

मार्क्स, ''पेरिस कम्यून की पहली जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित स्मृति-सभा के प्रस्ताव'', मार्क्स एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 18, पृष्ठ 61।

मार्क्स, ''पेरिस कम्यून के बारे में एक भाषण का रिकार्ड'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 677।

मार्क्स, ''फ्रांस में गृहयुद्ध'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 355।

मार्क्स, ''फ्रांस में गृहयुद्ध'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 360। मार्क्स, ''एल. कुगेलमान के नाम पत्र 12 अप्रैल 1871'', ''मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन: पेरिस कम्यून के बारे में'', दूसरा चीनी संस्करण, जन प्रकाशन-गृह, 1971, पृष्ठ 215।

मार्क्स, ''इन्टरनेशनल की 7वीं जयन्ती की स्मृति में'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 468।

वही।

मार्क्स, ''फ्रांस में गृहयुद्ध'', मार्क्स एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 358।

लेनिन, ''राजसत्ता और क्रान्ति'', ग्रन्थावली चीनी संस्करण, ग्रन्थ 25, पृष्ठ 389।

लेनिन ''कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की पहली कांग्रेस'', ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 28, पृष्ठ 443।

माओ त्सेतुङ ''वर्तमान परिस्थिति और हमारे कार्य'' संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 4, पृष्ठ 1260।

मार्क्स और एंगेल्स, ''पेरिस कम्यून की स्मृति में लन्दन में आयोजित स्मारक सभा के सभापति के नाम'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 19, पृष्ठ 271।

लेनिन, ''राजसत्ता और क्रान्ति'', ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 25, पृष्ठ 436।

एंगेल्स, ''प्राधिकार के बारे में'', मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 18, पृष्ठ 344।

माओ त्सेतुङ, ''युद्ध और रणनीति की समस्याएं'', संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 2, पृष्ठ 535।

वही।

माओ त्सेतुङ, ''सारी दुनिया के लोगो एक हो जाओ, अमरीकी आक्रमणकारियों तथा उनके तमाम पालतू कुत्तों को शिकस्त दो!'', 20 मई 1970।

लेनिन, ''रूसी क्रान्ति में सामाजिक-जनवादी पार्टी का भूमि-कार्यक्रम'', ग्रन्थावली चीनी संस्करण, ग्रन्थ 15, पृष्ठ 152।

लेनिन, ''राजसत्ता और क्रान्ति'' ग्रन्थावली, चीनी संस्करण ग्रन्थ 25, पृष्ठ 401।

मार्क्स, ''एल. कुगेलमान के नाम पत्र, 12 अप्रैल 1871'', ''मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन: पेरिस कम्यून के बारे में'', दूसरा चीनी संस्करण, जन प्रकाशन-गृह, 1971, पृष्ठ 215।

लेनिन, ''एल. कुगेलमान के नाम कार्ल मार्क्स के पत्रों के रूसी अनुवाद की भूमिका'' ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 12, पृष्ठ 101।

''मार्क्सवादियों को किस प्रकार क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन के प्रति सही रुख अपनाना चाहिए'' पर अध्यक्ष माओ की टिप्पणी, 15 अगस्त 1959। इस टिप्पणी में अध्यक्ष माओ ने लेनिन के जिन शब्दों को उद्धृत किया है उसके

लिए देखिए: लेनिन, "एक महान श्रीगणेश", ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 29, पृष्ठ 386; और "अक्तूबर क्रान्ति की चौथी जयन्ती", ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 33, पृष्ठ 35।

[23]देखिए नोट 17।

[24]माओ त्सेतुङ, "संगठित हो जाओ!", संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 3, पृष्ठ 936।

[25]"सर्वहारा नए खून को समाविष्ट करो", "हुङछी" का सम्पादकीय, अंक 4, 1968।

[26]माओ त्सेतुङ, "मिलीजुली सरकार के बारे में", संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 3, पृष्ठ 1097।

[27]मार्क्स और एंगेल्स, "हेग में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय मजदूर संघ की आम कांग्रेस के प्रस्ताव", मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 18, पृष्ठ 165।

[28]माओ त्सेतुङ, "दुनिया की क्रान्तिकारी शक्तियां एक हो जाओ, साम्राज्यवादी आक्रमण के खिलाफ संघर्ष करो!", संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 4, पृष्ठ 1360।

[29]माओ त्सेतुङ, "अपने अध्ययन में सुधार करो", संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 3, पृष्ठ 795।

[30]माओ त्सेतुङ, "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की आठवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में उद्घाटन भाषण", 15 सितम्बर 1956।

[31]"जापानी मजदूर दोस्तों के लिए अध्यक्ष माओ का महत्वपूर्ण अभिलेख (18 सितम्बर 1962), "रनमिन रपाओ", 18 सितम्बर 1968।

[32]माओ त्सेतुङ, "नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित कुछ सवाल", संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 3, पृष्ठ 901।

[33]माओ त्सेतुङ, "अन्तरविरोध के बारे में", संकलित रचनाएं, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 1, पृष्ठ 294।

[34]"पेरिस कम्यून और वर्तमान वास्तविकता", सोवियत संशोधनवादी "कम्युनिस्ट" का लेख, अंक 2, 1971।

[35]सोवियत संशोधनवादी "22वीं कांग्रेस" में "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम" के बारे में ख्रुश्चेव की रिपोर्ट, 18 अक्तूबर 1961।

[36]लेनिन की शतवार्षिक जन्म-जयन्ती की "स्मृति" में आयोजित सभा में ब्रेजनेव की रिपोर्ट, 21 अप्रैल 1970।

[37]"समूची जनता का राज्य और लोकशाही", सोवियत संशोधनवादी "प्राव्दा" में प्रकाशित लेख, 7 जून 1970।

[38]सोवियत संघ में अगस्त 1970 में "मिस्ल" प्रकाशन गृह द्वारा प्रकाशित एफ. कोन्सतन्तीनोव और दूसरे लोगों द्वारा सम्पादित चीन विरोधी विषैली पुस्तक, रूसी संस्करण, पृष्ठ 119-120।

[39]मार्क्स, "फ्रांस में गृहयुद्ध", मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 384।

[40]एंगेल्स, " 'इंग्लैंड में मजदूर वर्ग की हालत' के दूसरे जर्मनी संस्करण की भूमिका, 1892", मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 22, पृष्ठ 373।

[41]सानजो नोसाका की एक वार्ता, "आकाहाता", 3 जनवरी 1971।

[42]लेनिन की शतवार्षिक जन्म जयन्ती की "स्मृति" में जापानी संशोधनवादियों द्वारा आयोजित सभा में कोरेहीतो कुराहारा का भाषण, "आकाहाता", 2 अप्रैल 1970।

[43]जापानी संशोधनवादी क्योतो कमेटी द्वारा बुलाई गई एक रैली में केनजी मियामोतो का भाषण, "आकाहाता", 20 मार्च 1970।

[44]माओ त्सेतुङ, "महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की 40वीं जयन्ती के उपलक्ष में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत की मीटिंग में भाषण", 6 नवम्बर 1957।

[45]चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में दी गई रिपोर्ट से उद्धृत।

[46]मार्क्स और एंगेल्स, "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र", चीनी संस्करण, जन प्रकाशन-गृह, 1964, पृष्ठ 58।

[47]लेनिन, "रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) के मास्को पार्टी संगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में भाषण", ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 31, पृष्ठ 412।

[48]मार्क्स, " 'फ्रांस में गृहयुद्ध' का पहला मसौदा", मार्क्स-एंगेल्स ग्रन्थावली, चीनी संस्करण, ग्रन्थ 17, पृष्ठ 587।

[49]देखिए नोट 46।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का फैसला

(8 अगस्त 1966 को स्वीकृत)

1. समाजवादी क्रान्ति की एक नई मंजिल

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, जिसका आजकल विकास हो रहा है, एक भारी क्रान्ति है जो लोगों की सम्पूर्ण चेतना का स्पर्श करती है तथा हमारे देश में समाजवादी क्रान्ति के विकास की एक नई मंजिल की, पहले से ज्यादा गहन और पहले से ज्यादा व्यापक मंजिल की द्योतक है।

पार्टी की आठवीं केन्द्रीय कमेटी के दसवें पूर्ण अधिवेशन में कामरेड माओ त्सेतुङ ने कहा था: किसी भी राजसत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए, हमेशा ही सबसे पहले इस बात की जरूरत होती है कि लोकमत तैयार किया जाय, विचारधारात्मक क्षेत्र में कार्य किया जाय। यह बात जहां क्रान्तिकारी वर्ग पर लागू होती है वहां प्रतिक्रान्तिकारी वर्ग पर भी लागू होती है। कामरेड माओ त्सेतुङ की यह स्थापना व्यवहार में बिलकुल सही साबित हो चुकी है।

यद्यपि पूंजीपति वर्ग का तख्ता पलटा जा चुका है, तथापि वह आज भी शोषक वर्गों के पुराने विचारों, पुरानी संस्कृति, पुराने रिवाजों और पुरानी आदतों का इस्तेमाल करके आम जनता का आचरण-भ्रष्ट करने, उसके दिमाग को अपने काबू में करने तथा सत्ता फिर से हथियाने की कोशिश कर रहा है। सर्वहारा वर्ग को इससे बिलकुल उल्टी कार्यवाही करनी चाहिए: उसे विचारधारात्मक क्षेत्र में पूंजीपति वर्ग की हर चुनौती का डट कर सामना करना चाहिए तथा सर्वहारा वर्ग के नए विचारों, नई संस्कृति, नए रिवाजों और नई आदतों का इस्तेमाल करके समूचे समाज की मानसिक स्थिति को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। इस समय हमारा लक्ष्य है उन कर्ताधर्ता लोगों के खिलाफ संघर्ष करना और उन्हें धराशायी कर देना जो पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं, विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी "धुरंधर विद्वानों" और पूंजीपति वर्ग व तमाम शोषक वर्गों की विचारधारा की आलोचना करना और उनका खण्डन करना, तथा शिक्षा, साहित्य व कला तथा ऊपरी ढांचे के उन तमाम अंगों का रूपान्तर कर देना जो समाजवादी आर्थिक आधार के अनुरूप नहीं हैं, ताकि समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ़ व विकसित किया जा सके।

2. मुख्य धारा और टेढ़ेमेढ़े रास्ते

मजदूर, किसान, सैनिक, क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी और क्रान्तिकारी कार्यकर्ता इस महान सांस्कृतिक क्रान्ति की मुख्य शक्ति हैं। क्रान्तिकारी नौजवानों की बहुत बड़ी तादाद, जिसे पहले कोई जानता भी नहीं था, हौसले और हिम्मत से ओतप्रोत अग्रिम दस्ते के रूप में काम कर रही है। वे भरपूर शक्ति से काम करते हैं और बड़े बुद्धिमान हैं। बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों और बड़े-बड़े वाद विवादों के जरिए, वे लोग बहस छेड़ते हैं, पूरी तरह बेनकाब कर डालते हैं और आलोचना करते हैं, तथा पूंजीपति वर्ग के खुले और छिपे हुए प्रतिनिधियों पर दृढ़तापूर्वक प्रहार करते हैं। इस प्रकार के महान क्रान्तिकारी आन्दोलन में उनके द्वारा किसी भी किस्म की कमी जाहिर न होने देना नामुमकिन है, लेकिन उनकी मुख्य क्रान्तिकारी दिशा शुरू से ही सही रही है। यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की मुख्य धारा है। यह एक मुख्य दिशा है जिसकी तरफ महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति लगातार आगे बढ़ती जा रही है।

चूंकि सांस्कृतिक क्रान्ति एक क्रान्ति है, इसलिए प्रतिरोध का सामना करना इसके लिए अनिवार्य हो जाता है। यह प्रतिरोध मुख्य रूप से ऐसे कर्ताधर्ता लोग करते हैं जो मौका पाकर पार्टी में आ घुसे हैं तथा पूंजीवाद का रास्ता अपना रहे हैं। इस प्रतिरोध का जन्म समाज की पुरानी पकी हुई आदतों से भी होता है। इस समय यह प्रतिरोध अपेक्षाकृत अधिक कड़ा और हठधर्मी भरा है। लेकिन महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति आखिर एक अदम्य व्यापक धारा है। इस बात के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं कि जहां एक बार आम जनता पूरी तरह जागृत हो गई, तो इस प्रकार का प्रतिरोध बड़ी जल्दी खत्म हो जाएगा।

चूंकि यह प्रतिरोध अपेक्षाकृत कड़ा है, इसलिए इस संघर्ष में हमें पस्पाइयों का सामना करना पड़ेगा, यहां तक कि बार-बार पस्पाइयों का सामना करना पड़ेगा। इससे कोई नुकसान नहीं होगा। इससे सर्वहारा वर्ग और अन्य मेहनतकश लोग, खास तौर पर नौजवान लोग तपकर फौलाद

बन जाते हैं, उन्हें शिक्षा प्राप्त होती है और अनुभव प्राप्त होता है, तथा उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि क्रान्ति का रास्ता एक टेढ़ामेढ़ा रास्ता है, सीधा नहीं।

3. साहस को सर्वोपरि रक्खो और निर्भीकता के साथ आम जनता को जागृत करो

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के परिणाम का निर्णय इस बात से होगा कि पार्टी-नेतृत्व निर्भीकता के साथ आम जनता को जागृत करने का साहस रखता है अथवा नहीं।

इस समय, अलग-अलग स्तर के पार्टी-संगठनों द्वारा सांस्कृतिक क्रान्ति आन्दोलन को प्रदान किए जाने वाले नेतृत्व के क्षेत्र में चार अलग-अलग स्थितियां मौजूद हैं:

(1) एक स्थिति ऐसी है जिसमें पार्टी-संगठनों के कर्ताधर्ता लोग आन्दोलन के हिरावल दस्ते में मौजूद रहते हैं तथा बड़ी निर्भीकता के साथ आम जनता को जागृत करते हैं। वे साहस को सर्वोपरि रखते हैं; वे निर्भीक कम्युनिस्ट योद्धा हैं और अध्यक्ष माओ के श्रेष्ठ शिष्य हैं। वे बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों तथा बड़े-बड़े वाद-विवादों का पक्ष-पोषण करते हैं। वे आम जनता को प्रोत्साहन देते हैं कि वह हर किस्म के दैत्यों और दानवों को बेनकाब कर डाले तथा कर्ताधर्ता लोगों के काम की कमियों और गलतियों की आलोचना करे। यह सही किस्म का नेतृत्व कायम करना, सर्वहारा राजनीति को सर्वोपरि रखने और माओ त्सेतुङ के विचारों को प्रमुख स्थान देने का परिणाम है।

(2) बहुत सी इकाइयों में, कर्ताधर्ता लोग इस महान संघर्ष के नेतृत्व-कार्य की बहुत कम समझ रखते हैं, उनका नेतृत्व लगन से काम करने वाला और कारगर नेतृत्व कतई नहीं होता, तथा इस प्रकार वे अपने आपको असमर्थता और कमजोरी की हालत में पाते हैं। वे भय को सर्वोपरि रखते हैं, पुराने तौर तरीकों और कायदों से चिपके रहते हैं, तथा पिटीपिटी लीक का परित्याग करने और आगे बढ़ने को तैयार नहीं होते। वे लोग नई

स्थिति से, आम जनता की क्रान्तिकारी स्थिति से, बिलकुल बेखबर हैं; नतीजा यह हुआ है कि उनका नेतृत्व वास्तविक स्थिति से पिछड़ गया है, आम जनता से पिछड़ गया है।

(3) कुछ इकाइयों में, ऐसे कर्णधार लोगों द्वारा जो अतीत काल में किसी न किसी किस्म की गलती कर चुके हैं, भय को सर्वोपरि रखे जाने की अधिक सम्भावना है क्योंकि वे इस बात से डरते हैं कि कहीं आम जनता उनकी गरदन पकड़ कर उन्हें बाहर न खींच ले। वास्तव में, अगर वे गम्भीरतापूर्वक आत्म-आलोचना करें और आम जनता द्वारा की गई आलोचना को स्वीकार कर लें, तो पार्टी व आम जनता उनकी गलतियों के प्रति नरमी का रुख अपनाएगी। लेकिन अगर उक्त कर्णधार लोग ऐसा नहीं करेंगे, तो वे गलतियां करना जारी रखेंगे और जन-आन्दोलन के रास्ते की बाधा बन जाएंगे।

(4) कुछ इकाइयां ऐसे लोगों के नियंत्रण में हैं जो मौका पाकर पार्टी के भीतर घुस आए हैं और पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं। इस प्रकार के कर्णधार इस बात से बेहद डरते हैं कि कहीं आम जनता उनकी कलई न खोल दे, और इसलिए जन-आन्दोलन का दमन करने के लिए हर मुमकिन बहाना खोजते रहते हैं। वे अपने प्रहार के लक्ष्यों को बदल देने और काले को सफेद बना डालने जैसी चालबाजियों का सहारा लेकर आन्दोलन को उसके रास्ते से भटकाने की कोशिश करते हैं। जब वे यह देखते हैं कि वे खुद बिलकुल अलगाव की स्थिति में पड़ गए हैं और पहले की तरह क्रियाशील नहीं रह सकते तो और भी अधिक साजिशें रचने लगते हैं, लोगों की पीठ पर छुरा भोंक देते हैं, अफवाहें उड़ाते हैं, तथा क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच के फर्क को यथासम्भव धुंधला बनाने की कोशिश करते हैं, और उनकी इन सब कारगुजारियों का मकसद होता है क्रान्तिकारियों पर प्रहार करना।

पार्टी की केन्द्रीय कमेटी विभिन्न स्तरों की पार्टी-कमेटियों से यह मांग करती है कि वे निरन्तर सही ढंग से नेतृत्व करें, साहस को सर्वोपरि रक्खें, निर्भीकता के साथ आम जनता को जागृत करें, जहां कहीं भी कमजोरी

और अयोग्यता नजर आए उसे दूर करें, उन साथियों को, जिन्होंने गलतियां तो की हैं लेकिन जो उन्हें सुधारने को तैयार हैं, इस बात का प्रोत्साहन दें कि वे अपने मानसिक बोझ को दूर कर लें और संघर्ष में शामिल हो जाएं, तथा ऐसे तमाम कर्णधार लोगों को नेतृत्वकारी पदों से हटा दें जो पूंजीवादी रास्ता अपनाते हैं, ताकि सर्वहारा क्रान्तिकारियों के लिए नेतृत्व फिर से हस्तगत करना सम्भव हो जाय।

4. आन्दोलन के दौरान आम जनता को खुद शिक्षित होने दो

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान एकमात्र तरीका यह है कि आम जनता अपने आपको खुद ही मुक्त कराए, तथा आम जनता की तरफ से काम करने का तरीका न अपनाया जाय।

आम जनता पर विश्वास करो, उस पर भरोसा रक्खो, और उसकी पहलकदमी की कद्र करो। डर को निकाल फेंको। अव्यवस्था से न डरो। अध्यक्ष माओ ने हमें अक्सर बताया है कि क्रान्ति ऐसी कोई नफीस, शिष्ट या नम्र, दयालु, सुशील, संयत और उदार चीज नहीं हो सकती। इस महान क्रान्तिकारी आन्दोलन में आम जनता को अपने आपको शिक्षित करने दो, तथा सही बात और गलत बात के बीच, सही कार्यशैली और गलत कार्यशैली के बीच फर्क करने दो।

बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टरों और बड़े-बड़े वाद-विवादों का पूरा इस्तेमाल करते हुए बहस छेड़ दो, ताकि आम जनता सही विचारों का स्पष्टीकरण कर सके, गलत विचारों की आलोचना कर सके, तथा तमाम दैत्यों और दानवों का पर्दाफाश कर सके। इस प्रकार आम जनता संघर्ष के दौरान अपनी राजनीतिक चेतना का स्तर ऊंचा उठा सकेगी, अपनी योग्यता व प्रतिभा में बढ़ोत्तरी कर सकेगी, सही और गलत के बीच फर्क कर सकेगी तथा दुश्मन और हमारे बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच सकेगी।

5. पार्टी की वर्ग-दिशा को दृढ़तापूर्वक कार्यान्वित करो

हमारे दुश्मन कौन हैं? हमारे दोस्त कौन हैं? यह क्रान्ति के लिए एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सवाल है, तथा यह महान सांस्कृतिक क्रान्ति के लिए भी एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण सवाल है।

पार्टी-नेतृत्व को वामपंथियों का पता लगाने और वामपंथियों की पांतों को विकसित करने व सुदृढ़ बनाने में निपुण होना चाहिए तथा क्रान्तिकारी वामपंथियों पर दृढ़तापूर्वक निर्भर रहना चाहिए। आन्दोलन के दौरान केवल इसी तरह अत्यन्त प्रतिक्रियावादी दक्षिणपंथियों को बिल्कुल अलगाव की स्थिति में डाला जा सकता है, मध्यममार्गियों को अपने पक्ष में किया जा सकता है तथा भारी बहुसंख्यकों के साथ एकता कायम की जा सकती है, ताकि आन्दोलन समाप्त होने पर हम ९५ प्रतिशत से अधिक कार्यकर्ताओं और ९५ प्रतिशत से अधिक आम लोगों के बीच एकता कायम कर सकें।

मुट्ठीभर अत्यन्त प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी दक्षिणपंथियों और प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादियों पर प्रहार करने के लिए पूरी ताकत लगा दो, तथा पार्टी के खिलाफ, समाजवाद के खिलाफ और माओ त्सेतुङ के विचारों के खिलाफ उनके द्वारा किए गए जुर्मों का पूरी तरह भण्डाफोड़ कर दो और उनकी भरपूर आलोचना करो, ताकि उन्हें अधिकाधिक अलगाव की स्थिति में डाला जा सके।

वर्तमान आन्दोलन का मुख्य निशाना पार्टी के भीतर मौजूद वे कर्ताधर्ता लोग हैं जो पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं।

पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथियों तथा उन लोगों के बीच फर्क करने में अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए जो पार्टी और समाजवाद का तो समर्थन करते हैं लेकिन जिन्होंने कुछ गलत बातें की हैं, कुछ गलत काम किए हैं अथवा कुछ बुरे लेखों या बुरी रचनाओं का सृजन किया है।

प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी निरंकुश विद्वानों व "धुरंधर विद्वानों" तथा उन

लोगों के बीच फर्क करने में अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए जो विद्याध्ययन के बारे में सामान्य पूंजीवादी विचार रखते हैं।

6. जनता के बीच के अन्तरविरोधों को सही ढंग से हल किया जाय

इन दो भिन्न प्रकार के अन्तरविरोधों के बीच बिलकुल स्पष्ट रूप से फर्क करना चाहिए: जनता के बीच के अन्तरविरोधों तथा हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों के बीच। जनता के बीच के अन्तरविरोधों को हमारे और दुश्मन के बीच के अन्तरविरोध नहीं बना देना चाहिए; और न हमारे तथा दुश्मन के बीच के अन्तरविरोधों को जनता के बीच के अन्तरविरोध समझना चाहिए।

अलग-अलग राय रखना आम जनता के लिए एक स्वाभाविक बात है। अलग-अलग प्रकार की रायों के बीच होड़ होना अनिवार्य, आवश्यक और लाभदायक है। एक सामान्य और मुकम्मिल वाद-विवाद के दौरान आम जनता जो कुछ सही है उसकी पुष्टि करेगी, जो कुछ गलत है उसे ठीक कर लेगी और कदम-ब-कदम एकमत हो जाएगी।

वाद-विवाद में जो तरीका अपनाया जाना चाहिए वह है, तथ्यों को पेश करना, तर्क द्वारा अपनी बात सिद्ध करना, और तर्क द्वारा समझाना बुझाना। किसी भी ऐसे तरीके की इजाजत नहीं दी जा सकती जिसमें कि अलग राय रखने वाले अल्पमत को बहुमत से सहमत होने के लिए मजबूर किया जाय। अल्पमत रखने वालों की रक्षा की जानी चाहिए। क्योंकि कभी-कभी सच्चाई अल्पमत के साथ होती है। अगर अल्पमत वाले गलत भी हों, फिर भी उन्हें अपनी बात पेश करने का मौका मिलना चाहिए तथा उन्हें अपनी राय पर कायम रहने देना चाहिए।

जब कभी वाद-विवाद हो तो उसका संचालन तर्क द्वारा होना चाहिए, जोर जबरदस्ती या ताकत के जरिए नहीं।

वाद-विवाद के दौरान हर क्रान्तिकारी को अपने आप ही सोच सकने में

निपुण होना चाहिए और उसे अपने अन्दर साहस के साथ सोचने, साहस के साथ बोलने और साहस के साथ काम करने की कम्युनिस्ट भावना को विकसित करना चाहिए। इस बात को नजर में रखते हुए, कि उनकी मुख्य दिशा एक ही है, क्रान्तिकारी साथियों को चाहिए कि वे अपनी एकता को मजबूत बनाने हेतु गौण विषयों को लेकर अन्तहीन वाद-विवाद में न फंसें।

7. उन लोगों से सावधान रहो जो क्रान्तिकारी आम जनता को "क्रान्ति-विरोधी" कह कर कलंकित करते हैं

कुछ स्कूलों, इकाइयों, तथा सांस्कृतिक क्रान्ति के कार्यदलों में वहां के कुछ कर्ताधर्ता लोगों ने आम जनता के उन लोगों के खिलाफ जवाबी प्रहार करने वाली कार्यवाहियों का संगठन किया है जिन्होंने बड़े-बड़े अक्षरों वाले पोस्टर लगाकर उनकी आलोचना की थी। ये लोग यहां तक आगे बढ़ गए कि उन्होंने इस तरह के नारे लगाए हैं: किसी इकाई या कार्य-दल के नेताओं का विरोध करने का मतलब है पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का विरोध करना, इसका मतलब है पार्टी और समाजवाद का विरोध करना, इसका मतलब है क्रान्ति का विरोध करना। इस तरह अनिवार्य रूप से कुछ सच्चे क्रान्तिकारी सक्रिय कार्यकर्ता उनके प्रहार का शिकार बन जाएंगे। यह गलती दिशा-निर्धारण सम्बन्धी गलती है, कार्यदिशा सम्बन्धी गलती है और इसकी हरगिज इजाजत नहीं दी जा सकती।

कुछ ऐसे लोग जिनके विचार विचारधारा की दृष्टि से गम्भीर रूप से गलत हैं और खास तौर से कुछ पार्टी-विरोधी तथा समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथी लोग, जन-आन्दोलन की कुछ कमियों व गलतियों से फायदा उठाकर अफवाहें व झूठी बातें उड़ा रहे हैं तथा लोगों को भड़का रहे हैं और जानबूझ कर आम जनता के कुछ लोगों को "क्रान्ति-विरोधी" कह कर उन्हें कलंकित कर रहे हैं। यह आवश्यक है कि ऐसे "जेब कतरों" से सावधान रहा जाय और उनकी चालबाजियों का यथासमय भण्डाफोड़ किया जाए।

आन्दोलन जारी रहने के समय, उन सक्रिय प्रतिक्रान्तिकारियों के मामलों को छोड़कर जहां इस तरह के जुर्मों का स्पष्ट सबूत मिलता है-जैसे कत्ल करना, आग लगाना, जहर देना, तोड़-फोड़ करना या गोपनीय सरकारी सूचनाओं की चोरी करना-और जिन्हें कानून के मुताबिक निबटाया जाना चाहिए, विश्वविद्यालयों, कालेजों, मिडिल स्कूलों तथा प्राइमरी स्कूलों के विद्यार्थियों के खिलाफ, आन्दोलन के दौरान उठने वाली समस्याओं की वजह से कोई कार्यवाही नहीं की जानी चाहिए। संघर्ष कहीं अपने मुख्य लक्ष्य से भटक न जाय इसलिए, चाहे कुछ भी बहाना क्यों न हो, इस बात की इजाजत नहीं दी जा सकती कि आम जनता को एक दूसरे के खिलाफ संघर्ष करने के लिए भड़काया जाय या विद्यार्थियों को भी इसी तरह भड़काया जाय। ऐसे दक्षिणपंथियों के मामले भी जिनका जुर्म साबित हो चुका है, हर मामले की गम्भीरता को देखते हुए आन्दोलन के बाद के दौर में निबटाए जाने चाहिए।

8. कार्यकर्ताओं का सवाल

कार्यकर्ताओं को मोटे तौर पर निम्नलिखित चार श्रेणियों में रखा जा सकता है:

(1) अच्छे;

(2) अपेक्षाकृत अच्छे;

(3) ऐसे कार्यकर्ता जिन्होंने गम्भीर गलतियां तो की हैं, लेकिन फिर भी जो पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथी नहीं बने;

(4) मुट्ठीभर ऐसे कार्यकर्ता, जो पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथी हैं।

पहली दो श्रेणियां (अच्छे और अपेक्षाकृत अच्छे) के कार्यकर्ता आम तौर पर भारी बहुसंख्या में हैं।

पार्टी-विरोधी व समाजवाद-विरोधी दक्षिणपंथियों का पूरी तरह भण्डाफोड़ कर देना चाहिए, उन पर भीषण प्रहार करना चाहिए, उन्हें अपदस्थ कर देना चाहिए और उनकी साख बिलकुल मिट्टी में मिला देनी

चाहिए, तथा उनके असर को नेस्तनाबूद कर देना चाहिए। साथ ही उन्हें सुधरने का मौका भी देना चाहिए, ताकि वे एक नई जिन्दगी शुरू कर सकें।

9. सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुप, सांस्कृतिक क्रान्तिकारी कमेटियां और सांस्कृतिक क्रान्तिकारी प्रतिनिधि-सभाएं

महान सर्वहारा सांस्कृतिक आन्दोलन में बहुत सी नई चीजें पैदा होनी शुरू हो गई हैं। सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुप, सांस्कृतिक क्रान्तिकारी कमेटियां और सांस्कृतिक क्रान्ति के अन्य संगठनात्मक रूप, जिन्हें आम जनता ने बहुत से स्कूलों और इकाइयों में कायम किया है, एक नई चीज है और इनका भारी ऐतिहासिक महत्त्व है।

ये सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुप, कमेटियां और प्रतिनिधि-सभाएं संगठन के शानदार नए रूप हैं, जिनके जरिए कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में आम जनता अपने आपको शिक्षित कर रही है। ये संगठन हमारी पार्टी का आम जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करने वाले शानदार सेतु हैं। ये सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के सत्ताधारी संगठन हैं।

हजारों वर्षों से सभी शोषक वर्गों द्वारा छोड़े गए पुराने विचारों, पुरानी संस्कृति, पुराने रिवाजों तथा पुरानी आदतों के खिलाफ सर्वहारा वर्ग को अपना संघर्ष अनिवार्य रूप से बहुत अधिक लम्बे समय तक जारी रखना होगा। इसलिए सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुपों, कमेटियों और प्रतिनिधि-सभाओं को अस्थायी संगठन नहीं बल्कि मुस्तकिल, स्थायी जन-संगठन बन जाना चाहिए। ये संगठन न सिर्फ कालेजों, स्कूलों और सरकारी विभागों व अन्य संस्थाओं के लिए जरूरी हैं बल्कि आम तौर पर कारखानों, खानों, अन्य कारोबारों, शहरी बस्तियों और गांवों के लिए भी जरूरी हैं।

यह आवश्यक है कि सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुपों व कमेटियों के सदस्यों तथा सांस्कृतिक क्रान्तिकारी प्रतिनिधि-सभाओं के प्रतिनिधियों का चुनाव करने के लिए पेरिस कम्यून जैसी ही आम चुनाव की व्यवस्था कायम की जाय। उम्मीदवारों की सूची क्रान्तिकारी आम जनता द्वारा पूर्ण विचार-विमर्श के बाद पेश की जानी चाहिए, तथा चुनाव तभी होने चाहिए जब आम जनता उस सूची के बारे में बार-बार विचार-विमर्श कर चुकी हो।

आम जनता को यह हक हासिल होगा कि वह किसी भी समय सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुपों व कमेटियों के सदस्यों और सांस्कृतिक क्रान्तिकारी प्रतिनिधि-सभाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों की आलोचना करे। अगर वे सदस्य या प्रतिनिधि अयोग्य साबित हों, तो उन्हें आम जनता, विचार-विमर्श करने के बाद, चुनाव के जरिए बदल सकेगी अथवा वापस बुला सकेगी।

कालेजों व स्कूलों में सांस्कृतिक क्रान्तिकारी ग्रुपों, कमेटियों और प्रतिनिधि-सभाओं के अन्दर मुख्य रूप से क्रान्तिकारी विद्यार्थियों के प्रतिनिधि होने चाहिए। साथ ही उनमें कुछ प्रतिनिधि क्रान्तिकारी अध्यापकों और कर्मचारियों के भी होने चाहिए।

10. शिक्षा-व्यवस्था में सुधार

इस महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है पुरानी शिक्षा-व्यवस्था और पढ़ाने के पुराने सिद्धान्तों व पुराने तरीकों को बदल डालना।

इस महान सांस्कृतिक क्रान्ति में यह निहायत जरूरी है कि हम अपने विद्यालयों पर पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के प्रभुत्व की स्थिति को पूरे तौर पर बदल डालें।

हर किस्म के विद्यालय में हमें कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा प्रतिपादित नीति को -शिक्षा द्वारा सर्वहारा राजनीति की सेवा करने तथा शिक्षा को उत्पादक श्रम के साथ मिलाने की नीति को -मुकम्मिल तौर पर लागू करना चाहिए, ताकि जो लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वे नैतिक, बौद्धिक व शारीरिक दृष्टि से विकास कर सकें और समाजवादी चेतना व संस्कृति से लैस श्रमिक बन सकें।

विद्यार्थियों के शिक्षण की अवधि को कम किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत थोड़े व बेहतर होने चाहिए। पाठ्य सामग्री को पूरे तौर पर बदल डालना चाहिए, कहीं-कहीं जटिल सामग्री को सरल बनाकर इस कार्य की शुरुआत करनी चाहिए। यद्यपि विद्यार्थियों का मुख्य कर्तव्य अध्ययन करना है, तथापि उन्हें अन्य चीजों को भी सीखना चाहिए। अर्थात, अपनी पढ़ाई के अलावा उन्हें औद्योगिक कार्य, खेतीबाड़ी तथा फौजी मामलों के बारे में भी सीखना चाहिए और सांस्कृतिक क्रान्ति के संघर्षों में, जैसे जैसे वे उभरते जाएं, हिस्सा लेना चाहिए ताकि पूंजीपति वर्ग की आलोचना की जा सके।

11. समाचारपत्रों में नाम लेकर आलोचना करने का सवाल

सांस्कृतिक क्रान्ति के जन-आन्दोलन के दौरान, पूंजीवादी और सामन्तवादी विचारधारा की आलोचना करने के साथ साथ सर्वहारा विश्व-दृष्टिकोण का, और मार्क्सवाद-लेनिनवाद का, माओ त्सेतुङ के विचारों का प्रचार-प्रसार भी अच्छी तरह करना चाहिए।

पूंजीपति वर्ग के उन विशिष्ट प्रतिनिधियों की, जो मौका पाकर पार्टी में आ घुसे हैं तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले विशिष्ट प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी "धुरंधर विद्वानों" की आलोचना करने के लिए संगठन-कार्य करना चाहिए, तथा जिसमें दर्शन शास्त्र, इतिहास, राजनीतिक अर्थशास्त्र व शिक्षा के क्षेत्र में, साहित्य व कला की रचनाओं और साहित्य व कला के सिद्धान्तों के क्षेत्र में, प्राकृतिक विज्ञान के सिद्धान्तों के क्षेत्र में और अन्य क्षेत्रों में मौजूद विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रियावादी विचारों की आलोचना भी शामिल है।

अगर किसी की आलोचना नाम लेकर समाचारपत्रों में करनी हो, तो पहले उसी स्तर की पार्टी कमेटी में विचार-विमर्श करके इस बात का फैसला कर लेना चाहिए, तथा कुछ परिस्थितियों में ऊपर की पार्टी कमेटी के पास भेज कर उसकी मंजूरी हासिल कर लेनी चाहिए।

12. वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और स्टाफ के साधारण कर्मचारियों के प्रति नीति

जहां तक वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और स्टाफ के साधारण कर्मचारियों का ताल्लुक है, जब तक वे देशभक्ति की भावना रखें, सक्रियता से काम करते रहें, पार्टी व समाजवाद का विरोध न करें, तथा किसी अन्य देश के साथ नाजायज सम्बन्ध न रखें, तब तक उनके प्रति हमें अपने वर्तमान आन्दोलन में "एकता, आलोचना, एकता" की नीति जारी रखनी चाहिए। उन वैज्ञानिकों तथा वैज्ञानिक व तकनीकी कर्मचारियों का खास खयाल रखना चाहिए जिन्होंने अपने कार्य-क्षेत्र में योगदान किया है। हमें उनके विश्व-दृष्टिकोण और कार्यशैली का कदम-ब-कदम रूपान्तर करने के कार्य में उन्हें अपनी मदद देने की कोशिश करनी चाहिए।

13. शहरों और देहातों में इस क्रान्ति को समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन के साथ मिलाने की व्यवस्था करने का सवाल

बड़े-बड़े और मझोले शहरों की सांस्कृतिक व शैक्षिक इकाइयां तथा पार्टी व सरकार के नेतृत्वकारी संगठन वर्तमान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के प्रमुख केन्द्र हैं।

महान सांस्कृतिक क्रान्ति ने शहरों और देहातों दोनों में समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन को समृद्ध किया है तथा उसे पहले से ज्यादा ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया है। इस बात की कोशिश की जानी चाहिए कि इन दोनों आन्दोलनों के बीच घनिष्ठ सहयोग कायम किया जाय। इस सम्बन्ध में विभिन्न प्रदेशों और विभागों को अपने यहां की ठोस स्थितियों को देखते हुए व्यवस्था करनी चाहिए।

देहातों और शहरी उद्योग धन्धों में चलने वाले समाजवादी शिक्षा आन्दोलन के दौरान उन स्थानों में फेरबदल नहीं करना चाहिए जहां पहले

से ही समुचित व्यवस्था चली आ रही है और आन्दोलन अच्छी तरह आगे बढ़ रहा है, तथा उसे पहले से ही चली आई व्यवस्था के अनुसार चलने देना चाहिए। लेकिन जो सवाल वर्तमान महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में उठ रहे हैं उन्हें उचित समय आने पर आम जनता के सामने वाद-विवाद के लिए पेश करना चाहिए, ताकि सर्वहारा विचारधारा को जोरशोर से फैलाया जा सके तथा पूंजीवादी विचारधारा को नेस्तनाबूद किया जा सके।

कुछ स्थानों में महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति को, समाजवादी-शिक्षा आन्दोलन को प्रोत्साहन देने तथा राजनीति, विचारधारा, संगठन और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सफाई करने के लिए एक केन्द्रबिन्दु के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। यह उन स्थानों में किया जा सकता है जहां की स्थानीय पार्टी-कमेटी इसे उचित समझती हो।

14. क्रान्ति को दृढ़ता से चलाओ और उत्पादन-कार्य को बढ़ावा दो

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का उद्देश्य है लोगों की विचारधारा का क्रान्तिकारी रूपान्तर करना और इसके फलस्वरूप कार्य के हर क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा, जल्दी से जल्दी, अच्छे से अच्छा और कम से कम खर्च में नतीजे हासिल करना। अगर आम जनता को पूरे तौर से जाग्रत कर दिया जाय तथा यथोचित प्रबन्ध कर लिया जाय, तो सांस्कृतिक क्रान्ति तथा उत्पादन-कार्य दोनों को ही, एक दूसरे को नुकसान पहुंचाए बगैर, चलाया जा सकता है और साथ ही अपने तमाम कार्य में ऊंचे गुण की गारन्टी की जा सकती है।

यह महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति हमारे देश की सामाजिक उत्पादन शक्तियों को विकसित करने वाली एक जबरदस्त प्रेरक शक्ति है। इस महान सांस्कृतिक क्रान्ति को उत्पादन के विकास के विरोध में ला खड़ा करने वाले सभी विचार गलत हैं।

15. सशस्त्र सेनाएं

सशस्त्र सेनाओं में सांस्कृतिक क्रान्ति और समाजवादी शिक्षा आन्दोलन को केन्द्रीय कमेटी के फौजी कमीशन और जन मुक्ति सेना के प्रधान राजनीतिक विभाग के निर्देशनों के अनुसार चलाया जाना चाहिए।

16. माओ त्सेतुङ के विचार, महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में हमारे पथ प्रदर्शक हैं

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में यह आवश्यक है कि माओ त्सेतुङ के विचारों का महान लाल झण्डा बुलन्द रखा जाय तथा सर्वहारा राजनीति को सर्वोपरि रखा जाय। अध्यक्ष माओ त्सेतुङ की रचनाओं का सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करने और उन्हें सृजनात्मक ढंग से लागू करने के आन्दोलन को मजदूरों, किसानों, सैनिकों, कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों के जन समुदाय में फैलाना चाहिए, तथा माओ त्सेतुङ के विचारों को सांस्कृतिक क्रान्ति का पथ-प्रदर्शक समझना चाहिए।

इस जटिल व महान सांस्कृतिक क्रान्ति में सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे अध्यक्ष माओ की रचनाओं का अधिकाधिक लगन के साथ और सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करें और उन्हें लागू करें। विशेषकर, वे अध्यक्ष माओ द्वारा सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में और नेतृत्व करने के पार्टी के तरीकों के बारे में लिखी गई रचनाओं का बार बार अध्ययन करें, जैसे "नई लोकशाही के बारे में" "येनान की कला साहित्य गोष्ठी में भाषण", "जनता के बीच के अन्तर्विरोधों को सही ढंग से हल करने के बारे में" "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रचार-कार्य सम्बन्धी राष्ट्रीय सम्मेलन में भाषण", "नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित कुछ सवाल", "पार्टी-कमेटियों के काम के तरीके"।

सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों को चाहिए कि वे अध्यक्ष माओ द्वारा पिछले अनेक वर्षों में दी गई हिदायतों का पालन करें मिसाल के तौर पर वे "जनता से लेकर जनता को ही लौटाने" की जनदिशा का पूर्ण रूप से

कार्यान्वित करें, तथा शिक्षक बनने से पहले शिष्य बनें। उन्हें किसी भी मसले पर महज एकतरफा तौर से विचार करने या संकुचित दृष्टिकोण अपनाने से बचना चाहिए। उन्हें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का पोषण करना चाहिए तथा आध्यात्मवाद और पाण्डित्य प्रदर्शनवाद का विरोध करना चाहिए।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में, जिसकी रहनुमाई कामरेड माओ त्सेतुङ करते हैं, अनिवार्य रूप से शानदार विजय प्राप्त करेगी।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति अमर रहे

"हुङछी" (लाल झण्डा) का सम्पादकीय

अंक 8, 1966

अध्यक्ष माओ त्सेतुङ और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के प्रत्यक्ष नेतृत्व में, एक महान जनव्यापी सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, जो इतिहास में अपना सानी नहीं रखती, धरती को दहला देने वाली भूकम्पकारी शक्ति के साथ अत्यन्त तीव्र और प्रचण्ड रूप से विकसित होती जा रही है।

माओ त्सेतुङ के विचारों का महान लाल झण्डा बुलन्द रखते हुए, मजदूरों, किसानों, सैनिकों, क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं और क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों का जन-समुदाय, पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों का, जो मौका पाकर हमारी पार्टी में आ घुसे हैं, सभी प्रकार के दैत्यों का, तथा सभी प्रकार की पतनशील पूंजीवादी और सामन्तवादी विचारधाराओं का सफाया कर रहा है। राजनीतिक, विचारधारात्मक और सांस्कृतिक मोर्चों पर एक अभूतपूर्व रूप से अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न हो गई है।

यह एक अत्यन्त तीव्र और जटिल वर्ग-संघर्ष है, जिसका उद्देश्य है ऊपरी ढांचे में, विचारधारा के क्षेत्र में मौजूद तमाम सर्वहारा तत्वों का पोषण करना तथा तमाम पूंजीवादी तत्वों को नेस्तनाबूद कर देना--यह पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के लिए प्रयत्नशील पूंजीपति वर्ग तथा पूंजीवाद की पुनर्स्थापना न होने देने के लिए संकल्पबद्ध सर्वहारा वर्ग के बीच का एक जीवन-मरण का संघर्ष है। इस संघर्ष का असर इस मसले पर पड़ेगा कि हमारे देश में सर्वहारा अधिनायकत्व को और समाजवाद के आर्थिक आधार को सुदृढ़ बनाना और विकसित करना सम्भव है अथवा नहीं; तथा हमारी पार्टी और हमारा देश अपना रंग बदलेंगे अथवा नहीं। इसका असर हमारी पार्टी और हमारे देश के भाग्य व भविष्य पर तथा विश्व क्रान्ति के भाग्य व भविष्य पर भी पड़ेगा। यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस संघर्ष को कोई मामूली घटना न समझा जाए।

इस बात की क्या जरूरत है कि एक सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति शुरू की जाय? यह क्रान्ति आखिर इतनी अधिक महत्वपूर्ण क्यों है?*

कामरेड माओ त्सेतुङ ने सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तरराष्ट्रीय ऐतिहासिक अनुभवों का बड़े वैज्ञानिक ढंग से सारांश निकाला है तथा यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया है कि समाजवादी समाज में अन्तरविरोधों, वर्गों और

वर्ग-संघर्ष का अस्तित्व मौजूद रहता है। वे हमें बार-बार याद दिलाते हैं कि हम वर्ग-संघर्ष को कभी न भूलें, राजनीति को सर्वोपरि रखना कभी न भूलें, और सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाना कभी न भूलें, तथा हर सम्भव उपाय अपनाकर संशोधनवादियों द्वारा नेतृत्व हथियाए जाने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना किए जाने की रोकथाम करें। उन्होंने बताया है कि राजनीतिक सत्ता को उखाड़ फेंकने से पहले अनिवार्य रूप से इस बात की कोशिश की जाती है कि ऊपरी ढांचे और विचारधारा पर अपना प्रभुत्व कायम कर दिया जाय, ताकि लोकमत तैयार किया जा सके, तथा यह बात क्रान्तिकारी वर्गों और प्रतिक्रान्तिकारी वर्गों दोनों ही पर लागू होती है इस बुनियादी प्रस्थान-बिन्दु के आधार पर, कामरेड माओ त्सेतुङ ने आह्वान किया है कि हम सर्वहारा तत्वों का पालन-पोषण करने के लिए और पूंजीवादी तत्वों को नेस्तनाबूद कर देने के लिए विचारधारा के क्षेत्र में वर्ग-संघर्ष चलाएं।

यह एक महान सत्य है, मार्क्सवाद-लेनिनवाद का एक महान विकसित रूप है।

इतिहास यह बताता है कि पूंजीपति वर्ग ने सामन्ती जमींदार वर्ग के हाथ से सत्ता छीनने से पहले विचारधारा पर अपना प्रभुत्व कायम कर लिया था और लोकमत तैयार कर लिया था। "नवजागरण" काल में योरप के पूंजीपति वर्ग ने अविचल रूप से सामन्ती विचारधारा की आलोचना की तथा पूंजीवादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया। कई सौ वर्षों तक लोकमत तैयार करने के बाद कहीं 17वीं और 18वीं शताब्दी में योरप के अनेक देशों में पूंजीपति वर्ग एक के बाद एक राजनीतिक सत्ता पर कब्जा जमा पाया तथा अपना अधिनायकत्व कायम कर सका।

मार्क्स और एंगेल्स ने कम्युनिज्म के सिद्धान्तों का प्रचार करना एक शताब्दी से अधिक पहले शुरू कर दिया था। उन्होंने यह इसलिए किया था ताकि सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता हथियाए जाने के लिए लोकमत तैयार किया जा सके। रूसी सर्वहारा क्रान्ति अनेक दशाब्दियों तक लोकमत तैयार करने के बाद ही राजनीतिक सत्ता हथियाने में सफल हुई। हमारा अपना अनुभव हमारे दिमाग में इससे भी अधिक ताजा है। जब चीनी

सर्वहारा वर्ग ने राजनीतिक मंच पर प्रकट होना शुरू किया, उस समय वह एक कमजोर और निहत्था वर्ग था। आखिर क्रान्ति कैसे शुरू हुई? वह चीन में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का प्रचार-प्रसार होने और साम्राज्यवाद व उसके गुर्गों की कलई खुलने के साथ-साथ शुरू हुई। चीनी सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता हथियाने के लिए किया गया संघर्ष वस्तुतः चार मई की सांस्कृतिक क्रान्ति से शुरू हुआ।

अन्ततोगत्वा, चीनी सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता हथियाए जाने का इतिहास माओ त्सेतुङ के विचारों द्वारा मजदूरों, किसानों और सैनिकों के विशाल जन-समुदाय को लैस कर लेने का इतिहास है। आम जनता ठीक ही कहती है: "माओ त्सेतुङ के विचार न होते, तो नए चीन का अस्तित्व भी न होता।" मार्क्सवाद-लेनिनवाद को चीनी क्रान्ति के अमल के साथ जोड़कर, महान क्रान्तिकारी ध्वज वाहक कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी क्रान्ति की पूरी शक्ल ही बदल डाली। ऐतिहासिक अनुभव से यह जाहिर हो जाता है कि माओ त्सेतुङ के विचारों ने हमारे अन्दर यह सामर्थ्य पैदा कर दी कि हम आम जनता का अधिकाधिक समर्थन प्राप्त कर सकें, सशस्त्र सेनाएं और तोप-बन्दूकें रख सकें, एक के बाद एक क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र कायम कर सकें, थोड़ा-थोड़ा करके राजनीतिक सत्ता पर कब्जा कर सकें, तथा अन्त में समूचे देश की राजनीतिक सत्ता पर कब्जा कर सकें।

राजनीतिक सत्ता पर कब्जा कर लेने के बाद, सर्वहारा वर्ग शासक वर्ग बन गया है तथा जमींदार वर्ग और पूंजीपति वर्ग शासित वर्ग बन गए हैं। जमींदार वर्ग और प्रतिक्रियावादी पूंजीपति वर्ग, दूसरों के शासित बनने या अपने वर्ग का अन्त कर देने को हरगिज चुपचाप बरदाश्त नहीं करेंगे। वे लगातार इस बात के सपने देख रहे हैं कि सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता उलट कर पूंजीवाद की पुनर्स्थापना कर दी जाय, ताकि वे फिर एक बार मेहनतकश जनता पर सवारी गांठ सकें। उनके अन्दर अब भी भारी शक्ति मौजूद है। उनके पास पैसा है, व्यापक सामाजिक रसूख और अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्क हैं, तथा प्रतिक्रान्ति करने का अनुभव है। खास तौर पर शोषक वर्गों की विचारधारा की अब भी काफी भारी खपत है। क्रान्तिकारी पांतों के

कुछ ढुलमुल तत्वों के इस विचारधारा के प्रभाव में पथभ्रष्ट होने और प्रतिक्रान्तिकारी बन जाने की सम्भावना बनी रहती है। यही नहीं, निम्न-पूंजीपति वर्ग के सहज रूप में पड़ने वाले प्रभाव से लगातार पूंजीवाद का जन्म होता रहता है। राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर लेने के बाद भी सर्वहारा वर्ग के सामने उसे खो बैठने का खतरा बना रहता है। समाजवादी व्यवस्था की स्थापना हो जाने के बाद भी उसके सामने पूंजीवादी व्यवस्था की पुनर्स्थापना का खतरा बना रहता है। अगर इस बात की ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान न दिया गया और आवश्यक कदम न उठाए गए, तो इसके परिणामस्वरूप हमारी पार्टी और हमारे देश का रंग बदल जाएगा तथा हमारे देश के करोड़ों लोगों को अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ेगा।

उत्पादन के साधनों की मिलकियत का समाजवादी रूपान्तर हो जाने के बाद, पूंजीवादी व सामन्तवादी विचारधाराएं सत्ताच्युत जमींदार वर्ग व पूंजीपति वर्ग का अत्यन्त महत्वपूर्ण गढ़ बन जाती हैं। पुनर्स्थापना के उनके प्रयत्नों का लक्ष्य होता है सबसे पहले विचारधारा पर कब्जा जमाना तथा अपने पतनशील विचारों को हर सम्भव तरीके से जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए इस्तेमाल करना। विचारधारा पर कब्जा जमाना तथा लोकमत को अपने सांचे में ढालना, ये दोनों बातें पूंजीपति वर्ग द्वारा सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता उलटने के लिए की गई तैयारी की द्योतक हैं और जब स्थिति परिपक्व हो जाती है, तो वे किसी न किसी तरीके से राजविप्लव करके राजसत्ता हथियाने की कोशिश करते हैं।

सोवियत संघ ने समाजवादी उत्पादन-सम्बन्धों की स्थापना के बाद गम्भीरता के साथ सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति नहीं चलाई। पूंजीवादी विचारधारा को खुली छूट मिल गई तथा वह लोगों के दिमागों को भ्रष्ट करने लगी और अदृश्य रूप से समाजवादी उत्पादन-सम्बन्धों की जड़ काटने लगी। स्तालिन के देहान्त के बाद, ख्रुश्चोवी संशोधनवादी गुट ने लोकमत को और अधिक निर्लज्जतापूर्वक अपने प्रतिक्रान्तिकारी सांचे में ढाल दिया। इस गुट ने इसके फौरन बाद ही सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता उलट देने के लिए एक ''राजप्रासादीय'' विप्लव रच डाला तथा

पार्टी, फौज और सरकारी सत्ता को हथिया लिया।

1956 की हंगेरियाई प्रतिक्रान्तिकारी घटना में, प्रतिक्रान्तिकारियों ने भी उपद्रव करने और दंगा फसाद करने के लिए सड़कों पर निकल आने से पहले लोकमत तैयार कर लिया था। इस प्रतिक्रान्तिकारी घटना की साजिश साम्राज्यवाद ने रची थी और इसे पेतोफी क्लब के कम्युनिस्ट विरोधी बुद्धिजीवियों के एक गुट द्वारा शुरू किया गया था। इमरी नाज को, जो उस समय तक कम्युनिस्ट पार्टी का बिल्ला लगाए हुए था, ''राजा का लिबास पहना दिया गया'' और वह प्रतिक्रान्तिकारियों का सरगना बन बैठा।

सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तरराष्ट्रीय ऐतिहासिक अनुभव से यह जाहिर होता है कि यह अधिनायकत्व तब तक सुदृढ़ नहीं बन सकता और समाजवादी व्यवस्था तब तक सुदृढ़ नहीं बन सकती जब तक एक सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति नहीं चलाई जाती और पूंजीवादी विचारधारा को नेस्तनाबूद करने के लिए अविचल रूप से प्रयत्न नहीं किया जाता। पूंजीवादी विचारों के बेरोकटोक फैलने से अनिवार्य रूप से सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता उलटने की हालत पैदा हो जाती है और पूंजीपति वर्ग के ख्रुश्चोव जैसे प्रतिनिधियों का उदय हो जाता है, जो एक ''राजप्रासादीय'' विप्लव या फौजी विप्लव से अथवा दोनों का एक साथ इस्तेमाल करके राजनीतिक सत्ता को हथिया लेंगे। अगर सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाना हो, अगर सर्वहारा अधिनायकत्व वाले देश को समाजवाद और कम्युनिज्म की दिशा में आगे बढ़ाना हो तो सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति अनिवार्य रूप से चलानी चाहिए; सर्वहारा वर्ग की विचारधारा का पोषण करना चाहिए और पूंजीवादी विचारधारा को नेस्तनाबूद कर देना चाहिए, तथा संशोधनवाद की विचारधारात्मक जड़ों को पूरी तरह उखाड़ फेंकना चाहिए और मार्क्सवाद-लेनिनवाद को, माओ त्सेतुङ विचारों की जड़ें दृढ़ता के साथ जमा देनी चाहिए।

समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी निर्माण की यह मांग है कि काम के अनेक क्षेत्रों में पुरजोर प्रयत्न किए जाएं। इस कार्य में एक लाल कार्यदिशा अवश्य मौजूद रहनी चाहिए, जो सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के वर्ग-संघर्ष, समाजवादी रास्ते और पूंजीवादी रास्ते के बीच के

संघर्ष, तथा विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के वर्ग-संघर्ष के अलावा और कुछ नहीं है।

कामरेड माओ त्सेतुङ ने हमें सिखाया है:

सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष, विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के बीच का वर्ग-संघर्ष तथा विचारधारात्मक क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का वर्ग-संघर्ष--ये सभी एक लम्बे समय तक टेढ़ेमेढ़े रास्ते तय करते हुए चलते रहेंगे, और यहां तक कि कभी-कभी अत्यन्त तीक्ष्ण भी हो जाएंगे। सर्वहारा वर्ग दुनिया को अपने विश्व-दृष्टिकोण के मुताबिक बदलना चाहता है; इसी तरह पूंजीपति वर्ग भी दुनिया को अपने विश्व-दृष्टिकोण के मुताबिक बदलना चाहता है। इस सम्बन्ध में, यह सवाल वास्तव में अभी तक हल नहीं हो पाया है कि अन्त में कौन जीतेगा, समाजवाद अथवा पूंजीवाद। (''जनता के बीच के अन्तरविरोधों का सही ढंग से हल करने के बारे में'')

सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का उद्देश्य इस सवाल का फैसला करना है कि विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग इन दोनों में से ''कौन जीतेगा''। यह एक दीर्घकालीन और कठिन ऐतिहासिक कार्य है, जो जीवन के हर क्षेत्र में विद्यमान है।

कुछ साथी यह समझते हैं कि सर्वहारा वर्ग और प्रतिक्रियावादी पूंजीपति वर्ग के बीच समाचारपत्रों में होने वाले वाद-विवाद बड़े-बड़े विद्वानों के बीच के महज ''मामूली कागजी वाग्युद्ध'' हैं। कुछ साथी अपने काम में इतने ज्यादा डूबे रहते हैं कि उन्हें विचारधारा और संस्कृति के मोर्चों पर होने वाले संघर्ष का पता ही नहीं, तथा वे विचारधारा के क्षेत्र में होने वाले वर्ग-संघर्ष की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। यह रवैया सरासर गलत और बेहद खतरनाक है। अगर पूंजीवादी विचारधारा को अपनी मनमानी करने का मौका मिल गया, तो सर्वहारा अधिनायकत्व पूंजीपति वर्ग का अधिनायकत्व बन जाएगा, तथा समाजवादी व्यवस्था एक पूंजीवादी व्यवस्था अथवा एक अर्ध-उपनिवेशी, अर्धसामन्ती व्यवस्था बन जाएगी। हमें ऐसे लोगों को बुलन्द आवाज में बता देना चाहिए: साथियो! दुश्मन

अपनी तलवार की धार तेज कर रहा है; वह हमारे सिर उड़ा देना चाहता है; वह हमारी राजसत्ता का तख्ता उलट देना चाहता है। यह क्या बात है कि तुम इसे देख कर भी अनदेखी कर रहे हो और सुनकर भी अनसुनी कर रहे हो?

राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करना और उसे सुदृढ़ बनाना यह बन्दूक और कलम दोनों ही पर निर्भर है। अगर हम क्रान्तिकारी कार्य की हिफाजत करना चाहते हों और उसे आगे बढ़ाना चाहते हों, तो हमें न सिर्फ बन्दूक को मजबूती के साथ पकड़े रहना चाहिए, बल्कि पूंजीपति वर्ग की लेखनी को नष्ट कर देने और उसका सफाया कर देने के लिए सर्वहारा वर्ग की कलम भी उठा लेनी चाहिए। केवल समूची पूंजीवादी विचारधारा का सफाया करके ही हम सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक सत्ता को सुदृढ़ बना सकते हैं तथा सर्वहारा वर्ग की बन्दूक को अधिकाधिक मजबूती के साथ पकड़े रह सकते हैं।

विचारधारा और संस्कृति के मोर्चों पर जो वर्ग-संघर्ष हो रहा है, उसे ध्यान से देखने के बाद हमारा हृदय सिहर उठता है।

विचारधारा और संस्कृति के मोर्चों पर सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच, मार्क्सवादी और मार्क्सवाद-विरोधी विचारों के बीच का संघर्ष जन लोकतंत्र चीन की स्थापना के बाद से अब तक एक क्षण के लिए भी बन्द नहीं हुआ। समाजवादी उत्पादन-सम्बन्धों की स्थापना के बाद, विचारधारा के क्षेत्र में होने वाला यह वर्ग-संघर्ष अधिकाधिक गहरा, अधिकाधिक जटिल और अधिकाधिक तीव्र होता गया है।

1957 में पूंजीवादी दक्षिणपंथियों ने पार्टी व समाजवाद पर पागलपन के साथ प्रहार करना शुरू कर दिया। प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञों का गठजोड़, जिसके सरगना चाङ पो-च्युन और लो लुङ-ची थे, जब खुलेआम हम पर प्रहार करने लगा, तो उससे पहले ही पूंजीवादी दक्षिणपंथी बुद्धिजीवियों ने चारों ओर बहुत सी जहरीली घासपात उगा ली थी; एक के बाद एक, बहुत सी प्रतिक्रान्तिकारी धारणाओं, राजनीतिक प्रोग्रामों तथा फिल्मों व उपन्यासों का उदय हुआ। जाहिर था कि यह सब पूंजीवादी दक्षिणपंथियों द्वारा राजनीतिक सत्ता हथियाने के

उद्देश्य से लोकमत तैयार करने के लिए की गई कोशिश थी।

पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और अध्यक्ष माओ के विवेकपूर्ण नेतृत्व में, चीनी जनता ने पूंजीवादी दक्षिणपंथियों के इस वहशियाना प्रहार का मुंहतोड़ जवाब दिया तथा राजनीति और विचारधारा के मोर्चों पर एक महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की।

उसके बाद 1958 में, समाजवादी निर्माण की आम कार्यदिशा का महान लाल झण्डा बुलन्द रखते हुए, चीनी जनता ने असीमित उत्साह और शक्ति के साथ काम के हर क्षेत्र में लम्बी छलांग लगाई तथा एक बड़े पैमाने पर जन-कम्यूनों की स्थापना की। साथ ही मजदूरों, किसानों व सैनिकों के जन-समुदाय ने बड़े जोश के साथ अध्यक्ष माओ की रचनाओं का सृजनात्मक ढंग से अध्ययन किया और उनके विचारों को सृजनात्मक ढंग से लागू किया। विचारधारा और संस्कृति के मोर्चों पर भी एक क्रान्ति का सूत्रपात हो गया।

1959 से 1962 तक, चीन को सोवियत संशोधनवादियों द्वारा किए गए विश्वासघात के परिणामस्वरूप और तीन वर्ष तक लगातार गम्भीर प्राकृतिक संकट आने के परिणामस्वरूप, अस्थायी रूप से आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन क्रान्तिकारी चीनी जनता कठिनाइयों से डरी नहीं। उसने पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और अध्यक्ष माओ के विवेकपूर्ण नेतृत्व में कठोर परिश्रम किया और वह साहसपूर्वक आगे बढ़ती गई। कुछ ही वर्षों में उसने कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली और एक शानदार परिस्थिति पैदा कर दी। लेकिन आर्थिक कठिनाइयों के इन वर्षों में, एक के बाद एक दैत्य और दानव अपनी गुफा से बाहर निकलते रहे। प्रतिक्रियावादी पूंजीपति वर्ग द्वारा पार्टी और समाजवाद पर किये जाने वाले प्रहारों ने अत्यन्त भीषण रूप धारण कर लिया।

दार्शनिक अध्ययन के क्षेत्र में याङ श्येन चन ने बड़ी निर्लज्जता के साथ विचार और वास्तविकता की एकरूपता को न मानने की भ्रान्त धारणा फैलाकर यह कोशिश की कि मजदूरों, किसानों और सैनिकों के जन-समुदाय को अपनी मनोगत पहलकदमी का पूर्ण विकास न करने दिया जाए और लम्बी छलांग का विरोध किया जाए। इसके बाद उसने "दो के

एक में मिल जाने" के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, तथा इस प्रकार एक ऐसी अत्यन्त प्रतिक्रियावादी राजनीतिक कार्यदिशा के लिए दार्शनिक "आधार" तैयार कर डाला जो साम्राज्यवाद, प्रतिक्रियावादियों और आधुनिक संशोधनवाद के साथ हमारे सम्बन्धों के क्षेत्र में संघर्ष को खत्म कर देने, दूसरे देशों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों की सहायता व समर्थन कम कर देने, निजी इस्तेमाल के लिए छोड़े गए खेतों और स्वतंत्र बाजारों का विस्तार करने, ऐसे छोटे-छोटे कारोबारों की तादाद बढ़ा देने जो अपने नफे-नुकसान के लिए पूरी तरह खुद ही जिम्मेदार हों, तथा उत्पादन का कोटा परिवारों के आधार पर निर्धारित करने का पक्षपोषण करती है। पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले तथाकथित "धुरंधर विद्वानों" ने, जो मौका पाकर पार्टी में आ घुसे थे, "अधकचरेपन", "आवश्यकता से अधिक सरलीकरण" और "कार्यसाधकतावाद" के ये तीन डण्डे घुमाते हुए मजदूरों, किसानों व सैनिकों का इस बात के लिए विरोध किया कि वे अध्यक्ष माओ की रचनाओं का सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करें और उनके विचारों को सृजनात्मक ढंग से लागू करें। यही नहीं, अपने पद और अपनी सत्ता का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने समाचार-पत्रों को इस बात से रोका कि वे मजदूरों, किसानों और सैनिकों के लिखे हुए दार्शनिक लेख प्रकाशित करें। साथ ही, दर्शन-शास्त्र के इतिहास का अध्ययन करने की आड़ लेकर, कुछ पूंजीवादी "विशेषज्ञों" ने "स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व" के विचारों का प्रचार प्रसार किया और कनफ्यूशियस की तारीफ के पुल बांध दिए तथा इस गड़े मुर्दे की आड़ में अपने समूचे पूंजीवादी विचार समूह का प्रचार-प्रसार किया।

आर्थिक अध्ययन के क्षेत्र में, सुन ये-फाङ और उसकी टोली ने संशोधनवादी भ्रान्त धारणाओं का एक पूरा का पूरा समूह ही पेश कर डाला। उन्होंने माओ त्सेतुङ के विचारों को और राजनीति को सर्वोपरि रखने का विरोध किया तथा मुनाफे और धन को सर्वोपरि रखना चाहा। उन्होंने समाजवादी उत्पादन सम्बन्धों को बदलने की तथा समाजवादी कारखानों को पूंजीवादी कारखानों में बदलने की नाकाम कोशिश की।

ऐतिहासिक अध्ययन के क्षेत्र में, मुट्ठीभर पूंजीवादी "धुरंधर विद्वानों"

ने 1958 में ऐतिहासिक अध्ययन के क्षेत्र में शुरू किए गए क्रान्तिकारी परिवर्तनों पर अन्धाधुन्ध प्रहार किया। उन्होंने ऐतिहासिक अनुसन्धान के क्षेत्र में मार्क्सवाद लेनिनवाद और माओ-त्सेतुङ के विचारों को सर्वोपरि रखने का विरोध किया तथा यह धारणा फैलाई कि ऐतिहासिक सामग्री ही सब कुछ होती है। उन्होंने वर्ग संघर्ष के मार्क्सवादी लेनिनवादी सिद्धान्त का विरोध करने के लिए अपने तथाकथित "ऐतिहासिकतावाद" का इस्तेमाल किया। उन्होंने इतिहास के क्षेत्रों में काम करने वाले उन क्रान्तिकारी अनुसन्धानकर्ताओं से भारी नफरत की जो शाहंशाहों, बादशाहों, सेनापतियों और प्रधान-मंत्रियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हैं तथा किसानों और किसान-युद्धों को अहमियत देते हैं। उन्होंने शाहंशाहों, बादशाहों, सेनापतियों और प्रधानमंत्रियों की तो तारीफ के पुल बांध दिए जबकि किसानों और किसान-युद्धों को बड़ी सरगरमी के साथ कलंकित किया। वे ऐतिहासिक अध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले पुंजीवादी "राजतंत्रवादी" हैं। उनमें से कुछ लोग तो कट्टर कम्युनिस्ट-विरोधी हैं। उन्हीं में ऊ हान और च्यान पो-चान भी शामिल हैं।

साहित्य व कला के क्षेत्र में, पुंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों ने साहित्य व कला के लिए समूची संशोधनवादी कार्यदिशा का, जो अध्यक्ष माओ की कार्यदिशा के विपरीत है, प्रचार-प्रसार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी तथा अपनी तथाकथित 1930-40 की परम्पराओं का जोरों के साथ प्रचार-प्रसार किया। "ईमानदारी के साथ लिखने" के बारे में "यथार्थ के प्रशस्त पथ" के बारे में, "यथार्थवाद में गहराई लाने" के बारे में, "विषय-वस्तु के निर्णयात्मक तत्व होने का विरोध करने" के बारे में, "मध्यम पात्रों" के बारे में, "बारूद की गन्ध" का विरोध करने के बारे में, "विभिन्न धाराओं का युग भावना के रूप में एकीकरण करने" के बारे में, तथा "क्लासिकी साहित्य का परित्याग करने और कट्टरपन्थीपन के प्रति विद्रोह करने" के बारे में, उनके सिद्धान्त एक खास किस्म के थे। इन सिद्धान्तों के "मार्गदर्शन" में बिलकुल भोंडे, पार्टी-विरोधी, समाजवाद-विरोधी नाटक ओपेराओं, उपन्यासों व फिल्मों तथा सिनेमा व साहित्य के इतिहासों की एक बाढ़ सी आ गई।

शिक्षा के क्षेत्र में, पुंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों ने अध्यक्ष माओ द्वारा प्रस्तुत की गई शिक्षा नीति का विरोध करने की भरपूर कोशिश की; इस नीति का उद्देश्य है शिक्षा प्राप्त करने वाले का नैतिक, बौद्धिक व शारीरिक विकास करना तथा उसे समाजवादी विचारों से लैस एक सुसंस्कृत मेहनतकश बना देना। उन्होंने कुछ समय काम, कुछ समय पढ़ाई करने की शिक्षा-प्रणाली का विरोध करने तथा सोवियत संघ के संशोधनवादियों के शिक्षा "सिद्धान्तों" और शिक्षा-प्रणालियों का प्रचार-प्रसार करने की हरचन्द कोशिश की। उन्होंने नौजवान पीढ़ी को हमसे छीन कर उस पर अपना प्रभाव जमाने की जीतोड़ कोशिश की, इस व्यर्थ आशा से कि, वे नौजवानों को पुंजीपति वर्ग के उत्तराधिकारियों के रूप में प्रशिक्षित कर सकेंगे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में पुंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों ने पत्रकारिता की पथ प्रदर्शक भूमिका का विरोध करने की भरपूर कोशिश की तथा "ज्ञान-प्रसार" की पुंजीवादी धारणा की पैरवी की। उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ त्सेतुङ के विचारों के नेतृत्व का गला घोंटने की नाकाम कोशिश की, यह उम्मीद करते हुए कि वर्जित पुंजीवादी सामग्री का स्वतंत्र रूप से प्रचार प्रसार किया जा सकेगा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र को हमारे कब्जे से छीना जा सकेगा।

इस प्रतिकूल धारा में सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी और कट्टरतावादी तत्व पार्टी-विरोधी "तीन परिवार वाले गांव" का गिरोह था। इस गिरोह के लोगों ने अपने अनेक अड्डे बना लिए थे - समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, गोष्ठियों और प्रकाशन संस्थाओं में। उनके लम्बे हाथ सांस्कृतिक जगत के कोने-कोने में पहुंच गए, जहां उन्होंने कुछ नेतृत्वकारी पदों को भी हथिया लिया। हर प्रतिक्रियावादी चीज को वे बड़ी आसानी से सूंघ लेते थे, तथा अपनी रचनाओं के अन्दर वे राजनीतिक वातावरण की हर प्रतिक्रियावादी चीज के साथ अत्यन्त घनिष्ठता के साथ तुरन्त तालमेल कायम कर लेते थे। उन्होंने एक निर्देशन के अनुसार, एक सुसंगठित तरीके से, एक योजना के अनुरूप काम करते हुए और एक निश्चित उद्देश्य को सामने रख कर, पुंजीवाद की पुनर्स्थापना करने और सर्वहारा

अधिनायकत्व का तख्ता उलट देने के लिए लोकमत तैयार किया।

इस प्रतिकूल धारा में मुख्य भूमिका वे लोग अदा कर रहे थे जो पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि थे, लेकिन जो पार्टी के भीतर मौका पाकर आ घुसे थे। उन्होंने "लाल झण्डे" फहराते हुए लाल झण्डे का विरोध किया, तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ त्सेतुङ के विचारों का लबादा ओढ़कर मार्क्सवाद लेनिनवाद और माओ त्सेतुङ के विचारों का विरोध किया। मार्क्सवाद के "धुरंधर विद्वानों" तथा पार्टी की नीतियों का स्पष्टीकरण करने वाले "धुरंधर विद्वानों की पोशाक पहन कर, उन्होंने बड़ी बेहयाई के साथ जहर फैलाया और आम जनता की आंखों में धूल झोंकी। उन्होंने अपने पदों व अपने हाथ में मौजूद सत्ता का इस्तेमाल करके एक तरफ तो सभी किस्म के दैत्यों व दानवों को खुली छूट दे दी तथा दूसरी तरफ सर्वहारा वामपंथियों के जवाबी प्रहारों को दबा दिया। वे लोग मुट्ठीभर षड्यन्त्रकारी हैं, जो कम्युनिज्म का साइनबोर्ड लगाए फिरते हैं, लेकिन इसकी आड़ लेकर जो वास्तव में पार्टी विरोधी और समाजवाद विरोधी जहर फैलाते हैं। ये लोग एक बेहद खतरनाक किस्म का गिरोह हैं।

1959 से ही हम पूंजीपति वर्ग द्वारा किए गए प्रहारों का लगातार डटकर मुकाबला करते रहे हैं। खासतौर पर पिछले नवम्बर से, जब कामरेड याओ वन-य्वान ने "'हाए रुइ की अपने पद से बरखास्तगी' नामक नए ऐतिहासिक नाटक के बारे में" शीर्षक अपना लेख प्रकाशित कराया तथा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का बिगुल बजाया तब से पूंजीपति वर्ग के खिलाफ एक जनव्यापी जवाबी हमला शुरू हो गया।

इस जवाबी हमले में, मजदूरों, किसानों, सैनिकों, क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों के व्यापक जन समुदाय की राजनीतिक चेतना का स्तर एक अभूतपूर्व ऊंचाई पर पहुंच गया है और उनकी जुझारू शक्ति बेहद बढ़ गई है। आम जनता द्वारा किए गए संघर्षों ने "तीन परिवार वाले गांव" के पार्टी विरोधी गुट को तहस-नहस कर दिया और उसकी जड़ों को उखाड़ फेंक दिया। उसकी जड़ें और कहीं नहीं बल्कि पार्टी की भूतपूर्व पेकिङ नगर कमेटी में ही मौजूद थीं। कम्युनिस्ट पार्टी की भूतपूर्व पेकिङ नगर कमेटी के नेतृत्व के अधीन एक अंधकारपूर्ण पार्टी विरोधी और

समाजवाद विरोधी कार्यदिशा का बोलबाला था। उसके कुछ नेतृत्वकारी सदस्य मार्क्सवादी-लेनिनवादी नहीं बल्कि संशोधनवादी थे। उन्होंने बहुत से बुनियादी स्थलों और माध्यमों को अपने कब्जे में कर लिया था और सर्वहारा वर्ग पर अपना अधिनायकत्व लागू करने का प्रयत्न किया था। वे लोग कैरियरवादियों और षड्यन्त्रकारियों का एक गिरोह बन गए थे। लेकिन उनके षड्यन्त्रों को बेनकाब कर दिया गया और उन्हें शिकस्त दे दी गई। हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने पेकिङ नगर पार्टी-कमेटी का पुनर्गठन किया और एक नई पार्टी कमेटी कायम कर दी। यह फैसला अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण और बिलकुल सही था। यह माओ त्सेतुङ के विचारों की एक नई विजय थी।

गत वर्ष जब से हमने बड़े पैमाने पर जवाबी हमला शुरू किया, तभी से पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों में भारी खलबली मच गई है जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे थे और "लाल झण्डों" को फहरा कर लाल झण्डे का विरोध कर रहे थे। उन्होंने पूंजीवादी दक्षिणपंथियों का समर्थन करने और उन्हें बचाने के लिए तथा सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों का दमन करने और उन पर प्रहार करने के लिए बड़ी जल्दबाजी के साथ पांच "तावीजों" का आविष्कार कर डाला।

उनमें से एक "तावीज" का नाम है "खुलकर बात कहने देना"।

पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों ने, जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे थे और जिन्होंने "लाल झण्डों" को फहरा कर लाल झण्डे का विरोध किया, पार्टी की "खुलकर बात कहने देने" की नीति की वर्ग-अन्तर्वस्तु को खत्म करके और उसे एक पूंजीवादी उदारवादी नीति के रूप में विकृत करके उसे तोड़ने-मरोड़ने की पुरजोर कोशिश की। उन्होंने केवल पूंजीवादी दक्षिणपंथियों को ही "अपनी बात कहने" की इजाजत दी तथा सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों को इस प्रतिद्वन्द्विता में शामिल नहीं होने दिया। उन्होंने केवल पूंजीवादी दक्षिणपंथियों को ही प्रहार करने की इजाजत दी तथा सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों को जवाबी प्रहार करने की इजाजत नहीं दी। उन्होंने दक्षिणपंथियों को अपनी बात यथासम्भव "खुलकर" कहने की इजाजत दी, जबकि वामपंथियों द्वारा जवाबी प्रहार

करने के लिए भेजी गई पाण्डुलिपियों को या तो अलग रख दिया अथवा उनके लेखकों को इस बात के लिए मजबूर किया कि वे अपनी रचनाओं को उनके विचारों के अनुरूप फिर से लिख दें। उन्होंने कहा कि "हाए रुइ की अपने पद से बरखास्तगी" नामक रचना की राजनीतिक दृष्टि से आलोचना नहीं की जानी चाहिए, वरना इससे "खुलकर बात कहने देने" की नीति पर असर पड़ेगा तथा तब लोग बोलने की हिम्मत नहीं कर पाएंगे। हम इन रईसजादों से पूछना चाहते हैं: क्या तुमने बहुत धीमे से "खुलकर बात कही" है? क्या तुमने पार्टी पर एक खड्गधारी और तीर-कमानधारी योद्धा की तरह राजनीतिक प्रहार नहीं किया है? आखिर तुमने सर्वहारा वर्ग को इस बात से क्यों रोका कि वह पूंजीवादी दक्षिणपंथियों पर राजनीतिक जवाबी प्रहार करने के लिए "खुलकर अपनी बात कहे"? वास्तव में "खुलकर बात कहने देने" की नीति के द्वारा तुमने पूंजीपति वर्ग को तो हरी रोशनी दिखाकर आगे बढ़ने का संकेत दिया और सर्वहारा वर्ग को लाल रोशनी दिखाकर रुक जाने का संकेत दिया।

दूसरे "तावीज" का नाम है "विध्वंस से पहले निर्माण"।

जब सर्वहारा वर्ग ने पूंजीपति वर्ग के प्रहार का जवाब दिया, तो "द्वन्द्ववादी" होने का ढोंग रचते हुए, पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों ने जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे थे तथा "लाल झण्डों" को फहरा कर लाल झण्डे का विरोध कर रहे थे, यह चीख-पुकार मचाई कि "विध्वंस से पहले निर्माण" होना चाहिए। और "विध्वंस से पहले निर्माण" का बहाना बनाकर उन्होंने सर्वहारा वर्ग को पूंजीवादी विचारधारा का विध्वंस करने तथा पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी राजनीतिक दुर्ग पर प्रहार करने की इजाजत नहीं दी। "विध्वंस से पहले निर्माण" की धारणा द्वन्द्ववादी सिद्धान्तों और माओ त्सेतुङ के विचारों का विरोध करती है। कामरेड माओ त्सेतुङ ने हमें बार-बार यह सिखाया है कि विध्वंस के बिना निर्माण हरगिज नहीं हो सकता। पहले तो विध्वंस ही होना चाहिए। विध्वंस का मतलब है क्रान्ति, इसका मतलब है आलोचना। विध्वंस के लिए अनिवार्य रूप से तर्क की आवश्यकता होती है और तर्क अपने आप में ही एक निर्माणकार्य है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ त्सेतुङ के

विचार ये सभी, पूंजीवादी विचारधारा, दक्षिणपंथी अवसरवाद, और "वामपंथी" अवसरवाद को खत्म करने के संघर्ष के दौरान ही विकसित हुए हैं। निर्माण से पहले विध्वंस ओर विध्वंस की प्रक्रिया के दौरान निर्माण–यही इतिहास का द्वन्द्ववादी सिद्धान्त है। क्या मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ त्सेतुङ के विचार–जो युग-युगान्त की सबसे महान सच्चाइयां हैं--निर्माण नहीं हैं? हम उक्त पूंजीवादी रईसजादों से पूछना चाहते हैं, आखिर तुम लोग किस चीज का निर्माण करना चाहते हो? जाहिर है कि तुम केवल पूंजीवादी प्रतिक्रियावादी विचारधारा का निर्माण करना चाहते हो, सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी विचारधारा का नहीं। जब सर्वहारा वर्ग ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओ त्सेतुङ के विचारों का इस्तेमाल करके, पूंजीपति वर्ग के प्रहारों से डटकर लोहा लिया तथा पूंजीवादी विचारधारा को नष्ट करने के लिए कमर कस ली, उसके बाद, आपके द्वारा मचाई गई "विध्वंस से पहले निर्माण" की चीख-पुकार का मकसद बिलकुल यही था कि दक्षिणपंथियों की तो हिफाजत की जाय ओर वामपंथियों को जवाबी प्रहार करने से रोक दिया जाए। यह सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का विरोध करना था।

तीसरे "तावीज" का नाम है "वामपंथी निरंकुश-विद्वानों" का विरोध करना और उनकी बढ़ोत्तरी न होने देना।

जब भी सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों ने पूंजीवादी प्रहारों का जवाब दिया, तो पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों ने, जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे थे और "लाल झण्डों" को फहरा कर लाल झण्डे का विरोध कर रहे थे, बड़े "सूक्ष्मदर्शी" और "गहन" होने का ढोंग रचते हुए वामपंथियों को "भोंडा" और "डण्डे" की भूमिका अदा करने वाला बताकर उनकी निन्दा की। पूंजीपति वर्ग के प्रहारों के खिलाफ मौजूद भारी जवाबी हमले के दौरान, उन्होंने फिर '"वामपंथी निरंकुश-विद्वानों" का विरोध करने और उनकी बढ़ोत्तरी न होने देने के तावीज का इस्तेमाल किया तथा इस प्रकार सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों को आगे न बढ़ने देने ओर उनका दमन करने की नाकाम कोशिश की। इसकी इजाजत हरगिज नहीं दी जा सकती थी। हम कहते हैं कि "निरंकुश विद्वान" का लेबिल

तुम पूंजीवादी प्रतिनिधियों और ''विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले धुरंधर विद्वानों'' के लिए बिलकुल ठीक बैठता है। मौका पाकर पार्टी के भीतर घुसपैठ करने वाले तथा पूंजीवादी निरंकुश विद्वानों का बचाव करने वाले और उन्हें शह देने वाले नवाबजादो, वास्तव में तुम ही परले दर्जे के निरंकुश पार्टी-अधिनायक और निरंकुश विद्वान हो—ऐसे निरंकुश व्यक्ति जो अखबारों और किताबों को नहीं पढ़ते, जो आम जनता से सम्बन्ध तोड़ चुके हैं और ज्ञान से वंचित हैं, तथा जो अपनी शक्ति का इस्तेमाल करके दूसरों पर हावी होना चाहते हैं। सर्वहारा वर्ग के वामपंथी सदैव मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सच्चाई पर माओ त्सेतुङ के विचारों की सच्चाई पर जोर देते हैं, तथा पूंजीवादी विचारधारा की आलोचना करते समय वैज्ञानिक धारणाओं और प्रमाणों पर निर्भर रहते हैं। सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों और ''निरंकुश विद्वानों'' में कोई समानता नहीं है। हमें तुम जैसे तमाम पूंजीवादी ''निरंकुश विद्वानों'' तथा मुट्ठीभर परले दर्जे के निरंकुश पार्टी-अधिनायकों और निरंकुश विद्वानों की बड़े पैमाने पर भरपूर निन्दा करनी चाहिए। वामपंथियों को ''डण्डा'' कह कर बदनाम करने वाले नवाबजादो, कान खोल कर सुन लो: वामपंथी लोग सर्वहारा वर्ग के फौलादी डण्डे हैं, बेशकीमती हथियार हैं और हम इस डण्डे से पुरानी दुनिया की धज्जियां उड़ा देंगे, तुम जैसे परले दर्जे के निरंकुश पार्टी-अधिनायकों और निरंकुश विद्वानों को शिकस्त दे देंगे तथा तुम्हारे जैसे पापियों की गुप्त दुनिया को नष्ट कर देंगे। इसी का नाम सर्वहारा अधिनायकत्व होता है।

उनके एक अन्य ''तावीज'' का नाम है ''खालिस इल्मी बहस।''

पार्टी व समाजवाद के खिलाफ पूंजीवादी दक्षिणपंथियों के प्रहारों पर पर्दा डालने के लिए तथा साथ ही सर्वहारा वर्ग के वामपंथियों के जवाबी प्रहारों को कुचल देने के लिए, पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों ने जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे हैं और ''लाल झण्डों'' को फहराते हुए लाल झण्डे का विरोध करते हैं, विचारधारा के क्षेत्र में वर्ग-संघर्ष को एक ''खालिस इल्मी बहस'' का नाम दिया है। हम इन नवाबजादों से पूछना चाहते हैं: क्या ऊ हान की ''हाए रुइ ने सम्राट को फटकार बताई'' नामक रचना और ''हाए रुइ की अपने पद से बरखास्तगी'' नामक रचना में तथा तङ थो, ल्याओ मो-शा और उनकी मण्डली के अन्य लोगों की पार्टी-विरोधी और समाजवाद-विरोधी दोहरी बातों में वास्तव में कोई इल्मी चीज मौजूद है? तथाकथित ''खालिस इल्मी बहस'' एक धोखाधड़ी है, जिसका इस्तेमाल पूंजीपति वर्ग अक्सर करता है। वर्ग-समाज में ''खालिस इल्मी'' जैसी कोई चीज नहीं होती; हर इल्मी चीज किसी निश्चित वर्ग के विश्व-दृष्टिकोण पर आधारित होती है, राजनीति के अधीन होती है, तथा किसी न किसी रूप में किसी निश्चित वर्ग की राजनीति और अर्थनीति की सेवा करती है। हमारे वर्तमान भरपूर जवाबी प्रहार के दौरान, पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों ने तथाकथित ''खालिस इल्मी बहस का तावीज बांध लिया तथा राजनीति को प्रमुख स्थान देने के सिद्धान्त का विरोध किया, ताकि पार्टी-विरोधी ''तीन परिवार वाले गांव'' अथवा ''चार परिवार वाले गांव'' की गिरोहबाजों की सराय से सम्बन्धित बुनियादी राजनीतिक मसले पर पर्दा डाला जा सके, पूंजीवादी राजनीति को प्रमुख स्थान दिया जा सके और सर्वहारा राजनीति को प्रमुख स्थान देने का विरोध किया जा सके, तथा इस महान संघर्ष को दक्षिणपंथी रास्ते पर धकेला जा सके और इसे एक संशोधनवादी रास्ते पर भटकाया जा सके।

उनका एक अन्य तावीज यह तथाकथित कथन है: ''सच्चाई के सामने सब बराबर हैं'' ''हर आदमी कोई न कोई गलत बात अवश्य कहता है'' और ''यह सब महज एक ढकोसला है।''

पूंजीपति वर्ग के खिलाफ सर्वहारा वर्ग के जवाबी प्रहार के दौरान, पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों ने, जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे थे और ''लाल झण्डे'' फहराते हुए लाल झण्डे का विरोध कर रहे थे, यह तावीज इसलिए पहना जिससे एक तरफ तो उनके अपने आदमी अपने मोर्चों पर जमे रहें और एक इंच भी पीछे न हटें तथा दूसरी तरफ लोगों के दिमाग में उलझन पैदा हो जाय, ताकि पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि खुद इस गड़बड़ का फायदा उठा सकें ओर जवाबी प्रहार करने के मौके का इंतजार करते रहें।

''सच्चाई के सामने सब बराबर हैं'' का सरासर पूंजीवादी नारा पूर्ण

रूप से एक मिथ्यावादी नारा है। विरोधी वर्गों के बीच समानता कभी नहीं हो सकती। सच्चाई का भी वर्ग-स्वरूप होता है। वर्तमान युग में केवल सर्वहारा वर्ग ही वस्तुगत सच्चाई को आत्मसात कर सकता है क्योंकि उसके वर्ग-हित वस्तुगत नियमों के बिलकुल अनुरूप होते हैं। प्रतिक्रियावादी और पतनशील पूंजीपति वर्ग काफी समय पहले ही सच्चाई से पूरी तरह नाता तोड़ चुका है। उसकी तथाकथित "सच्चाई" महज एक ऐसे झूठ के अलावा और कुछ नहीं है जो युग-प्रवाह और वस्तुगत नियमों के विपरीत है। सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच, सर्वहारा विचारधारा और पूंजीवादी विचारधारा के बीच, तथा सर्वहारा सच्चाई और पूंजीवादी झूठ के बीच किसी भी किस्म की कोई समानता नहीं हो सकती। सवाल महज यह है कि पुरवा हवा पछवा हवा पर हावी हो गई है अथवा पछवा हवा पुरवा हवा पर। क्या ऐसे बुनियादी प्रश्नों के बारे में भी हमारे और उनके दृष्टिकोण की समानता की इजाजत दी जा सकती है जैसे पूंजीपति वर्ग के खिलाफ सर्वहारा वर्ग द्वारा संघर्ष करना, पूंजीपति वर्ग पर सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व लागू करना, ऊपरी ढांचे पर, जिसमें संस्कृति के विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व लागू करना, तथा सर्वहारा वर्ग की पांतों से पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों का लगातार सफाया करते जाना जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे हैं तथा "लाल झण्डे" फहराते हुए लाल झण्डे का विरोध करते हैं? अनेक दशाब्दियों से सामाजिक-जनवादियों ने और पिछली एक दशाब्दी से कुछ अधिक समय से आधुनिक संशोधनवादियों ने सर्वहारा वर्ग को पूंजीपति वर्ग के साथ समानता का उपभोग करने की इजाजत कभी नहीं दी। "सच्चाई के सामने सब बराबर हैं" का नारा लगाकर पूंजीपति वर्ग के वे प्रतिनिधि जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे हैं, पार्टी-विरोधी और समाजवाद-विरोधी तत्वों को प्रोत्साहन देना चाहते हैं और वामपंथियों के जवाबी प्रहारों को कुचल डालना चाहते हैं। हम इन नवाबजादों से पूछना चाहते हैं: तुम समानता की रट लगाते हो, तो फिर तुमने वामपंथियों के लेख छापने से इनकार क्यों किया तथा केवल दक्षिणपंथियों की ही बहुत सी विषैली घासपात क्यों प्रकाशित होने दी? यह कैसी समानता है? हम

तुम्हें साफ-साफ बता देना चाहते हैं कि हम तुम्हें सर्वहारा वर्ग के साथ किसी भी किस्म की समानता का उपभोग हरगिज नहीं करने देंगे। तुम्हारे खिलाफ हमारा संघर्ष एक जीवन-मरण का संघर्ष है। तुम्हारे जैसे पार्टी-विरोधी और समाजवाद-विरोधी गिरोहों के लिए सिर्फ अधिनायकत्व की ही जरूरत है।

यह तर्क पेश करना कि "हर आदमी कोई न कोई गलत बात अवश्य कहता है" तथा "यह सब महज एक ढकोसला है", एक भारी षड्यंत्र है। हम समझते हैं कि सबसे पहले विभिन्न वर्गों के बीच, क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच एक विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए। हो सकता है कि वस्तुगत घटनाओं को समझते समय क्रान्तिकारी वामपंथी कोई न कोई गलती कर बैठें, लेकिन इन गलतियों को पूंजीवादी दक्षिणपंथियों के पार्टी-विरोधी, समाजवाद-विरोधी और प्रतिक्रान्तिकारी बयानों व कारनामों के समकक्ष नहीं रखा जा सकता; ये दोनों बिलकुल भिन्न हैं। वर्तमान महान सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान मुख्य अन्तरविरोध एक शत्रुतापूर्ण अन्तरविरोध है, जिसके एक पक्ष में तो मजदूरों, किसानों, सैनिकों, क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं और क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों का व्यापक जनसमूह है तथा दूसरे पक्ष में पूंजीपति वर्ग के तुम जैसे मुट्ठीभर पार्टी-विरोधी और समाजवाद-विरोधी प्रतिनिधि हैं। यह क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच का अन्तरविरोध है, दुश्मन और हमारे बीच का एक ऐसा अन्तरविरोध है जो हल नहीं हो सकता। जहां तक तुम्हारे प्रतिक्रान्तिकारी बयानों और कारनामों का सवाल है, हमें उन सबकी निर्दयतापूर्वक आलोचना करनी चाहिए तथा उन पर प्रहार करने के लिए संघर्ष का बिगुल बजा देना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि विद्याध्ययन सम्बन्धी पूंजीवादी विचारों की भी सामान्य रूप से आलोचना की जानी चाहिए, लेकिन उनके प्रति तुम जैसे पार्टी-विरोधी और समाजवाद-विरोधी तत्वों के मुकाबले अलग किस्म का बर्ताव किया जाना चाहिए। साधारण पूंजीवादी विद्वानों से निपटते समय हम उनके लिए पहले की ही तरह समुचित रोजगार मुहैया करते रहेंगे तथा उन्हें इस बात का मौका देंगे कि वे काम के दौरान अपने विश्व-दृष्टिकोण को बदल डालें, बशर्ते कि वे

कम्युनिस्ट पार्टी और जनता का विरोध न करते हों। जब भी हम पूंजीपति वर्ग पर जवाबी प्रहार करते हैं, तो पूंजीपति वर्ग के वे प्रतिनिधि जो मौका पाकर हमारी पार्टी में घुस आए हैं, यह चीख पुकार मचाने लगते हैं कि "हर आदमी कोई न कोई गलत बात अवश्य कहता है" और "यह सब महज एक ढकोसला है"; उनका मकसद केवल यह होता है कि वामपंथियों को मजबूती से अपनी मुट्ठी में रखा जाय, वातावरण को दूषित बना दिया जाय और एक भारी घोटाला पैदा करके वामपंथियों पर जवाबी प्रहार किया जाय। उनकी यह कोशिश बिलकुल व्यर्थ साबित होगी। हम अध्यक्ष माओ के मार्गदर्शन में चलते हैं तथा वामपंथियों, मध्यममार्गियों और दक्षिणपंथियों के बीच फर्क करते हैं; हम वामपंथियों पर भरोसा करते हैं, दक्षिणपंथियों के खिलाफ संघर्ष करते हैं तथा बहुसंख्यक जनता को अपने पक्ष में कर लेते हैं, उसके साथ एकता कायम करते हैं और उसे शिक्षित करते हैं, ताकि महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति को अन्त तक चलाया जा सके।

पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों के, जो मौका पाकर पार्टी में घुस आए हैं तथा "लाल झण्डे" फहराते हुए लाल झण्डे का विरोध करते हैं, इन सभी तावीजों का मकसद सिर्फ एक ही है–सर्वहारा वर्ग पर अपना अधिनायकत्व लागू करना। उन्होंने संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में कुछ नेतृत्वकारी पदों पर कब्जा तक कर लिया है और हम पर अपना अधिनायकत्व भी लागू कर दिया है। ये सभी पद हमें उनसे फिर छीन लेने होंगे और पूंजीपति वर्ग के इन प्रतिनिधियों को उखाड़ फेंकना होगा।

मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसने वाले पूंजीवादी प्रतिनिधियों की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वे "लाल झण्डे" फहराते हुए लाल झण्डे का विरोध करते हैं।

उन्हें हम कैसे पहचान सकते हैं? इसका एकमात्र तरीका है, "अध्यक्ष माओ की रचनाओं को पढ़ना, उनकी शिक्षाओं पर चलना और उनकी हिदायतों पर अमल करना"।

माओ त्सेतुङ के विचार वर्तमान युग में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सर्वोच्च शिखर हैं, वे जीवन्त मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सर्वाधिक उन्नत

रूप हैं। कामरेड माओ त्सेतुङ के सिद्धान्त और व्यवहार की उपमा आकाश में सूरज और चांद की अनवरत परिक्रमा से तथा पृथ्वी में नदियों और जलस्रोतों के अनन्त प्रवाह से दी जा सकती है। कामरेड माओ त्सेतुङ की रचनाएं हमारे समस्त कार्यों के लिए सर्वोच्च निर्देशन है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद और संशोधनवाद के बीच की, तथा क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के बीच की विभाजन रेखा यह है कि आप माओ त्सेतुङ के विचारों का समर्थन करते हैं और उनके अनुरूप आचरण करते हैं अथवा उनका बहिष्कार करते हैं और उनके अनुरूप आचरण करने का विरोध करते हैं।

हम उन तमाम चीजों का पक्षपोषण और समर्थन करते हैं जो माओ त्सेतुङ के विचारों के अनुरूप हैं। जो कोई भी माओ त्सेतुङ के विचारों का विरोध करेगा, उसके खिलाफ हम निर्भयतापूर्वक संघर्ष करेंगे और उसे उखाड़ फेंकेंगे, फिर चाहे वह कितना ही "मशहूर" और "धुरंधर विद्वान" क्यों न हो तथा कितने ही बड़े "पद" पर क्यों न हो।

पूंजीपति वर्ग के वे प्रतिनिधि जो मौका पाकर पार्टी के भीतर आ घुसे हैं, देखने में बड़े "भारी भरकम" मालूम पड़ते हैं लेकिन वास्तव में अन्य सभी प्रतिक्रियावादियों के ही समान वे भी महज कागजी बाघ ही हैं।

माओ त्सेतुङ के विचार, वाहन को नियंत्रित करने वाले गियर हैं और मजदूर, किसान व सैनिक सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की मुख्य शक्ति हैं। अतएव हम अपनी सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में हर तरह के दैत्यों व दानवों को शिकस्त दे सकते हैं और एक के बाद एक विजय प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे देश में जमींदार, धनी किसान, प्रतिक्रान्तिकारी, बुरे तत्व और दक्षिणपंथी तथा विदेशों में साम्राज्यवादी और संशोधनवादी, बड़ी दुष्टता के साथ खुश होकर यह समझते हैं कि इस समय जबकि हम पार्टी-विरोधी "तीन परिवार वाले गांव" के गिरोह का पर्दाफाश कर रहे हैं और उसकी आलोचना कर रहे हैं, वे लोग इसका कुछ न कुछ फायदा उठा सकते हैं। हम अपने देश के और विदेशों के प्रतिक्रियावादियों को यह बता देना चाहते हैं कि वे निहायत बेवकूफ हैं। पार्टी-विरोधी "तीन परिवार वाले

गांव'' के गिरोह का पर्दाफाश करने, उसकी आलोचना करने तथा तमाम दैत्यों व दानवों का सफाया करने का उद्देश्य वास्तव में हमारी पार्टी के भीतर और हमारे देश के अन्दर मौजूद तुम्हारे तमाम एजेन्टों को नेस्तनाबूद कर देना तथा उस ''टाइम-बम'' को हटा देना है जिस पर तुम अपनी आशाओं को केन्द्रित किए बैठे हो। जैसे-जैसे महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति अधिकाधिक गहरी होती जाएगी वैसे-वैसे हम माओ त्सेतुङ के विचारों को समूचे देश की जनता के बीच और अधिक दृढ़ता के साथ प्रस्थापित करते जाएंगे, तथा संशोधनवाद को और उन तमाम चीजों को जड़मूल से उखाड़ फेंकेंगे जो पूंजीवाद की पुनर्स्थापना को प्रोत्साहन देती है। इतिहास बड़ी बेरहमी के साथ तुम्हारे जैसे मूर्खों की खिल्ली उड़ाएगा।

देश-विदेश के प्रतिक्रियावादियों ने यह झूठी अफवाह फैलाई है कि हम समस्त बुद्धिजीवियों पर प्रहार कर रहे हैं। यह बिलकुल बेहूदा बात है। चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का निशाना वे मुट्ठीभर दुष्ट लोग हैं जो कम्युनिज्म का साइनबोर्ड लगाकर कम्युनिस्ट-विरोधी सामग्री बेचते फिरते हैं; इसका निशाना मुट्ठीभर पार्टी-विरोधी, समाजवाद-विरोधी और प्रतिक्रान्तिकारी पूंजीवादी बुद्धिजीवी हैं। उन बुद्धिजीवियों की भारी तादाद के बारे में जो पुराने समाज से आए हैं, हमारी नीति है उनके साथ एकता कायम करना, उन्हें शिक्षित करना और उनका पुनःसंस्कार करना। महान सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान सर्वहारा वर्ग के बुद्धिजीवियों की पांतें लगातार बढ़ती जा रही हैं।

क्रान्तिकारी लोगो, आओ हम सब माओ त्सेतुङ के विचारों के आधार पर और अधिक घनिष्ठता के साथ एकताबद्ध हो जाएं।

आओ, हम माओ त्सेतुङ के विचारों के महान लाल झण्डे को और सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के महान लाल झण्डे को बुलन्द रखते हुए, विजय-मार्ग पर अग्रसर होते जाएं!

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति अमर रहे!

एक युगान्तरकारी दस्तावेज

—''सरकुलर'' के प्रकाशन की दूसरी जयन्ती के उपलक्ष में

''रनमिन रपाओ'', ''हुङछी'' और ''च्येफाङच्युन पाओ'' के सम्पादकीय विभागों द्वारा लिखा गया लेख

(17 मई 1968)

अध्यक्ष माओ त्सेतुङ की विचारोक्तियां

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, सार रूप में, समाजवाद की परिस्थितियों के अन्तर्गत, सर्वहारा वर्ग द्वारा पूंजीपति वर्ग तथा अन्य तमाम शोषक वर्गों के खिलाफ चलाई जा रही एक महान राजनीतिक क्रान्ति है; यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा उसके नेतृत्व में चीन के विशाल क्रान्तिकारी जन-समुदाय द्वारा क्वोमिन्तान्ङ प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध चलाए जा रहे दीर्घकालीन संघर्ष का ही एक जारी रूप है, सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के संघर्ष का ही एक जारी रूप है।

* * * *

जनता के व्यापक जनवाद के बिना सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ नहीं बनाया जा सकता तथा राजनीतिक सत्ता तब भी अस्थिर ही बनी रहेगी। जनवाद के बिना, जन-समुदाय को जागृत किए बिना तथा जन-समुदाय द्वारा की जाने वाली निगरानी के बिना, प्रतिक्रियावादियों और बुरे तत्वों पर कारगर रूप से अधिनायकत्व लागू करना अथवा उनका कारगर रूप से सुधार करना असम्भव है; वे लोग गड़बड़ी करना जारी रखेंगे, तथा पुनर्स्थापना की सम्भावना फिर भी बनी रहेगी। इस प्रश्न के बारे में हमें सतर्क रहना चाहिए और इस पर साथियों को ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए।

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेकिङ की ओर से

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का ''सरकुलर'' (16 मई 1966)*, जिसे अध्यक्ष माओ के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में तैयार किया गया, महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का सूत्रपात करने वाला एक युगान्तरकारी दस्तावेज है। ''सरकुलर'' में अध्यक्ष माओ ने सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति को जारी रखने के लिए जो सिद्धान्त, कार्यदिशा, उसूल और नीतियां प्रस्तुत की हैं उनसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सृजनात्मक विकास हुआ है।

''एक युगान्तरकारी दस्तावेज'', जिसे ''रनमिन रपाओ'', ''हुङछी'' और ''च्येफ़ाङच्युन पाओ'' के सम्पादकीय विभागों ने ''सरकुलर'' के प्रकाशन की दूसरी जयन्ती के उपलक्ष्य में तैयार किया, एक महत्वपूर्ण लेख है, जिसमें चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति द्वारा पिछले दो वर्ष में राजनीतिक, विचारधारात्मक और संगठनात्मक क्षेत्रों में प्राप्त की गई महान विजयों का गहराई से और व्यापक रूप से निचोड़ निकाला गया है। राजनीतिक क्षेत्र में, इस क्रान्ति ने हमारी पार्टी के भीतर छिपे हुए पूंजीपति वर्ग के सदर-मुकाम को, जिसकी अगुवाई चीन का खुश्चोव करता है, चकनाचूर कर दिया है, तथा पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले मुट्ठीभर लोगों, प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादियों, गद्दारों, दुश्मन के एजेण्टों और दुरंगे प्रतिक्रान्तिकारियों द्वारा हमारे देश में सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता उलट देने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने के लिए रची गई मुजरिमाना स्कीमों को धूल में मिला दिया है; विचारधारा के क्षेत्र में, इसने मुट्ठीभर वर्ग-शत्रुओं की क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना की है और खण्डन किया है तथा माओ त्सेतुङ विचारधारा के व्यापक प्रचार-प्रसार को

*देखिए ''चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का सरकुलर (16 मई 1966)– एक महान ऐतिहासिक दस्तावेज'', हिन्दी संस्करण, विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेकिङ, 1967। -अनुवादक।

बढ़ाया है तथा विचारधारा के क्षेत्र में सर्वहारा वर्ग को और अधिक प्रभुत्वकारी स्थिति में पहुंचने में मदद की है; संगठन के क्षेत्र में, क्रान्तिकारी "त्रिपक्षीय संश्रय" के आधार पर राजनीतिक सत्ता के एक बिलकुल नए संगठन का जन्म हो गया है–एक ऐसी क्रान्तिकारी कमेटी का जिसमें सर्वहारा अधिनायकत्व की बुनियादी शक्तियों (क्रान्तिकारी जन-समुदाय के प्रतिनिधियों), उसके सुदृढ़ स्तम्भ (जन-मुक्ति सेना के प्रतिनिधियों) और उसके नेतृत्वकारी केन्द्र (क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधियों) के बीच घनिष्ठ एकता कायम की गई है– तथा राजसत्ता के इस संगठन ने सर्वहारा अधिनायकत्व को और अधिक सुदृढ़ बना दिया है। लेख में सर्वहारा क्रान्तिकारियों और व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय का आह्वान किया गया है कि वे माओ त्सेतुङ विचारधारा के झण्डे तले और अधिक दृढ़ता के साथ गोलबन्द हो जाएं, अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा का दृढ़ता से अनुसरण करें तथा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में, जो मानव जाति के इतिहास में अपने किस्म की पहली क्रान्ति है, चौतरफा विजय प्राप्त करने के लिए अनवरत संघर्ष करते रहें!

दो साल पहले, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का 16 मई 1966 का "सरकुलर"–एक शानदार ऐतिहासिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी दस्तावेज–महान नेता अध्यक्ष माओ त्सेतुङ के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में तैयार किया गया था।

यह "सरकुलर" महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति को चलाने के लिए युगान्तकारी दस्तावेज है; यह सर्वहारा वर्ग और व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय के नाम, समाजवाद की परिस्थितियों के अन्तर्गत, पूंजीपति वर्ग तथा अन्य तमाम शोषक वर्गों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए एक जुझारू आह्वान है।

दो साल का समय बहुत थोड़ा होता हैं लेकिन इस दो सालों में कितने महान क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गए हैं! सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति को जारी रखने के लिए, अध्यक्ष माओ द्वारा "सरकुलर" में प्रतिपादित सिद्धान्त, कार्यदिशा, उसूलों और नीतियों ने पूंजीवादी प्रतिक्रियावादी कार्यदिशा द्वारा विभिन्न रूपों में एक के बाद एक खड़े किए गए प्रतिरोध को चकनाचूर कर दिया है, हमारे देश के सर्वहारा क्रान्तिकारियों और दसियों करोड़ क्रान्तिकारी जनता को लैस कर दिया है, तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की प्रभावशाली शक्ति को प्रदर्शित कर दिया है, और इस प्रकार पिछले दो सालों में अभूतपूर्व महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में निर्णयात्मक विजय प्राप्त कर ली है।

(1)

अध्यक्ष माओ ने इस "सरकुलर" में बताया है: **समूची पार्टी को चाहिए कि**

... सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के महान झण्डे को बुलन्द रखें, विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले उन तथाकथित "धुरंधर विद्वानों के प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी रुख का पूरी तरह पर्दाफाश करें जो पार्टी और समाजवाद का विरोध करते हैं, विद्याध्ययन, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य व कला और प्रकाशन के क्षेत्रों में प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचारों की आलोचना और उनका खण्डन सम्पूर्ण रूप से

करें, तथा इन सांस्कृतिक क्षेत्रों में नेतृत्व का अधिकार छीन लें। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए साथ ही यह भी जरूरी है कि पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों की आलोचना की जाय और उनका खण्डन किया जाय जो मौका पाकर पार्टी, सरकार, सेना और तमाम सांस्कृतिक क्षेत्रों में घुस आये हैं, उनका वहां से सफाया कर दिया जाय या उनमें से कुछ का दूसरे पदों पर तबादला कर दिया जाए।

पूंजीपति वर्ग के वे प्रतिनिधि, जो मौका पाकर, पार्टी, सरकार, सेना और विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में घुस आए हैं, मुट्ठीभर प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी हैं। जब एक बार स्थिति परिपक्व हो जाएगी, तो वे लोग राजनीतिक सत्ता छीन लेंगे और सर्वहारा अधिनायकत्व को पूंजीवादी अधिनायकत्व में बदल डालेंगे। उनमें से कुछ लोगों को हमने पूरी तरह पहचान लिया है, अन्य कुछ लोगों को अभी नहीं पहचाना। कुछ लोगों पर हम अब भी विश्वास करते हैं और उन्हें अपने उत्तराधिकारियों के रूप में प्रशिक्षित कर रहे हैं। मिसाल के लिए, ख्रुश्चोव जैसे लोग अब भी हमारे बिलकुल करीब आसन जमाए बैठे हैं सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों को इस मामले पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के पिछले दो वर्षों के अमल ने अध्यक्ष माओ की प्रतिभाशाली दूरदर्शिता को पूरी तरह प्रमाणित कर दिया है। लोग अब इस बात को और ज्यादा गहराई से समझ गए हैं कि अध्यक्ष माओ की इन हिदायतों के जरिए सर्वहारा अधिनायकत्व के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का सृजनात्मक विकास हुआ है, एक ऐसा विकास जो हमारे देश में सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने और समाजवादी क्रान्ति को जारी रखने, तथा अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए एक दूरगामी ऐतिहासिक भूमिका अदा करेगा।

पिछले दो वर्षों के दौरान, अभूतपूर्व व्यापक पैमाने पर चलाए गए क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन ने, समुद्र की उमड़ती हुई लहरों की तरह, हमारी पार्टी के अन्दर छिपे हुए पूंजीवादी सदर-मुकाम को, जिसका सरगना चीन का ख्रुश्चोव था, नेस्तनाबूद कर दिया है, कम्युनिस्ट पार्टी, जनता और माओ त्सेतुङ विचारधारा का विरोध करने वाले प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादियों को तथा गद्दारों, दुश्मन के एजेन्टों और दुरंगे प्रतिक्रान्तिकारियों को बेनकाब कर दिया है तथा हमारे देश में सर्वहारा अधिनायकत्व का तख्ता पलटने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने की उनकी मुजरिमाना साजिशों को कुचल दिया है।

ढेर सारे अकाट्य प्रमाणों का रहस्योद्घाटन हो जाने से अब यह साबित हो चुका है कि चीन का ख्रुश्चोव तथा पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले चोटी के अन्य मुट्ठीभर कर्ताधर्ता लोग प्रतिक्रान्तिकारी दुष्टों का एक गिरोह हैं, जो क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों, साम्राज्यवादियों, पूंजीपतियों, जमींदारों, धनी किसानों, प्रतिक्रान्तिकारियों, बुरे तत्वों और दक्षिणपंथियों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें से काफी लोग निकृष्ट और निकम्मे किस्म के हैं जिन्हें क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी छोड़ गए थे। चीन का ख्रुश्चोव, पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाला यह चोटी का कर्ताधर्ता, एक ऐसा ही नीच गद्दार है, जिसने साम्राज्यवादियों और क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के सामने कई मौकों पर घुटने टेक दिए थे। पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाला चोटी का एक अन्य कर्ताधर्ता, और थाओ चू, फङ त-ह्वाए, फङ चन, थान चन-लिन, लो रुइ-छिङ, लू तिङ-ई, याङशाङ-खुन, आन च-वन तथा अन्य लोग, ये सभी तरह-तरह के गद्दार, दुश्मन के एजेन्ट और प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवदी हैं जो पार्टी के अन्दर छिपे हुए थे।

ये बदमाश मौका पाकर हमारी पार्टी में घुस आए और उन लोगों ने अनेक महत्वपूर्ण पदों को हथिया लिया। ये लोग ख्रुश्चोव थे जो हमारे बिलकुल करीब आसन जमाए बैठे थे, हमारी पार्टी में छिपे हुए टाइमबम थे तथा समाजवाद की परिस्थितियों में सर्वहारा वर्ग के सबसे खतरनाक दुश्मन थे। एक बार स्थिति परिपक्व हो जाने पर ये लोग राजनीतिक सत्ता छीन लेते, सर्वहारा अधिनायकत्व को पूंजीवादी अधिनायकत्व में बदल डालते, और समाजवादी व्यवस्था को पूंजीवादी व्यवस्था में, एक अर्ध-सामन्ती और अर्ध-औपनिवेशिक व्यवस्था में बदल डालते। ऐसी स्थिति में, सोवियत संघ तथा अन्य देशों में, जो संशोधनवादी गद्दार गुटों के

नियंत्रण में हैं, पूंजीवाद की पुनर्स्थापना होने की ऐतिहासिक दुखद घटना की पुनरावृत्ति चीन में भी हो जाती और हमारा देश क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी शासन के अंधकारपूर्ण युग में फिर वापस लौट जाता।

इन प्रतिक्रान्तिकारियों के विरुद्ध हमारा संघर्ष एक तीक्ष्ण, जटिल और जीवन-मरण का संघर्ष है, यह एक महाक्रान्ति है जिसमें एक वर्ग दूसरे वर्ग का तख्ता उलट देता है। जैसा कि अध्यक्ष माओ ने गहन रूप से अपनी एक नवीनतम हिदायत में बताया है:

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति, सार रूप में, समाजवाद की परिस्थितियों के अन्तर्गत, सर्वहारा वर्ग द्वारा पूंजीपति वर्ग तथा अन्य तमाम शोषक वर्गों के खिलाफ चलाई जा रही एक महान राजनीतिक क्रान्ति है; यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा उसके नेतृत्व में चीन के विशाल क्रान्तिकारी जन-समुदाय द्वारा क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध चलाए जा रहे दीर्घकालीन संघर्ष का ही एक जारी रूप है, सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के संघर्ष का ही एक जारी रूप है।

इस संघर्ष में हासिल की गई विजय ने सर्वहारा अधिनायकत्व को अत्यधिक सुदृढ़ बना दिया है।

हमारी पार्टी ने अतीत काल में लोकयुद्ध चलाने के लिए व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय पर निर्भर रहकर ही शक्तिशाली घरेलू और विदेशी दुश्मनों को पराजित करने और क्वोमिन्ताङ के प्रतिक्रियावादी शासन को उखाड़ फेंकने में कामयाबी हासिल की थी। वर्तमान काल में नई ऐतिहासिक परिस्थितियों के अन्तर्गत, हमारी पार्टी फिर व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय पर निर्भर रहकर, इतिहास में अभूतपूर्व महान राजनीतिक क्रान्ति--एक ऐसी क्रान्ति जो सर्वहारा वर्ग द्वारा पूंजीपति वर्ग तथा अन्य तमाम शोषक वर्गों के खिलाफ छेड़ी गई है—चला रही है। दसियों करोड़ क्रान्तिकारी जनता और नौजवान लाल रक्षकों को अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा के मार्गदर्शन में गोलबन्द करके ही पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधियों को और निकृष्ट तथा निकम्मे किस्म के

लोगों को, जिन्हें क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी छोड़ गए थे, ऐसे लोगों को जो बेहद मक्कार, कपटी और नीच हैं तथा जो पार्टी के भीतर इतने लम्बे अर्से से छिपे हुए थे तथा इतनी गहराई तक घुसे हुए थे, बेनकाब किया जा सका है और प्रकाश में लाया जा सका है।

इस महान क्रान्ति में इन वर्ग-शत्रुओं के खिलाफ अन्तःचेतना को झकझोर देने वाले संघर्ष चलाने में चीन के सर्वहारा क्रान्तिकारियों, दसियों करोड़ क्रान्तिकारी जनता और नौजवान लाल रक्षकों द्वारा हासिल की गई महान विजय की अमिट और प्रचण्ड ज्योति सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्ष के इतिहास में हमेशा जगमगाती रहेगी।

(2)

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के जन-आन्दोलन ने मुट्ठीभर वर्ग-शत्रुओं की क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना और खण्डन को इतनी व्यापकता और गहराई तक पहुंचा दिया है जिसकी मिसाल इतिहास में कहीं नहीं मिलती।

"सरकुलर" से प्रेरणा पाकर, सर्वहारा क्रान्तिकारियों और व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय ने, माओ त्सेतुङ विचारधारा के क्रान्तिकारी आलोचना और खण्डन के महान झण्डे को बुलन्द रखा है, पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले मुट्ठीभर चोटी के कर्ताधर्ता लोगों और विभिन्न क्षेत्रों तथा विभागों में उनके एजेन्टों द्वारा पार्टी, समाजवाद और माओ त्सेतुङ विचारधारा के खिलाफ किए गए तमाम अपराधों का पूरी तरह पर्दाफाश और खण्डन कर डाला है, प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी कार्यदिशा तथा पूंजीपति वर्ग और अन्य सभी शोषक वर्गों की पुरानी विचारधारा, पुरानी संस्कृति, पुराने रीति-रिवाजों और पुरानी आदतों की जोरदार आलोचना की है तथा उनका खण्डन किया है।

क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना व खण्डन से माओ त्सेतुङ विचारधारा के व्यापक प्रचार-प्रसार को काफी बढ़ावा मिला है। माओ त्सेतुङ विचारधारा का सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करने तथा उसे सृजनात्मक ढंग से लागू करने के लिए जन-समुदाय में जितना ज्यादा उत्साह आज है उतना

पहले कभी नहीं रहा। लोगों की मानसिक स्थिति में भारी परिवर्तन हो चुका है। सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी कार्य के उत्तराधिकारी संघर्ष के दौरान भारी तादाद में उदय हो रहे हैं।

क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना व खण्डन से सर्वहारा वर्ग को विचारधारात्मक रूप से और अधिक प्रभुत्वपूर्ण स्थिति में पहुंचाने में मदद मिली है। इससे पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले मुट्ठीभर कर्ताधर्ता लोगों को न केवल संगठनात्मक रूप से, बल्कि राजनीतिक, विचारधारात्मक और सैद्धान्तिक रूप से भी उखाड़ फेंकने में सर्वहारा क्रान्तिकारियों को मदद मिली है और इस प्रकार राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में सर्वहारा वर्ग के प्रभुत्व को सुदृढ़ बना दिया है।

राजनीतिक और विचारधारात्मक क्षेत्रों में, या तो पुरवा हवा पछवा हवा पर हावी होती है, या पछवा हवा पुरवा हवा पर; या तो सर्वहारा वर्ग पूंजीपति वर्ग पर हावी होता है या पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग पर। बीच का रास्ता कोई नहीं है।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में, सर्वहारा क्रान्तिकारियों का उद्देश्य निश्चित रूप से पूंजीवादी प्रतिक्रियावादियों, विषैली घासपात तथा उन जमींदारों, धनी किसानों, प्रतिक्रान्तिकारियों, बुरे तत्वों और दक्षिणपंथियों के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक संघर्ष चलाना तथा उनका खण्डन करना है जिन्होंने अपना पुन:संस्कार नहीं किया। सर्वहारा वर्ग का उद्देश्य निश्चित रूप से पूंजीपति वर्ग पर हावी हो जाना है; पूंजीपति वर्ग के साथ "समानता" का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। जैसा कि अध्यक्ष माओ ने "सरकुलर" में बताया है:

क्या इस प्रकार के बुनियादी मसलों के बारे में समानता की इजाजत दी जा सकती है, जैसे पूंजीपति वर्ग के खिलाफ सर्वहारा वर्ग द्वारा संघर्ष करना, पूंजीपति वर्ग पर सर्वहारा अधिनायकत्व लागू करना, ऊपरी ढांचे में, जिसमें संस्कृति के सभी विविध क्षेत्र शामिल हैं, सर्वहारा अधिनायकत्व लागू करना, तथा सर्वहारा वर्ग द्वारा पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों को अपनी पांतों से बाहर निकालने के लिए लगातार प्रयत्न करना, जो मौका पाकर कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर घुस आए हैं और "लाल झण्डे" फहराकर लाल झण्डे का विरोध करते हैं?

चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के आन्दोलन में पिछले दो वर्षों के दौरान हासिल की गई महान जीतें पूंजीपति वर्ग तथा अन्य तमाम शोषक वर्गों की पुरानी विचारधारा की क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना और खण्डन में माओ त्सेतुङ विचारधारा द्वारा प्राप्त किये गए जबरदस्त परिणाम हैं।

अध्यक्ष माओ ने हमें बार-बार यह सिखाया है कि **विध्वंस के बिना निर्माण नहीं हो सकता। विध्वंस का मतलब है आलोचना और खण्डन, इसका मतलब है क्रान्ति। उसके लिए तर्क की आवश्यकता होती है और तर्क खुद अपने में ही एक निर्माण-कार्य है। पहले तो विध्वंस ही होना चाहिए, और विध्वंस की प्रक्रिया के दौरान निर्माण स्वाभाविक रूप से होता जाता है।**

इस अभूतपूर्व महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में, इस अत्यन्त तीव्र वर्ग-संघर्ष में विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि और विभिन्न विचारधाराएं मंच पर अभिनय करते रहेंगे। पतनोन्मुख वर्गों के प्रतिनिधि जनता को धोखा देने के लिए भेष बदल-बदल कर सामने आते रहेंगे और दुरंगी चालें चलते रहेंगे। हमें इस हिदायत को कि **"पहले तो विध्वंस ही होना चाहिए, और विध्वंस की प्रक्रिया के दौरान निर्माण स्वाभाविक रूप से होता जाता है"**, लागू करते रहना चाहिए और पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनानेवाले मुट्ठीभर चोटी के कर्ताधर्ता लोगों तथा पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी विश्व-दृष्टिकोण का खण्डन करते रहना चाहिए।

सर्वहारा क्रान्तिकारियों की पांतों के तमाम साथियों को माओ त्सेतुङ विचारधारा के महान लाल झण्डे को बुलन्द रखना चाहिए, माओ त्सेतुङ विचारधारा पर दृढ़तापूर्वक अमल करना चाहिए और ऊंचे दर्जे की सर्वहारा सिद्धान्तवादिता पर डटे रहना चाहिए। उन्हें प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी कार्यदिशा का, जिसका प्रतिनिधित्व चीन का ख्रुश्चोव करता है, खण्डन

करना चाहिए, तथा उन्हें दक्षिणपंथी अवसरवाद का और उस प्रतिक्रियावादी विचारधारा का, जिसका बाह्य रूप "वामपंथी" किन्तु अन्तर्वस्तु दक्षिणपंथी है, खण्डन करना चाहिए। उन्हें मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी, माओ त्सेतुङ विचारधारा विरोधी तमाम प्रतिक्रियावादी गुटों का खण्डन करना चाहिए, अराजकतावाद, पहाड़ी किले की तरह दुर्भेद्य गुट बनाने की मनोवृत्ति, संकीर्णतावाद और पूंजीपति वर्ग तथा अन्य सभी शोषक वर्गों की विचारधारा की तमाम अभिव्यक्तियों का खण्डन करना चाहिए। उन्हें क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना व खण्डन के आन्दोलन को अन्त तक चलाना चाहिए और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में चौतरफा विजय प्राप्त करने के लिए विचारधारात्मक रूप से मार्ग प्रशस्त कर देना चाहिए, जिससे माओ त्सेतुङ विचारधारा की महान लाल पताका सभी मोर्चों पर बुलन्द रूप से लहराने की गारन्टी हो जाए।

(3)

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के आन्दोलन के दौरान, सर्वहारा क्रान्तिकारियों और व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय द्वारा कायम किए गए क्रान्तिकारी महान संश्रय के आधार पर, एक बिलकुल नई क्रान्तिकारी कमेटी का सृजन हुआ है, जो क्रान्तिकारी "त्रिपक्षीय" संश्रय पर आधारित है। जैसा कि अध्यक्ष माओ ने बताया है: "'त्रिपक्षीय' क्रान्तिकारी कमेटी का सृजन मजदूर वर्ग और जन-समुदाय द्वारा वर्तमान महान सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान किया गया है।"

अध्यक्ष माओ की एक नवीनतम हिदायत में बताया गया है:

क्रान्तिकारी कमेटी के बुनियादी अनुभव में तीन तत्व मौजूद हैं: यह एक क्रान्तिकारी "त्रिपक्षीय" संश्रय है जिसमें क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि, सेना के प्रतिनिधि और क्रान्तिकारी जन-समुदाय के प्रतिनिधि शामिल हैं। क्रान्तिकारी कमेटी को एकीकृत नेतृत्व लागू करना चाहिए, प्रशासन के दोहरे ढांचों को खत्म कर देना चाहिए, "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" की नीति का अनुसरण करना चाहिए तथा एक ऐसे क्रान्तिकारी नेतृत्वकारी ग्रुप को संगठित करना चाहिए जो जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखता हो।

माओ त्सेतुङ विचारधारा के मार्गदर्शन में, इस तरह की क्रान्तिकारी कमेटी में उस क्रान्तिकारी जन-समुदाय के प्रतिनिधि, जिसने क्रान्तिकारी महान संश्रय कायम कर लिया है, और जन-मुक्ति सेना के प्रतिनिधि तथा क्रान्तिकारी नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यह सर्वहारा क्रान्तिकारियों और व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय द्वारा, जिसने सर्वहारा अधिनायकत्व के अन्तर्गत क्रान्ति को जारी रखने के बारे में अध्यक्ष माओ द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त को हृदयंगम कर लिया है, पार्टी के भीतर पूंजीवादी रास्ता अपनाने वाले मुट्ठीभर कर्ताधर्ता लोगों के हाथ से नीचे से ऊपर की ओर सत्ता छीनने के लिए चलाए गए संघर्ष की एक शानदार उपलब्धि है। इसने राज्य के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को अत्यधिक समृद्ध व विकसित बनाया है।

सर्वहारा वर्ग के श्रेष्ठ तत्व, जो जन-समुदाय के आन्दोलन में आगे आए हैं, राजकीय प्रशासन में प्रत्यक्ष रूप से भाग ले रहे हैं; इस तरह का सत्ताधारी संगठन मजदूरों और किसानों के व्यापक मेहनतकश जन-समुदाय के बुनियादी हितों का प्रतिनिधित्व करता है तथा जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ और व्यापक सम्पर्क बनाए रखता है। इससे तमाम स्तरों के हमारे नेतृत्वकारी संगठनों को अपना क्रान्तिकारीकरण करने तथा ऐसे सत्ताधारी संगठन बन जाने में, जो क्रान्तिकारी हों, सर्वहारा अधिकार व प्रतिष्ठा से युक्त हों, जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखते हों तथा जीवन-शक्ति से ओतप्रोत हों, भारी मदद मिलेगी। इस तरह की क्रान्तिकारी कमेटी ने, जो सर्वहारा अधिनायकत्व की बुनियादी शक्तियों (क्रान्तिकारी जन-समुदाय के प्रतिनिधियों), उसके सुदृढ़ स्तम्भ (जन-मुक्ति सेना के प्रतिनिधियों) और उसके नेतृत्वकारी केन्द्र (क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधियों) को घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध कर देती है, सेना और जनता के बीच की एकता को, सेना और सरकार के बीच की एकता को तथा कार्यकर्ताओं और जन-समुदाय की एकता को मजबूत बना दिया है, तथा

सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बना दिया है, जिससे हमारे सर्वहारा अधिनायकत्व के राजकीय संगठन समाजवादी आर्थिक आधार की जरूरतों को तथा सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ बनाने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना की रोकथाम करने की आवश्यकता को और ज्यादा अच्छी तरह पूरा कर सकेंगे।

अध्यक्ष माओ ने काफी पहले ही हमें यह शिक्षा दी थी:

जनता के व्यापक जनवाद के बिना सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ नहीं बनाया जा सकता तथा राजनीतिक सत्ता तब भी अस्थिर ही बनी रहेगी। जनवाद के बिना, जन-समुदाय को जागृत किए बिना तथा जन-समुदाय द्वारा की जाने वाली निगरानी के बिना, प्रतिक्रियावादियों और बुरे तत्वों पर कारगर रूप से अधिनायकत्व लागू करना अथवा उनका कारगर रूप से सुधार करना असम्भव है; वे लोग गड़बड़ी करना जारी रखेंगे, तथा पुनर्स्थापना की सम्भावना फिर भी बनी रहेगी। इस प्रश्न के बारे में हमें सतर्क रहना चाहिए और इस पर साथियों को ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए। (1962 में 7,000 व्यक्तियों की मीटिंग में दिए गए भाषण से उद्धृत)

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति ने जन-समुदाय को पूर्ण रूप से जागृत कर दिया है। व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय सर्वहारा राजनीतिक सत्ता को सुदृढ़ बनाने की बड़ी समस्या पर अत्यधिक ध्यान दे रहा है तथा वर्ग-शत्रु पर अधिनायकत्व लागू करने में सक्रिय भूमिका अदा कर रहा है। यह एक ऐसा अधिनायकत्व है जिसे विशाल बहुसंख्यक लोगों द्वारा मुट्ठीभर अल्पसंख्यक लोगों पर लागू किया जाता है, एक ऐसा अधिनायकत्व है जिसे सर्वहारा वर्ग और व्यापक जन-समुदाय द्वारा पूंजीपति वर्ग और तमाम प्रतिक्रियावादियों पर लागू किया जाता है, तथा यह एक ऐसा अधिनायकत्व है जिसे सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक पार्टी के नेतृत्व में जन-समुदाय द्वारा लागू किया जाता है। महान सांस्कृतिक क्रान्ति में कदम-ब-कदम चौतरफा विजय हासिल कर लेने और सभी स्तरों पर क्रान्तिकारी कमेटियों की स्थापना, उनकी समुन्नति और उनका विकास हो

जाने के साथ-साथ ही सर्वहारा अधिनायकत्व, जिसमें व्यापक जन-समुदाय जागृत होकर भाग लेता है, अधिकाधिक क्रान्तिकारी शक्ति प्रदर्शित करने लगेगा।

(4)

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के जन-आन्दोलन का महान ऐतिहासिक योगदान शानदार व अमिट है।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के जन-आन्दोलन की विजय को रोका नहीं जा सकता।

मुट्ठीभर वर्ग-शत्रु, जिनके दिलों में हमारे प्रति घोर वर्ग-दुश्मनी भरी हुई है, अपने सर्वनाश के बिलकुल नजदीक पहुंच जाने पर भी अपनी हार मानने को तैयार नहीं, तथा वे क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन का बड़े पागलपन के साथ विरोध कर रहे हैं और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की महान जीतों को मिटाने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं। लेकिन इतिहास का नियम निर्मम होता है तथा उनकी इच्छा से स्वतंत्र रहकर संचालित होता है। ये लोग चाहे कितनी ही अपराधपूर्ण साजिशें व तोड़फोड़ करने की कोशिश क्यों न करें और दक्षिणपंथी भटकाव की तरफ ले जाने वाले जहरीले रुझान को, जो सही फैसलों को पलटने की कोशिश करता है, पैदा करने की चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करें, अन्त में, वे क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन द्वारा कुचल कर अवश्य खत्म कर दिए जाएंगे।

हमारी महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में पिछले दो वर्षों के दौरान हासिल की गई महान जीतों का प्रभाव समूची दुनिया में फैल गया है, तथा तमाम देशों की क्रान्तिकारी जनता के जुझारू संकल्प को प्रेरित कर रहा है। हम देख सकते हैं कि महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति ने उन देशों में, जहां साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों का शासन कायम है, तथा उन देशों में, जहां संशोधनवादी गद्दार गुटों का शासन कायम है, क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन को आगे बढ़ाने में एक निश्चित भूमिका अदा की है। महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति ने, जिसका मार्गदर्शन माओ त्सेतुङ विचारधारा कर रही है, साहस के साथ संघर्ष करने और साहस के साथ

विजय प्राप्त करने के लिए समूची दुनिया की क्रान्तिकारी जनता की वीरता को जागृत कर दिया है। इसे सारी दुनिया के मार्क्सवादी-लेनिनवादियों और क्रान्तिकारी जन-समुदाय का उत्साह-पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ है।

चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति ने साम्राज्यवादियों, आधुनिक संशोधनवादियों और तमाम प्रतिक्रियावादियों के दिलों में बेहद डर, नफरत और घबराहट पैदा कर दी है। ये पूंजीवादी शाहंशाह सदा इस बात पर अपनी आशाएं केन्द्रित किए हुए हैं कि चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का "तात्कालिक सर्वनाश" हो जाएगा और चीन की सर्वहारा राजनीतिक सत्ता का "पतन" हो जाएगा। ये लोग, पिशाचों की तरह, "सांस्कृतिक क्रान्ति के भविष्य को निराशाजनक" बता कर उसे नीचतापूर्वक कोसते रहते हैं। लेकिन इन शाहंशाहों के ये सुनहरे ख्वाब चीन के सर्वहारा क्रान्तिकारियों और व्यापक क्रान्तिकारी जन-समुदाय के विजयपूर्ण अभियान के लम्बे डगों के नीचे कुचल दिये गए हैं।

चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति की उमड़ती हुई प्रचण्ड धारा तमाम रुकावटों को दूर करती हुई शक्तिशाली रूप से आगे बढ़ती जा रही है।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में चौतरफा विजय प्राप्त करने की महत्वपूर्ण घड़ी हमारे सामने है। हमें अब भी अनेक कठिन संघर्ष चलाने हैं।

इस नई परिस्थिति में, हमें अध्यक्ष माओ की शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहिए, अहंकार और उतावलेपन से सतर्क रहना चाहिए और एक जीत से दूसरी जीत की ओर आगे बढ़ना चाहिए। हमें अपने अनुभव का लगातार निचोड़ निकालते रहना चाहिए, जांच-पड़ताल और अध्ययन के कार्य की ओर हमेशा गहराई से ध्यान देना चाहिए, वर्ग-संघर्ष में प्रकट होने वाले नए रुझानों, नई विशेषताओं और नई समस्याओं के प्रति सजग रहना चाहिए, और संघर्ष की मुख्य दिशा पर दृढ़तापूर्वक कायम रहना चाहिए।

हमें सर्वहारा सदर-मुकाम के नेतृत्व की, जिसके नेता अध्यक्ष माओ हैं, दृढ़तापूर्वक रक्षा करनी चाहिए, सर्वहारा सदर-मुकाम को नष्ट करने की

वर्ग-शत्रुओं की तमाम साजिशों और स्कीमों का पर्दाफाश कर देना चाहिए तथा उन्हें धूल में मिला देना चाहिए। हमें अपनी वर्ग-पांतों को और ज्यादा शुद्ध तथा सुदृढ़ बनाना चाहिए, अपने संश्रयकारियों के साथ एकता कायम करनी चाहिए तथा उन्हें अपने पक्ष में कर लेना चाहिए, और अपने वर्ग-शत्रु पर प्रहार करते रहना चाहिए। हमें दुश्मन और अपने बीच के अन्तरविरोधों तथा जनता के बीच के अन्तरविरोधों, इन दो तरह के अन्तरविरोधों के बीच स्पष्ट रूप से फर्क करना चाहिए। जहां तक क्रान्तिकारी पांतों के अन्दर होने वाली गलतियों का सम्बन्ध है, उनके बारे में हमें "**भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने**" की अध्यक्ष माओ की पहले से चली आई नीति पर कायम रहना चाहिए।

हमें दो कार्यदिशाओं के बीच के संघर्ष के बुनियादी मसले से प्रारम्भ होकर क्रान्तिकारी व्यापक आलोचना व खण्डन को और अधिक गहराई से करना चाहिए। हमें दक्षिणपंथियों या उग्र "वामपंथियों" द्वारा पेश किए जाने वाले तमाम प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचारों का खण्डन करना चाहिए, दक्षिणपंथी अवसरवाद, दक्षिणपंथी आत्मसमर्पणवाद और दक्षिणपंथी फूटपरस्ती के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक संघर्ष करना चाहिए और दक्षिणपंथी भटकाव की तरफ ले जाने वाले जहरीले रुझान को, जो सही फैसलों को पलटने की कोशिश करता है, पूरी तरह से कुचल देना चाहिए।

हमें माओ त्सेतुङ विचारधारा का सृजनात्मक ढंग से अध्ययन करने तथा उसे सृजनात्मक ढंग से लागू करने के जोरदार जन-आन्दोलन को और अधिक व्यापक पैमाने पर आगे बढ़ना चाहिए, माओ त्सेतुङ विचारधारा की अध्ययन-कक्षाओं को प्रभावशाली ढंग से चलाने के लिए और ज्यादा प्रयास करते रहना चाहिए, अलग-अलग विभागों, व्यवसायों और स्कूल की कक्षाओं के आधार पर क्रान्तिकारी महान संश्रय को विकसित करने व उसे सुदृढ़ बनाने तथा क्रान्तिकारी "त्रिपक्षीय" संश्रय को विकसित करने व सुदृढ़ बनाने की जोरदार कोशिश करते रहना चाहिए, बहुसंख्यक कार्यकर्ताओं और जन-समुदाय को एकताबद्ध कर लेना चाहिए, हर इकाई

में संघर्ष, आलोचना व खण्डन रूपान्तर[1] के कार्य को सफल बनाना चाहिए, **क्रान्ति को दृढ़ता से चलाना चाहिए, उत्पादन कार्य व अन्य कार्यों को तथा युद्ध के विरुद्ध तैयारी को आगे बढ़ाना चाहिए** और तमाम मोर्चों पर और ज्यादा अच्छा काम करना चाहिए।

महान चीनी जन-मुक्ति सेना ने महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति में भारी योगदान किया है। हमें सेना का समर्थन करने और जनता को प्यार करने के आन्दोलन को आगे बढ़ाते रहना चाहिए तथा सेना और जनता के बीच की एकता को मजबूत बनाते रहना चाहिए।

हमें नव-निर्मित क्रान्तिकारी कमेटियों का पोषण और समर्थन करना चाहिए ताकि वे कदम-ब-कदम सुदृढ़ व परिष्कृत होती हुई ऐसे जुझारू सदर-मुकामों का रूप धारण कर लें जो माओ त्सेतुङ विचारधारा के महान लाल झण्डे को बुलन्द रखें और सर्वहारा राजनीति को सर्वोपरि रखें। क्रान्तिकारी कमेटियों को चाहिए कि वे नई जीतें हासिल करने और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति को अन्त तक चलाने में कोटि-कोटि जनता की अगुवाई करें।

आइए, हम सब माओ त्सेतुङ विचारधारा के झण्डे तले गोलबन्द हो जाएं, अध्यक्ष माओ की सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्यदिशा का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करें, और मानव जाति के इतिहास की पहली महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के महान ऐतिहासिक कार्य को सर्वांगीण रूप से पूरा करने के लिए निरन्तर संघर्ष करें! नई जीतें हमारा आह्वान कर रही हैं, आइए, हम साहस के साथ आगे की ओर अभियान करें!

---

[1] "संघर्ष, आलोचना व खण्डन, रूपान्तर" का मतलब है उन कर्ताधर्ता लोगों के खिलाफ संघर्ष करना और उन्हें धाराशायी कर देना जो पूंजीवादी रास्ता अपना रहे हैं, विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी "धुरंधर विद्वानों" और पूंजीपति वर्ग तथा अन्य तमाम शोषक वर्गों की विचारधारा की आलोचना करना और उनका खण्डन करना, तथा शिक्षा, साहित्य व कला और ऊपरी ढांचे के उन तमाम अंगों का रूपान्तर कर देना जो समाजवादी आर्थिक आधार के अनुरूप नहीं हैं।

"... सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के महान झण्डे को बुलन्द रखें, विद्याध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले उन तथाकथित "धुरंधर विद्वानों" के प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी रुख का पूरी तरह पर्दाफाश करें जो पार्टी और समाजवाद का विरोध करते हैं, विद्याध्ययन, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य व कला और प्रकाशन के क्षेत्रों में प्रतिक्रियावादी पूंजीवादी विचारों की आलोचना और उनका खण्डन सम्पूर्ण रूप से करें, तथा इन सांस्कृतिक क्षेत्रों में नेतृत्व का अधिकार छीन लें। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए साथ ही यह भी जरूरी है कि पूंजीपति वर्ग के उन प्रतिनिधियों की आलोचना की जाय और उनका खण्डन किया जाय जो मौका पाकर पार्टी, सरकार, सेना और तमाम सांस्कृतिक क्षेत्रों में घुस आये हैं, उनका वहां से सफाया कर दिया जाय या उनमें से कुछ का दूसरे पदों पर तबादला कर दिया जाए।

पूंजीपति वर्ग के वे प्रतिनिधि, जो मौका पाकर, पार्टी, सरकार, सेना और विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में घुस आए हैं, मुट्ठीभर प्रतिक्रान्तिकारी संशोधनवादी हैं। जब एक बार स्थिति परिपक्व हो जाएगी, तो वे लोग राजनीतिक सत्ता छीन लेंगे और सर्वहारा अधिनायकत्व को पूंजीवादी अधिनायकत्व में बदल डालेंगे। उनमें से कुछ लोगों को हमने पूरी तरह पहचान लिया है, अन्य कुछ लोगों को अभी नहीं पहचाना। कुछ लोगों पर हम अब भी विश्वास करते हैं और उन्हें अपने उत्तराधिकारियों के रूप में प्रशिक्षित कर रहे हैं। मिसाल के लिए, ख्रुश्चोव जैसे लोग अब भी हमारे बिलकुल करीब आसन जमाए बैठे हैं सभी स्तरों की पार्टी-कमेटियों को इस मामले पर पूरा ध्यान देना चाहिए।"

-माओ त्सेतुङ